हर-हर महादेव

हमारा देश हमारा अभिमान

MPHIN36951
कुल पृष्ठ : 52, मूल्य : 50 रुपए
वर्ष 01, अंक 07 मासिक पत्रिका
जनवरी 2022

पूरी दुनिया में प्रसिद्ध

श्री सांवलिया सेठ

हर रोज लाखों श्रद्धालु करते हैं श्री सांवलिया सेठ का दर्शन

श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, केंद्रीय उड्डयन मंत्री

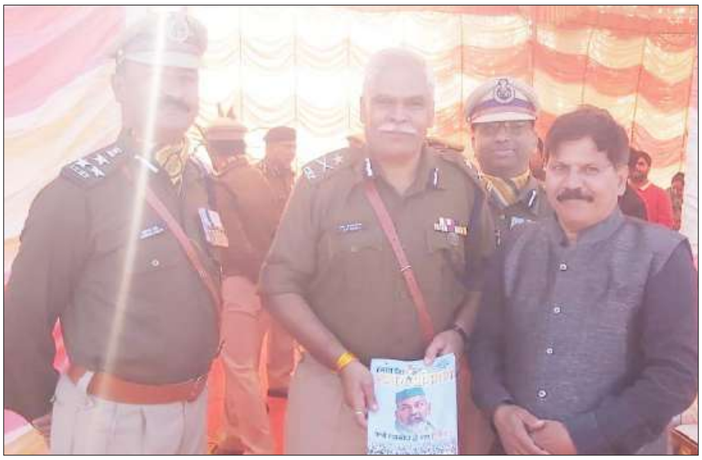

श्री पीके पांडे, आईजी, सीआरपीएफ ग्वालियर एवं श्री सुरेंद्र खत्री डीआईजी, आईटीबीपी करैरा

श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह, कलेक्टर ग्वालियर

मयंक अग्रवाल, कलेक्टर नीमच

जयति सिंह, सी ई ओ, स्मार्ट सिटी ग्वालियर

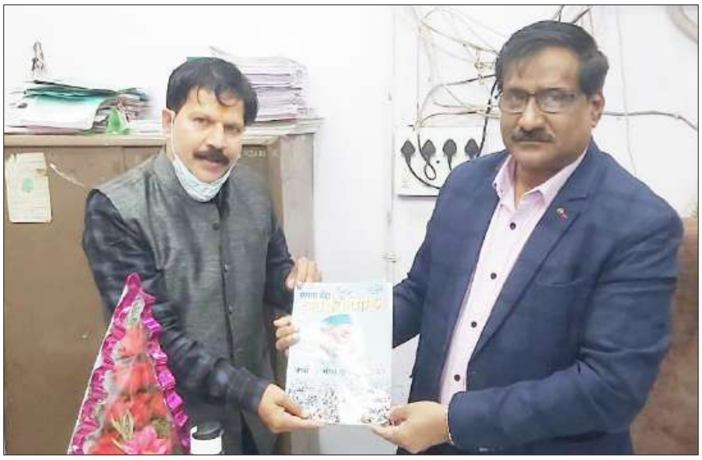

श्री सी पी रॉय, मुख्य नगर पालिका नीमच

अनिल नागौरी, जिला उपाध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी

भैरो लाल सोनी, साँवरिया सेठ बोर्ड मेंबर

हमारा देश
हमारा अभिमान

वरिष्ठ संरक्षक मंडल

- अनन्त श्री विभूषित श्रीमद जगद्गुरु श्री राम स्वरूपचार्य जी महाराज कामदगिरि पीठाधीश्वर चित्रकूट धाम
- श्री महामंडलेश्वर रामप्रिय दास
- श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर अनिरुद वन जी श्री धूमेस्वर धाम
- श्री डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा

संरक्षक मंडल

- श्री लोकेश चतुर्वेदी • श्री डॉ. दिनेश उपाध्याय
- श्री अरविंद जैन • श्री अरुण कांत शर्मा, महेश पुरोहित
- विनोद भारद्वाज, अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
- श्री मनोज भारद्वाज, अनिल जैन, निर्मल वासवानी

संपादक : मनोज चतुर्वेदी

पंकज दीक्षित : प्रमुख परामर्शदाता

विशेष संवाददाता

- रवि परिहार • रविकांत शर्मा

कानूनी सलाहकार

एडवोकेट अनिल शुक्ला शासकीय अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
एडवोकेट श्याम पाठक ग्वालियर हाई कोर्ट

ब्यूरो : अविनाश (उज्जैन संभाग)

छिंदवाड़ा ब्यूरो : जितेंद्र चौरे

मुम्बई ब्यूरो (महाराष्ट्र)

सचिंदर शर्मा (फ़िल्म डायरेक्टर)

ब्यूरो राजस्थान

सुभाष सोरल (फ़िल्म निर्माता) कोटा

ब्रजेश जैन- साक्षात्कार व्यवस्थापक और विज्ञापन संवाददाता इंदौर

संवाददाता : संदीप पाटिल, इंदौर

सलाहकार

- डॉ. सुनील शर्मा, नेत्र रोग विशेषज्ञ
- डॉ. मुकेश चतुर्वेदी, • डॉ. दिनेश प्रसाद (हड्डी रोग सर्जन)
- अनिल दुबे • विकास चतुर्वेदी • सुरेश शर्मा
- नारायणदास गुप्ता, • पीयूष श्रीवास्तव

मार्केटिंग प्रमुख : शैलेन्द्र जैन

मार्केटिंग मैनेजर

- सुनील • हरशूल • संजू

डिजाइन : मनोज पंवार

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक मनोज कुमार चतुर्वेदी द्वारा कंचन ऑफसेट डी-1/63, सेक्टर-4, विनय नगर ग्वालियर- फोन नं. 0751-2481433, (म. प्र.) से मुद्रित एवं शिव कॉलोनी गली नं. 4 , रेलवे स्टेशन के पीछे, तहसील डबरा, जिला ग्वालियर, (मध्यप्रदेश) प्रकाशित। संपादक-मनोज कुमार चतुर्वेदी ।
(सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)

विवरणिका

संपादकीय	02
शुभाशीष	03
कवर स्टोरी	04-05
	06-07
स्मृति शेष	08-09
हमारा ग्वालियर	13-14
हमारा ग्वालियर	15-16
हमारा ग्वालियर	17
यूपी	18-19
यूपी	20-21
हमारा गणतंत्र	22-23
बजट 2022-23	24-25
बजट 2022-23	24-25
रिएलिटी शो	27
करियर	29
विविध	31
पर्यटन	32
धर्म	34
बाल जगत	42
स्वास्थ्य	43
उत्सव	44
करियर	45
ग्लैमर	47-48

संपादकीय

बुरे को बुरा कहना सीखिए...

कोरोना की तीसरी लहर के बाद भी हम हारे नहीं बल्कि ज़्यादा उत्साह के साथ जीना सीख गए हैं। यही है मनुष्य होने की ख़ासियत। हर समस्या में अवसर छिपा होता है। हमनें इस विभीषिका से सीखा है कि कैसे अपनी ज़रुरतों को समेट कर निर्वाह किया जा सकता है। हमने सीखा है कि कितनी भी बड़ी समस्या क्यों न हो एक दिन धीरे-धीरे कर खत्म हो जाती है।

हमने इस महामारी से ये भी सीख लिया कि हम उच्चतम मानव भी हैं और निम्नतम अवसरवादी भी। इस घोर परेशानी में कुछ ऐसे चेहरे भी सामने आए जो मानवता को शर्मसार कर गए। उन्होंने इस दुखद समय में सेवा और सहानुभूति की बजाय स्वार्थ और लूट का अवसर ढूंढ लिया। विडंबना है कि ये चहरे भी हमारे

आसपास ही हैं। ये हमारे बीच थे, हैं और रहेंगे। ज़रुरत है इनके प्रतिकार की। आश्चर्य है कि हम इनमें घुलमिल जाते हैं, इन्हें स्वीकार कर लेते हैं और कई बार तो दोस्ती भी। याद रखिए जो आज आसान समझ रहे हैं वो कल कठिन और बदतर हो जाएगा...और हम मजबूर होंगे इस हमारे ही बनाए बुरे माहौल में सांस लेने के लिए। बुरे को बुरा कहना सीखना ही होगा फिर चाहें वो वह आपका अपना कोई ख़ास ही क्यों हो।

मनोज चतुर्वेदी
संपादक

शुभाशीष

असफल होना सफलता के असल स्वाद को जान पाना है

जिस तरह आपके शरीर का हर हिस्सा महत्वपूर्ण और ज़रुरी है उसी तरह जीवन का हर पहलू, हर यात्रा, हर पड़ाव महवपूर्ण और ज़रुरी है। रचना प्रकृति का नियम है लेकिन यही प्रकृति विध्वंस भी लाती है। जैसे दिन होता है रात होती है उसी तरह जीवन में भी कभी सुख है तो कभी दुख है। कभी सफलता है तो कभी असफलता भी। सभी पक्ष महत्वपूर्ण हैं क्योंकि दुख नहीं होगा तो सुख का एहसास नहीं होगा। असफलता नहीं होगी तो सफलता का स्वाद पता नहीं होगा। कहा भी गया है कि सफलता का असली स्वाद वही व्यक्ति जानता है जो बार बार असफल होता रहा है। यहां इस बात का संबंध हम सभी की ज़िंदगी से है। हमें हर स्थिति में सकारात्मक रुख रखना चाहिए।

हमारा देश हमारा अभियान भी इसी दर्शन पर काम रहा है यह जानकर खुशी होती है ,साथ ही यह भी जानता हूं कि मनोज चतुर्वेदी कभी हार मानने बालो से नही है बो सच्चाई से पत्रिकारिता के लिए जाने है साथ ही सच्चाई से अबगत कराने के लिए जूनूनी है यही विशेषता इन्हें सब से अलग करती है। मेरी अनंत शुभकामनाएं महादेव भक्त मनोज चतुर्वेदी सम्पादक (हमार देश हमारा अभिमान पत्रिका) और उनकी पूरी टीम के लिए। वे सभी सफल हों साथ ही इस हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका की पहचान एवं परचम देश मे ही नही पूरे विस्व मै फैलाये और यदि असफल भी हों तो हार कर बैठने की बजाय दूने उत्साह से फिर उठ खड़े हों एक बड़ी सफलता को प्राप्त करने के लिए।

डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा
संरक्षक

पूरी दुनिया में प्रसिद्ध
श्री सांवलिया सेठ

पूरी दुनिया में प्रसिद्ध राजस्थान के चित्तौडगढ़ का श्री सांवलिया सेठ का मंदिर अक्सर अपने चढ़ावे के लिए चर्चा में बना रहता है। बताया जाता है कि यहां दिल से मांगी हुई हर मनोकामना पूरी होती है, सांवलिया भगवान हर किसी की खाली झोली को भर देते हैं। इसलिए तो कहते हैं कि यहां मुराद से ज्यादा मांगने वाला पाता है। कहा जाता है कि श्री सांवलिया सेठ का मंदिर आज से करीब 450 साल से ज्यादा पुराना है। जिसका निर्माण मेवाड़ राजपरिवार की ओर से करवाया गया था। यहं मंदिर चित्तौडगढ़ रेलवे स्टेशन से 41 किमी एवं डबोक एयरपोर्ट-उदयपुर से 65 किमी की दुरी पर स्थित है। जहां हर साल देश ही नहीं विदेश से लाखों भक्त आकर दर्शन करते हैं। कुछ ऐसे एनआरआई भक्त भी हैं जो विदेश में बैठे हैं, अगर वह नहीं आ पाते तो डॉलर, पाउण्ड, रियॉल, दिनार को भारतीय रुपए में बदलवाकर मनी ऑर्डर कर देते हैं।

मंदिर का इतिहास मीरा बाई से भी जुड़ा हुआ बताया जाता है। कहते हैं कि सांवलिया भगवान मीरा बाई के वही गिरधर गोपाल हैं, जिनकी भक्ति में वो दिन रात पूजा किया करती थीं। हालांकि यह भी बताया जाता है कि सन 1840 में गांव मंडफिया के रहने वाले भोलाराम गुर्जर नाम के ग्वाले को एक सपना आया था कि भादसोड़ा-बागूंड के छापर में 4 मूर्तियां जमीन में दबी हुई हैं। जब उसने यह बात उदयपुर मेवाड़ राज-परिवार को बताई तो उन्होंने उस जगह पर खुदाई करवाईथ। जहां से एक जैसी 4 मूर्तियां निकलीं इसके बाद सांवलिया जी का मंदिर बनवाया गया। किवदंतियों के अनुसार मीरा बाई संत महात्माओं की जमात में इन मूर्तियों के साथ भ्रमणशील रहती थी। ऐसी ही एक दयाराम नामक संत की जमात थी जिनके पास ये मूर्तियां थीं। बताया जाता है कि जब औरंगजेब की सेना मंदिरों को तोड़ रही थी, तो उस दौरान मुगलों की सेना को इन मूर्तियों के बारे में पता चला। ऐसे में संत दयाराम ने सांवालिया सेठ की इन मूर्तियों को एक वट-वृक्ष के नीचे गड्ढा खोद कर छिपा दिया था। बता दें कि सांवलिया जी मंदिर में नेता और या अभिनेता सभी यहां आकर हाजिर लगाते हैं। देश के सबसे बड़े और अमीर बिजनेसमैन मुकेश अंबानी का परिवार यहां कई बार दर्शन के लिए आ चुका है। इतना ही नहीं उनके पिता उद्योगपति धीरूभाई अंबानी पत्नी कोकिलाबेन अंबानी संवालिया दरबार में हाजिरी लगा चुकी हैं। बॉलीवुड एक्टर धर्मेंद्र, शक्ति कपूर, और अब संजय दत्त यहां पहुंचे हुए हैं। गृह मंत्री अमित शाह भी श्री सांवलिया सेठ मंदिर में अपनी हाजिरी लगा चुके हैं।

पहले खुले चबूतरे पर बिराजे थे सांवलिया सेठ

मंडफिया गांव में करीब 130 साल पहले जिस समय सांवलिया सेठ की मूर्ति स्थापित हुई, तब यहां की आबादी बमुश्किल 200 थी। एक पीपल के पास मूर्ति को स्थापित कर इसकी पूजा वेणीराम करने लगे। कालांतर में ग्रामवासियों ने चंदा कर ओटला, छोटा मंदिर फिर बड़ा कांच का मन्दिर बनाया। वर्ष 1936 के आसपास सांवलियाजी पत्थर और आरास से बने खुले आकाश के नीचे चबूतरे पर शिवजी और हनुमानजी की मूर्ति के साथ बिराजमान थे। सांवलियाजी की पौराणिकता का पता लगाने के लिए मंदिर मंडल द्वारा गठित कमेटी के सर्वे में यह बात सामने आई। मंडफिया के ही मूल निवासी और अब इन्दौर में प्रतिष्ठित एडवोकेट मिट्ठालाल बंसल ने अपने दादा चंपालाल, पिता हीरालाल और उनके ही समकालीन भुवानीराम, बक्षीराम, रोडुलाल, कन्हैयालाल शर्मा तथा सत्तूलाल जैसे लोगों से सुनी गई बातचीत के आधार पर यह जानकारी कमेटी को दी। बंसल के अनुसार बाद में पत्थर और आरास की दीवारें बनाई, छत चढ़ाई। कुछ वर्षों बाद उसे तोड़ कर और शिखर बनाकर मंदिर का वास्तविक स्वरूप उभरा। आमदनी बढ़ने के साथ यहां कांच का भव्य मंदिर बना। सांवलियाजी के पास एक कुई थी। पुजारी चरस से यहां प्याऊ भरते थे। पीछे की ओर उनके कच्चे मकानात थे।

वट वृक्ष के नीचे से मिले थे सांवलिया सेठ

बताया जाता है कि मंडफिया में रहने वाला एक ग्वाला भोलाराम गुर्जर रोज बागुण्ड तक गाय चराने जाता था। एक दिन उसे सपना आया कि वट के वृक्ष के नीचे सांवलिया सेठ की मूर्ति है। पहले तो ग्वाले ने ध्यान नहीं दिया। फिर दुबारा सपना आने पर उसने अपने हाथों से खुदाई की। वहां चार मूर्ति निकली। एक खंडित थी, जिसे वहीं रखा गया। इसके अलावा एक मूर्ति को स्थापित कर दिया गया। यह वही स्थान है, जिसे मंदिर का प्राकट्य स्थल कहा जाता है। एक मूर्ति भदसोडा गांव में स्थापित की गई। चौथी मूर्ति को भोलाराम मंडफिया लेकर आया और अपने घर के परिण्डे में स्थापित कर पूजा पाठ शुरू कर दी। धीरे-धीरे तीनों स्थानों पर मंदिरों और खासतौर पर मंडफिया में उसके घर वाले मंदिर की ख्याति तेजी से फैलने लगी। उसी प्रसिद्धि का परिणाम आज दिखाई देता है।

बिजनेस में 20 प्रतिशत तक पार्टनर बनाते हैं भक्त

भक्त अपने बिजनेस या वेतन की कमाई का एक बड़ा हिस्सेदार या पार्टनर सांवलिया सेठ को अवश्य बनाते हैं। इसी पार्टनरशिप का कमिटमेंट वे हर माह यहां आकर सांवलिया सेठ के हिस्से को दान कर पूरा करते हैं। कई लोगों ने अपने खेती से लेकर व्यापार और वेतन तक में सांवलिया सेठ का हिस्सा रखा हुआ है। ऐसे लोग हर माह मंदिर आते हैं और उसके हिस्से की राशि चढ़ाकर जाते हैं। बताया जाता है कि भक्त यह राशि 2 से लेकर 20 प्रतिशत तक हिस्सेदारी के रूप में रखते हैं। इसके प्रति वे बेहद ईमानदार हैं। यानी भगवान के साथ जितनी पार्टनरशिप का कमिटमेंट या वचन दिया हुआ है, उसे वे हर माह यहां उतना चढ़ावा चढ़ाकर पूरा करके ही जाते हैं। यह भी बताया जाता है कि इस चढ़ावे की बकायदा अपने खाते में एंट्री तक करते हैं। जिस तरह एक बिजनेस पार्टनर की एंट्री की जाती है।

नोटों के गिनने के लिए लोगों की ड्यूटी

बता दें कि श्री सांवलिया सेठ मंदिर मे हर माह अमावस्या के एक दिन पूर्व दानपात्र खोला जाता है। जहां दान किए गए नोटों के गिनने के लिए लोगों की ड्यूटी लगाई जाती है। रुपयों की गिनती सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में होती है। अभी तक हर महीने यहां 3 से लेकर 4 करोड़ तक का चढ़ावा आता है। इतना ही नहीं दानपात्र से निकले की गिनती को देखने के लिए हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है। हालांकि प्रशासन यह काम अपनी मौजूदगी में करवाता है।

खजाने को कई गुना भर देते हैं: श्री सांवलिया मंदिर को लेकर ऐसी ऐसी मान्यता है कि जो श्रृद्धालु यहां जितना भी चढ़ावे में चढ़ाते हैं, सांवलिया सेठ उनके खजाने को उससे कई गुना भर देते हैं। इतना ही नहीं यहां पर कई लोगों ने अपनी साल या महीने की इनकम का एक हिस्सा यहां पर रखकर जाते हैं। वह हर माह यहां आते हैं और अपना हिस्सा रखकर चले जाते हैं। यह राशि 2 से लेकर 20 फीसदी तक है। मान्यता है कि भगवान इसे कई गुना कर देते हैं। सांवलिया जी मंदिर में करीब 500 लोगों का स्टाफ है। जो मंदिर की देखरेख में लगा हुआ है। दानपात्र से निकलने वाली राशि से मंदिर ट्रस्ट कई सेवा कार्य भी करती है। आसपास के करीब 25 गांवों का विकास भी इसी दान की गई राशि से होता है। जैसे शिक्षा, चिकित्सा, धार्मिक आयोजन, विकास और मूलभूत सुविधाओं को विकसित करने में यह राशि खर्च करता है।

सांवलिया सेठ के नाम का पैसाः मंदिर मंडल ने 16 गांवों की जिम्मेदारी ले रखी है। यहां पर सीसी रोड, नाली निर्माण, मंदिरों का निर्माण, मंदिरों का जीर्णोद्धार, पेयजल व्यवस्था, सामुदायिक भवन, शिक्षा, चिकित्सा से लेकर सभी विकास कार्य मंदिर मंडल द्वारा ही किया जाता है। कई सालों से यहां के सभी कार्य सांवलिया मंदिर मंडल के खजाने से ही होता है। इन 16 गांवों में मंडफिया, भूतखेड़ा, घोड़ा खेड़ा, गीदा खेड़ा, रूपा जी का खेड़ा, सेंगवा, अमरपुरा, नाडा खेड़ा, भाटोली गुजरान, करौली, रुदाई खेड़ा, बलिया खेड़ा, मोडा जी का खेड़ा, कुरेठा, चरलिया, टांडी खेड़ा शामिल है। इसके अलावा भी गौशाला निर्माण और उसके पूरे विकास कार्य की जिम्मेदारी भी मंदिर मंडल की है। अभी हाल ही में मंडफिया कॉलेज बनाया गया। वह भी सांवलिया जी मंदिर मंडल की ओर से ही हैं। मंडफिया थाना, नवोदय स्कूल, रिंग रोड, डूम, बस स्टैंड, धर्मशाला, वाटर लेजर शो सब कुछ सांवरा सेठ के खजाने से बनाई गई है।

6 पिलर पर खड़ा है सेठ का दरबारः सांवलियाजी मंदिर आस्था के साथ आधुनिक वास्तुकला का भी उदाहरण है। करीब 22500 वर्गफीट का पूरा मंदिर पत्थर से पत्थर जोड़कर बना है। गर्भगृह के बाहर का सभा मंडप में 6 टन वजनी एक ही पत्थर से गुमठ बना है। सांवलिया सेठ के नाम से विख्यात भगवान का मुख्य मंदिर ही 250 फीट लंबा व 90 फीट चौडा है। पूरा परिसर तो इससे कहीं बढ़ा है। उसके बाहर भी दूर दूर तक मंदिर संपदा फैली है। मुख्य मंदिर में आपको जगह जगह पिलर दिखते हैं, जिस पर भवन खड़ा हुआ। इसमें 42 पूरे एवं 44 आधे पिलर है। मुख्य शिखर 121 फीट ऊंचा है। जिस पर कुछ समय पूर्व स्वर्ण कलश स्थापित हुए। पूरा मंदिर पत्थर से पत्थर जोड़कर बना है। कहीं आरसीसी यानी लोहे की एक कील तक नहीं लगी। गर्भगृह के बाहर बड़ा 1765 वर्गफुट का बड़ा सभा मंडप में बैठना दर्शकों को सुकून देता है। इसके बीचो बीच गुमठ तो 6 टन वजनी एक ही पत्थर को तराशकर बनाया हुआ है। कारीगरों की भाषा में इसे पत्थर की चाबी भी कहते हैं। गर्भगृह संगमरमर का, बाकी मंदिर बंसी पहाड़पुर पत्थर से बना... सांवलिया सेठ का नया मंदिर बनने के बाद गर्भ गृह का निर्माण संगमरमर के सफेद पत्थर से हुआ। इसके बाहर मंडप,चौक व कॉरिडोर आदि बंसी पहाड़पुर के लाल पत्थर से निर्मित हुए है।

हर रोज लाखों श्रद्धालु करते हैं श्री सांवलिया सेठ का दर्शन

साँवरिया सेठ के मंदिर मे नई साल के 1 और 2 जनवरी को लगभग 3 लाख से ऊपर किये भक्तजनों ने दर्शन

राजस्थान अपने इतिहास के लिए तो जान ही जाता है लेकिन इसी के साथ साथ धार्मिक स्थलों की पहचान के लिए भी जाना जाता है इसी क्रम मे चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जयपुर करोली आदि स्थान अपने धार्मिक पहचान रखते है इसी क्रम मे चित्तौड़गढ़ जिले के अंतर्गत एक तहसिल के अंतर्गत चित्तौड़गढ़ से लगभग 55 से 65 किलो मीटर दूर साँवरिया सेठ के नाम से प्रसिद्ध मंदिर है जिन्हें साँवरिया सेठ के नाम से पुकारा जाता है। यह मंदिर लगभग 150 बीघा मैं बना हुआ है। इसका राजस्थान सरकार के नेतृत्व मैं एक ट्रस्ट है जिसमे 11 सदस्य होते है जिसमे 3 राज्य सरकार के और 8 सदस्य मंदिर के पुजारी सहित सम्मानीय नागरिक होते है। इसमे चित्तौड़गढ़ जिले के कलेक्टर, एडीएम एवं उदयपुर देवस्थान के एक अधिकारी, यह उदयपुर देवस्थान बोर्ड का भी मार्गदर्शन समय समय पर मिलता रहता है।

इसी साल जनवरी 1 और 2 को लगभग 3 लाख से ज्यादा भक्तों ने दर्शन किये। जिला चित्तोड़गढ़ अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं मंदिर मंडल सी ओ रतनकुमार स्वामी ने बताया कि यहाँ लाखो भक्तगणों का दर्शन करने आना होता है वही सांवरिया मंदिर ट्रस्ट के बोर्ड मेंबर भैरोलाल सोनी ने हमारे बिशेष संवाद दाता मनोज चतुर्वेदी के साथ मंदिर प्रांगण से चर्चा शुरू करते हुए और जानकारी देते हुये साँवरिया सेठ के दर्शन कराए। खास बात यह है कि यहाँ मंदिर के गुम्बद ताम्बे के कलस पर सोने की परत चढ़ाई जा रही है। यहाँ जल जूरी एकादशी भादवा या भादव महीने मैं 3 दिन का बड़ा मेला भरता है जिसमे लाखों भक्त गण आते है । कहा जाता है साँवरिया सेठ वो ही कृष्ण भगवान है जिनकी पूजा मीरा बाई करती थी।

भैरो लाल गुर्जर साँवरिया ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष बने

साँवरिया सेठ जिला चित्तौड़गढ़ राजस्थान के ट्रस्ट की राजस्थान सरकार ने की कार्यकारिणी की घोषणा

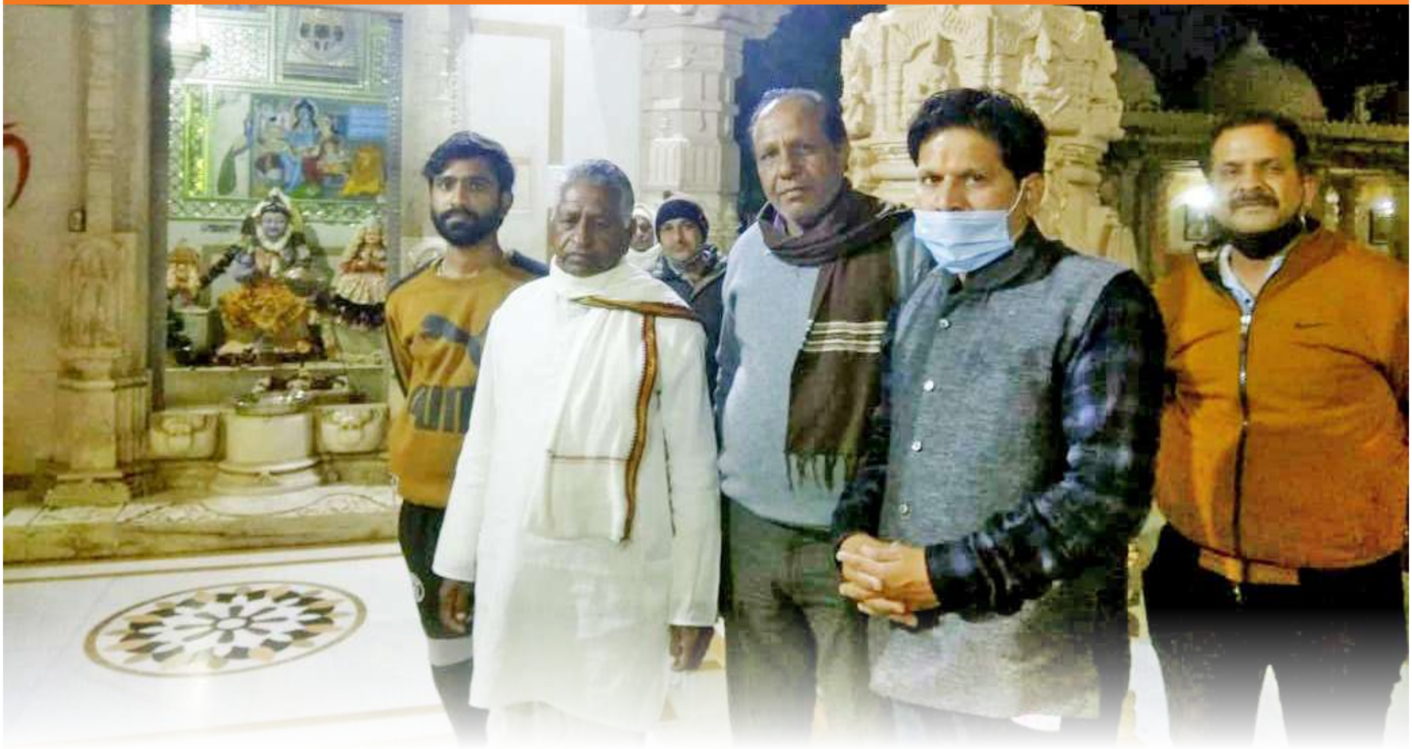

ज्ञात हो आप पूर्व मैं भी अध्यक्ष रह चुके है ट्रस्ट के। आज हुई घोषणा, अध्यक्ष बनने के बाद सर्वप्रथम विशेष संवाददाता मनोज चतुर्वेदी से की बात। और कहा मैं साँवरिया सेठ के आशीर्वाद से सबको साथ लेकर सेवा करूँगा। साँवरिया सेठ के दर्शन करने लाखो श्रद्धालुओं की उपस्थिति होती है उनके लिए ट्रस्ट सभी प्रकार की सुबिधाओं की व्यस्थाओं को प्रार्थमिकता से कराएगी उपलब्ध।

यहां लोग जितना चढ़ाते हैं उससे कई गुणा ज्यादा पाते हैं....

चित्तौडगढ़ के मंडफिया स्थित श्री सांवलिया सेठ का मंदिर करीब 450 साल पुराना है। मेवाड़ राजपरिवार की ओर से इस मंदिर का निर्माण करवाया गया था। मंडफिया मंदिर कृष्ण धाम के रूप में सबसे ज्यादा प्रसिद्द है। यह मंदिर चित्तौडग़ढ़ रेलवे स्टेशन से 41 किमी एवं डबोक एयरपोर्ट-उदयपुर से 65 किमी की दुरी पर स्थित है। सांवलिया जी का संबंध मीरा बाई से बताया जाता है। मान्यता के अनुसार मंदिर में स्थित सांवलिया जी मीरा बाई के वही गिरधर गोपाल है जिनकी वह पूजा किया करती थी।

लोगों की सांवलिया जी को लेकर ऐसी मान्यता है जितना वे यहां चढ़ाएंगे सांवलिया सेठ उनके खजाने को उतना ज्यादा भरेंगे। ऐसे में कई लोगों ने अपने खेती से लेकर व्यापार व तनख्वाह में सांवलिया सेठ का हिस्सा रखा हुआ है। ऐसे लोग हर माह मंदिर आते हैं और उसके हिस्से की राशि चढ़ा देते हैं। यह राशि 2 से लेकर 20 फीसदी तक है।

श्री सांवलिया जी मंदिर का भंडारा हर माह

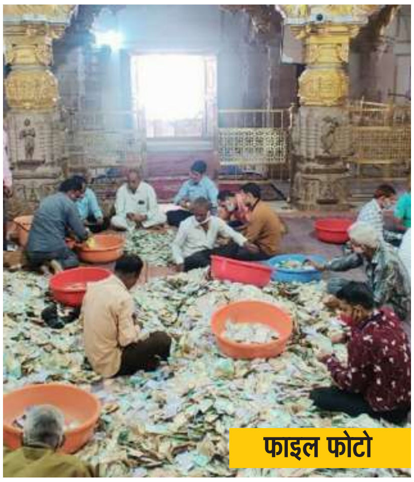

अमावस्या के 1 दिन पहले चतुर्दशी को खोला जाता है। इसके बाद अमावस्या का मेला शुरू हो जाता है। वही दीपावली के समय यह भंडारा दो महीने व होली के समय डेढ़ माह में खोला जाता है। मंदिर में लोग रसीद कटाकर नंबर 1 में भी दान कर कर जाते हैं। यह राशि 30 से 70 लाख रूपय के बीच होती है। अधिकांश राशि सेवा कार्य में मंदिर ट्रस्ट को अर्जित होने वाली आय सेवा और विकास कार्य में उपयोग की जाती है। ट्रस्ट शिक्षा, चिकित्सा, धार्मिक आयोजन, विकास और मूलभूत सुविधाओं को विकसित करने में यह राशि खर्च करता है। ट्रस्ट ने मंडफिया के आसपास के 16 गांवों का विकास भी इसी राशि से करवा रहा है।

सांवरिया सेठ मंदिर में आने वाले कई भक्त एनआरआई है। ये विदेशों में अर्जित आय से सांवरिया सेठ का हिस्सा चढ़ाते हैं। ऐसे में भारतीय रुपए के साथ अमरीकी डॉलर, पाउण्ड, रियॉल, दिनार और नाईजीरिया नीरा के साथ कई देशों की मुद्रा मंदिर के भंडारे में आती है। सांवरिया सेठ की ऐसी मान्यता है जिसके कारण देश के कोने-कोने व विदेशों से हर साल करीब एक करोड़ लोग मंदिर के दर्शन के लिए आते हैं।

इंदौर से अलग ही लगाव था लता मंगेशकर का

सुरीली आवाज शांत हो गई.... सुरमयी सफर थम सा गया हो....चिरनिद्रा में लीन हो गई स्वर कोकिला....। लाखों-करोड़ों दिलों पर राज करने वाली स्वर कोकिला अपनी बावाज हम सभी के बीच छोड़कर चली गई। अब सिर्फ उनकी यादें ही शेष रह गई। इंदौर से लता मंगेशकर का एक अलग ही लगाव जुड़ा हुआ था। 28 सितंबर 1929 को लता मंगेशकर का जन्म शहर के सिख मोहल्ले में हुआ। इंदौर जिला अदालत से लगी गली में लता की नानी का घर था, यहीं से उनकी संगीत की शिक्षा शुरु हुई। इसके बाद वे सात साल की उम्र में महाराष्ट्र चली गईं। लता मंगेशकर के इंदौर से जाने के कुछ समय बाद उनके घर को एक परिवार ने खरीदा था। यह घर अभी मेहता परिवार के पास हैं। इंदौर की सराफा की चाट-चौपाटी से लेकर यहां की उन तमाम गलियों का जिक्र वे करती रही हैं जहां उनका बचपन गुजरा हैं। शहर की तमाम प्रमुख हस्तियों के अलावा आम नागरिकों ने लता मंगेशकर के निधन पर शोक व्यक्त किया। सोश्यल मीडिया पर भी लोगों ने पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शहर के लोगों का कहना हैं उनका जाना देश के किए अपूरणीय क्षति है। वे सभी संगीतसाधकों के लिए सदैव प्रेरणा थीं। संगीत जगत से जुड़े लोगों का कहना हैं लता मंगेशकर एक खालीपन छोड़ गई है जिसे भरा नहीं जा सकता। आने वाली पीढ़ियां उन्हें भारतीय संस्कृति के एक दिग्गज के रूप में याद रखेंगी, जिनकी सुरीली आवाज में लोगों को मंत्रमुग्ध करने की अद्वितीय क्षमता थी।

इंदौरियों से पूछती थी शहर का हाल

जन्म के बाद से उनका ज्यादातर जीवन मुंबई में बीता, लेकिन इंदौर को वे कभी नहीं भूलीं। अपने जन्म स्थान के लोगों से मिलकर उन्हें बेहद खुशी होती। वैसे तो उनका का निधन सिनेमा और संगीत की दुनिया के लिए गहरी क्षति पहुंचा गया, लेकिन मध्यप्रदेश खासकर इंदौर ने अपनी बेटी को खो दिया। इंदौर में जन्मी, यहां पली-बढ़ी और अपनी संगीत की शुरुआत इंदौर से करने वाली लता को खोने का दुख पूरे शहरवासियों ने व्यक्त किया। इंदौर जिला अदालत से लगी गली में उनकी नानी का घर था, यहीं से उनकी संगीत शिक्षा शुरू हुई थी। इसी से लगे चौराहे और इस गली का नाम लता मंगेशकर के नाम पर रखने की घोषणा भी की गई है। करीब छह साल वे यहां रहीं और इसके बाद वे सात साल की उम्र में महाराष्ट्र चली गईं।

इस तरह जुड़ी हैं यादें

स्वर कोकिला के चले जाने के बाद एक अजीब सी खामोशी फैली नजर आई। इंदौर का उनका वो घर भी बहुत वीरान हो गया, जहां उनकी किलकारियां गूंजा करती थीं। इंदौर में ही उनके कंठ से पहले बोल फूटे थे, जहां उन्होंने पहला सुर साधा था। इंदौर के सिख मोहल्ला में लता मंगेशकर के पिता दीनानाथ मंगेशकर का घर था। सात साल की उम्र तक वे इंदौर के इसी घर में रहीं। उनके इंदौर से जाने के बाद इस घर को एक मुस्लिम परिवार ने खरीदा। यह परिवार कुछ साल यहां रहा और फिर इस घर

को बलवंत सिंह को बेच दिया। बलवंत सिंह लंबे समय तक इस घर में रहें। बाद में उन्होंने इसे मेहता के परिवार को बेच दिया। मेहता परिवार ने घर के बाहरी हिस्से में कपड़े का शोरूम खोल लिया है। मेहता परिवार ने सबसे पहले घर का कायाकल्प करवाया।

दुकान में बनवाया म्यूरल

उनकी जन्मस्थली के बारे में घर के मालिक जितेंद्र सिंह ने विस्तार से जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि यह मकान 1960 में टूटकर दोबारा बनाया गया था। उस समय यह वाघ साहब के बाड़े के रूप में जाना जाता था। लता मंगेशकर के इंदौर से महाराष्ट्र जाने के कुछ समय बाद उनके घर को एक परिवार ने खरीदा था। यह घर अभी मेहता परिवार के पास हैं। यहां रहने वाले नितिन और स्नेहल मेहता के अनुसार जब पता चला कि इसी घर में लता मंगेशकर का जन्म हुआ था तो हमनें इसे मुंहमांगी कीमत पर खरीद लिया। घर खरीदने के बाद उसका कायाकल्प करवाया। दुकान के एक हिस्से में लता मंगेशकर का म्यूरल बनवाया। लता मंगेशकर के छोटे भाई ह्दयनाथ मंगेशकर भी यहां आ चुके हैं। लता को इंदौर के सराफा की खाऊ गली के गुलाब जामुन, रबड़ी और दही बड़े बहुत पसंद थे। चाट गली और सराफा में उनका आना-जाना लगा रहता था।

कई घंटे तक खड़े-खड़े सुनते रहे

1984 में नेहरू स्टेडियम में लता मंगेशकर का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में तत्कालीन मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह सपरिवार मौजूद थे। कार्यक्रम में लता मंगेशकर ने ऐ मेरे वतन के लोगों..गीत से शुरुआत की थी और अपनी आवाज का ऐसा जादू बिखेरा था कि हर कोई बस सुनता रह गया। उस समय पूरा नेहरू स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था और छावनी से लेकर व्हाइट चर्च, रेसीडेंसी कोठी तक उन्हें सुनने वाले लगभग 10 हजार लोग कई घंटों तक खड़े होकर उन्हें सुन रहे थे। कार्यक्रम में ही अर्जुन सिंह ने हर वर्ष इंदौर में लता अलंकरण सम्मान समारोह आयोजित करने की घोषणा की थी। हालांकि यह भी विडंबना ही रही कि इस कार्यक्रम के बाद कभी भी उन्होंने इंदौर में कोई कार्यक्रम में शिरकत नहीं की। उन्हें इंदौर बुलाने के लिए मुख्यमंत्री स्तर से लेकर सुमित्रा महाजन औऱ कैलाश विजयवर्गीय ने कई प्रयास किए लेकिन सफलता नहीं मिली।

संस्कृति विभाग करता है सम्मानित

मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग की ओर से विभिन्न कलाओं और साहित्य के क्षेत्र में हर साल 15 राष्ट्रीय और 3 राज्य स्तरीय सम्मान दिए जाते हैं। लता मंगेशकर सम्मान सुगम संगीत के लिए दिया जाने वाला राष्ट्रीय अलंकरण हैं। इसके अंतर्गत सम्मानित कलाकार को दो लाख रुपए और प्रशस्ति पट्टिका दी जाती हैं। सुगम संगीत के क्षेत्र में कलात्मक श्रेष्ठता को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से 1984 में लता मंगेशकर सम्मान स्थापित किया गया। यह सम्मान बारी-बारी से संगीत रचना और गायन के लिए दिया जाता है। सम्मान उत्कृष्टता, दीर्घसाधना और श्रेष्ठ उपलब्धि के भरसक निर्विवाद मानदंडों के आधार पर सुगम संगीत के क्षेत्र में देश की किसी भी भाषा के गायक अथवा संगीत रचनाकार को उसके संपूर्ण कृतित्व पर दिया जाता है, न कि किसी एक कृति के आधार पर। सम्मान केवल सृजनात्मक कार्य के लिए हैं, शोध अथवा अकादमिक कार्य के लिए नहीं। सम्मान के लिए चुने जाने के समय कलाकार का सृजन-सक्रिय होना आवश्यक हैं।

आई थीं भय्यू महाराज के आश्रम

दिवंगत भय्यू महाराज से लता मंगेशकर की आत्मीयता थी। वे भय्यू महाराज द्वारा गरीबों के हितों में किए गए कामों और महाराष्ट्र में उनके आश्रमों में संचालित गतिविधियों को लेकर काफी प्रभावित थीं। त्योहारों, जन्म दिवस व खास मौकों पर भय्यू महाराज से उनकी कई बार फोन पर बातें भी हुई। 21 अगस्त 2005 की रात में वे आखिरी बार इंदौर आई थीं। भय्यू महाराज के बुलावे पर वे उनके आश्रम में ही रुकी थीं। आश्रम में पूजन के बाद वे बाहर आईं भीड़ देखकर परेशान हुईं। कुछ देर संबोधित करने के बाद वे चली गई।

जन्मदिन पर मुंबई जाकर दी बधाई

इसी तरह पूर्व लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन भी लता मंगेशकर की मुरीद हैं। 2019 में लोकसभा स्पीकर रहते हुए उन्होंने लता मंगेशकर के जन्मदिन पर उनके मुंबई स्थित निवास पर जाकर बधाई दी थी। दोनों के बीच उस दौरान आधा घंटा बातचीत हुई थी। ताई ने लता मंगेशकर से कहा था कि आपसे बात करते हुए ऐसा लग रहा है जैसे मैं कोई गाना सुन रही हूं। आपकी बोली में गाने जैसी मधुरता है। इसी दौरान ह्दयनाथ मंगेशकर के साथ इंदौर की भी चर्चा हुई थी। महाजन ने मुंबई में ही लता मंगेशकर की बहन मीना खड़ीकर द्वारा लिखित पुस्तक 'मोठी तिची सावली' का विमोचन भी किया था।

भितरवार जनपद पंचायत की ओर से गणतंत्र दिवस की

बहुत बहुत शुभकामनाएं

भितरवार नगर पंचायत एवं नगर वासियों से अपील

1. कचरा कचरेदान मैं डाले तथा जनपद पंचायत को स्वच्छ रखे
2. कोरोनॉं से बचने के लिए वैक्सीन, मास्क,और दूरी बनाए रखें।
3 वृक्षा रोपण अवश्य करें।

डबरा जनपद पंचायत की ओर से गणतंत्र दिवस की

जनपद अध्यक्ष
सीमा रामू परिहार

बहुत बहुत शुभकामनाएं

भितरवार नगर पंचायत एवं नगरवासियों से अपील

1. कचरा कचरेदान मैं डाले तथा जनपद पंचायत को स्वच्छ रखे
2 कोरोनॉं से बचने के लिए वैक्सीन, मास्क और दूरी बनाए रखे।
3. वृक्षा रोपण अवश्य करे

जनपद अध्यक्ष
सीमा रामू परिहार

भितरवार नगर पालिका परिषद की ओर से गणतंत्र दिवस की

बहुत बहुत शुभकामनाएं

एवं भितरवार नगर वासियो से अपील

1. कचरा कचरेदान मैं डाले तथा नगर पालिका की कचड़े उठाने वाली गाड़ी मैं डाले।
2 कोरोनॉं से बचने के लिए वैक्सीन, मास्क,और दूरी बनाए रखें।
3 नगर परिषद मैं नल के बिल, मकान का टेक्स समय पर भरें।
4 वृक्षारोपण अवश्य करें।

उप्र में 90 के दशक में समाजवादियों की अय्याशी पर मशहूर शायर अदम गोंडवी ने लिखा था

**"काजू भुने पलेट में, विस्की गिलास में
उतरा है रामराज विधायक निवास में
पक्के समाजवादी हैं, तस्कर हों या डकैत
इतना असर है खादी के उजले लिबास में"**

वह तो अच्छा था कि अदम गोंडवी साहब सैफई महोत्सव नहीं देख पाए

मुलायम सिंह यादव 5 साल सत्ता में रहे और अखिलेश यादव 5 साल सत्ता में रहे और इन 10 सालों के दौरान हर साल मुंबई से उत्तर प्रदेश सरकार के सरकारी विमान से और दूसरे आलीशान कारपोरेट जेट भाड़े पर लेकर सलमान खान कैटरीना कैफ रणबीर कपूर माधुरी दीक्षित अमिताभ बच्चन शिल्पा शेट्टी से लेकर पूरे बॉलीवुड को एक छोटे से गांव सैफई में बुलाया जाता था जो मुलायम सिंह यादव का पैतृक गांव है और फिर 15 दिनों तक उस गांव में शराब शबाब और कबाब की महफिले सजती थी।

समाजवादी लोग हाथ में दारू का गिलास लिए मुर्ग मुसल्लम का चखना लिए फिल्मी तारिकाओं का डांस देखकर समाजवाद को मजबूत करते थे और इस महोत्सव के बारे में यहां तक भी खबरें हैं कि सिर्फ डांस ही नहीं

आगे बहुत कुछ होता था और तो और इनकी बेहयाई और बेशर्मी देखिए आरटीआई से जब पूछा जाता था कि समाजवाद के इस नंगे नाच पर आपने कितना पैसा सरकारी खजाने से खर्च किया है तब यह आरटीआई से जवाब नहीं देते थे और जो कोई हाईकोर्ट में अपील करता था उसे गोली मार दी जाती थी। इन्होंने 4 आरटीआई कार्यकर्ताओं की हत्या करवा दी थी जिन्होंने सैफई महोत्सव का खर्च जानने की कोशिश किया।

वह दहशत भरा दौर याद करिए और फिर मुलायम सिंह यादव के दौर के बाद जब मायावती आई तब उन्होंने यह खर्च बताया कि मुलायम सिंह यादव के पांच सैफई महोत्सव पर 18000 करोड रुपए खर्च हुआ और योगी सरकार ने बताया अखिलेश यादव के सैफई महोत्सव पर 34000 करोड़ सरकारी खजाने से खर्च हुआ और यह सब पैसे भाड़े पर कारपोरेट देने वाले तथा मुंबई के अमीर फिल्मी दुनिया के सितारों पर खर्च कर दिए गए।

अखिलेश यादव का यही असली समाजवाद है : आप कुछ वीडियो फुटेज और कुछ फोटोग्राफ देखिए इस तरह से मुंबई की पूरी फिल्मी दुनिया को पैसे सरकारी पैसे के दम पर अखिलेश यादव और मुलायम सिंह यादव से उतार देते थे और फिर समाजवादी शराब शबाब और कबाब का दौर चलता था जाम से जाम टकराते थे चखना का आदान-प्रदान होता था।

अपराधियों को बिल्कुल भी नही बख्शा जाएगा चाहे बो कोई भी हो : एसपी सूरज वर्मा

**मनोज चतुर्वेदी संपादक के साथ विशेष चर्चा
नीमच एस पी सूरज वर्मा के साथ**

नीमच को आप कानून की दृष्टि से किस प्रकार देखते है। के प्रश्न के जबाव मैं नीमच पुलिस अधीक्षक सूरज वर्मा ने मनोज चतुर्वेदी से चर्चा मैं बताया कि नीमच एक अन्य दूसरे राज्य राजस्थान की सीमा से बिल्कुल जुड़ा है और यहाँ कानूनी व्यस्था मैं बहुत ही ध्यान पूर्वक कार्य करना पड़ता है इसमे हमे पास के राज्य राजस्थान के जिले चित्तौड़गढ़ के भी प्रशासन का सहयोग एवं सामंजस्यपूर्ण सहयोग मिलता है। अपराधियों एवं गैर कानूनी कार्य करने वालो के खिलाफ कार्यवाही में।

इसी क्रम मे हमने कई बड़े तस्करों को गिरफ्तार कर इनके गैर कानूनी कार्यो को समाप्त कर इनकी कमर तोड़ दी है। इसमे हमे हमारे डी एम मयंक अग्रवाल जी का भी सहयोग मिलता है। अभी कोरोनॉं महामारी को देख लीजिए हमने मिलकर सोहार्द पूर्ण माहौल मैं गाइड लाइन का पालन करवाया। कई अपराधियो के खिलाफ बड़ी कार्यबाही की इसी क्रम मे एक बड़े अपराधी को वित्तीय मदद करने मे लगे लोगो को गिरफ्तार किया । चाहे बो भूमाफिया या कोई और अपराधी सभी पर कार्यबाही की है उसी का परिणाम है कि यहाँ की जनता भी हमारे साथ सहयोग और किये गए कार्यो की प्रसंसा के साथ साथ सहयोग करती है कानून व्यस्था मैं। कोरोनॉं काल की तीसरी लहर के प्रति भी पुलिश प्रशासन नागिको को सचेत कर रहा है और नियमो को पालन कवाने के लिए

तत्पर्य है। हमने पार्कों मैं भी असमाजिक तत्वों के हुडंग करने बालो को चिन्हित कर कार्यवाही की है। आपके द्वारा नगरपालिका कॉलोनी बार्ड न0 13 के पार्क मैं रात रात को कुछ लड़कों ओर असमाजिक तत्वों के द्वारा देर रात रात तक हुडंग मचाने की खवर ओर वैसे भी बात संज्ञान मैं लाई गई उस को भी हम संज्ञान मैं लाये है और ऐसे लोगों को चिन्हित करके इनके खिलाफ कार्यवाही करेंगे जिससे वहां के निवासियों को कोई प्रॉब्लम ना हो।

इंदरगढ़ नगर पालिका परिषद की ओर से

बहुत बहुत शुभकामनाएं

एवं इंदरगढ़ नगर वासियो से अपील

1. कचरा कचरेदान मैं डाले तथा नगर पालिका की कचड़े उठाने वाली गाड़ी मैं डाले।
2. कोरोना से बचने के लिए वैक्सीन, मास्क और दूरी बनाए रखे।
3. नगर पालिका मैं नल के बिल, मकान का टैक्स समय पर भरे।
4 वृक्षारोपण अवश्य करें।

नीमच नगर पालिका परिषद की ओर से गणतंत्र दिवस की

मयंक अग्रवाल
प्रशासक एवं डीएम नीमच

बहुत बहुत शुभकामनाएं

एवं नीमच नगरवासियों से अपील

1. कचरा कचरेदान मैं डाले तथा जनपद पंचायत को स्वच्छ रखे
2 कोरोनॉ से बचने के लिए वैक्सीन, मास्क और दूरी बनाए रखे।
3. वृक्षा रोपण अवश्य करे

सी पी रॉय, सीएमओ
नगरपालिका परिषद, नीमच

दतिया नगर पालिका की ओर से गणतंत्र दिवस की

बहुत बहुत शुभकामनाएं

एवं दतिया नगर वासियो से अपील

1. कचरा कचरेदान मैं डाले तथा नगर पालिका की कचड़े उठाने वाली गाड़ी मैं डाले।
2. कोरोना से बचने के लिए वैक्सीन, मास्क और दूरी बनाए रखे।
3. नगर पालिका मैं नल के बिल, मकान का टैक्स समय पर भरे।
4 वृक्षारोपण अवश्य करें।

गुना और अशोकनगर के अधिकारियों ने जिले में भ्रमण कर देखी स्वच्छता की गतिविधियां

स्वच्छता को जन आंदोलन बनाया जाए- संभागीय आयुक्त श्री सक्सेना

निगम मुख्यालय पर हुई स्वच्छता के संबंध में कार्यशाला

ग्वालियर संभाग के गुना और अशोकनगर जिले के अधिकारियों ने आज ग्वालियर में स्वच्छता सर्वेक्षण के लिये किए गए कार्यों का अवलोकन किया। इसके साथ ही स्वच्छता सर्वेक्षण में अव्वल आने के लिये आयोजित कार्यशाला में भी भागीदारी की। संभागीय आयुक्त श्री आशीष सक्सेना की पहल पर ग्वालियर-चंबल संभाग के अधिकारियों को 28 जनवरी से 31 जनवरी तक ग्वालियर में बुलाकर भ्रमण एवं कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

गुना एवं अशोकनगर के अधिकारियों ने बुधवार को सुबह निगम के अधिकारियों के साथ लैंडफिल साइट, बरा में लैंडफिल साइट पर तैयार किए गए उद्यान, सीवर ट्रीटमेंट प्लांट, ट्रांसफर स्टेशन के साथ ही बैजाताल का भी अवलोकन किया। भ्रमण के पश्चात नगर निगम के सभाकक्ष में एक कार्यशाला का आयोजन भी किया गया।

संभागीय आयुक्त श्री सक्सेना ने कार्यशाला में कहा कि स्वच्छता को जन आंदोलन बनाना होगा। इसके साथ ही स्वच्छता में जो कार्य किए जा रहे हैं उसको स्वच्छता अभियान की साइट पर लोड भी करना आवश्यक है। स्वच्छता सर्वेक्षण के दौरान किए गए कार्यों को अच्छे नम्बर मिलें, इसके लिये अभियान में जो-जो गतिविधियां बताई गई हैं, उनको समय पर करना आवश्यक है।

उन्होंने दोनों जिले के अधिकारियों से कहा कि स्वच्छता के लिये सबसे आवश्यक है कि डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन शतप्रतिशत हो। गीला व सूखा कचरा अलग-अलग एकत्र किया जाए। व्यवसायिक क्षेत्रों में भी सुबह और शाम सफाई की अच्छी व्यवस्था हो, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए। संभाग आयुक्त ने कहा कि ग्वालियर नगर निगम द्वारा जो कार्य किए जा रहे हैं उसको सभी अधिकारी देखें और अपने-अपने नगरीय क्षेत्र में भी उसका क्रियान्वयन सुनिश्चित करें। उन्होंने यह भी कहा कि स्वच्छता में नवाचार सभी को करना चाहिए। जन जागरूकता के लिये निरंतर अभियान भी चलाया जाए।

नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल ने कार्यशाला में दोनों जिले से आए अधिकारियों को निगम द्वारा किए जा रहे कार्यों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ग्वालियर का भी एक दल इंदौर भ्रमण करके आया है। स्वच्छता के क्षेत्र में इंदौर में जो कार्य किए जा रहे हैं, उसका अनुशरण ग्वालियर में तेजी से प्रारंभ किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि स्वच्छता नियमित गतिविधि है, इसकी मॉनीटरिंग भी प्रतिदिन आवश्यक है।

कार्यशाला में संयुक्त संचालक नगरीय निकाय श्री आर के श्रीवास्तव ने स्वच्छता अभियान में क्या-क्या गतिविधियां की जाना है और किस गतिविधि के कितने नम्बर है उसके बारे में प्रजेण्टेशन के माध्यम से विस्तार से जानकारी दी।

लहार नगर पालिका परिषद की ओर से गणतंत्र दिवस की

डॉक्टर गोविंद सिंह
विधायक लाहर

बहुत बहुत शुभकामनाएं

एवं लहार नगर वासियों से अपील

1. कचरा कचरेदान मैं डाले तथा नगर पालिका की कचड़े उठाने वाली गाड़ी मैं डाले। 2. कोरोनॉ से बचने के लिए वैक्सीन, मास्क और दूरी बनाए रखे। 3. नगर परिषद मैं नल के बिल, मकान का टेक्स समय पर भरे। 4. वृक्षा रोपण अवश्य करें।

सी एम ओ
महेश पुरोहित

स्वयं जांच कराने वालों एवं टीम द्वारा की जांचों की अलग-अलग संक्रमण दर निकालें- श्री सिंधिया

केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने की कोरोना से निपटने के लिए की गईं तैयारियों की समीक्षा

विशेष संवाददाता मनोज चतुर्वेदी

ग्वालियर 27 जनवरी 2022/ लक्षण दिखाई देने पर जो लोग स्वयं कोरोना की जाँच कराने आते हैं और जिनकी जाँच सरकारी अमले द्वारा अभियान के तहत की जाती है, दोनों तरह की जाँचों की अलग-अलग संक्रमण दर (पॉजिटिविटी रेट) निकालें। जिससे सही-सही संक्रमण दर का पता लगे और मरीजों की बेहतर देखभाल की जा सके। इस आशय के निर्देश केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने दिए। श्री सिंधिया डिस्ट्रिक्ट क्राइसेस मैनेजमेंट ग्रुप और संबंधित अधिकारियों की बैठक में कोरोना की तीसरी लहर से निपटने के लिये की गई तैयारियों की समीक्षा कर रहे थे। गुरूवार को यहाँ मोतीमहल के मानसभागार में आयोजित हुई बैठक में केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने डीआरडीओ ग्वालियर में कोरोना सेम्पल की जीनोम सीक्वेंसिंग कराने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि राज्य अथवा केन्द्र सरकार जहां से भी डीआरडीओ में जीनोम सीक्वेंसिंग कराने की अनुमति की जरूरत होगी वहाँ से अनुमति दिला दी जायेगी। बैठक में सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने डीआरडीओ ग्वालियर में जीनोम सीक्वेंसिंग कराए जाने की ओर ध्यान आकर्षित किया था।

केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने बैठक में जोर देकर कहा कि शहर के साथ-साथ ग्रामीण अंचल में भी प्रमुखता के साथ कोरोना की जाँच कराई जाए। उन्होंने कहा कि बड़े पैमाने पर हुए टीकाकरण की वजह से वर्तमान में ओमिक्रोन ज्यादा प्रभाव नहीं डाल पा रहा है। फिर भी हमें पूरी तरह सावधानी बरतने की जरूरत है। कोविड अनुरूप व्यवहार के पालन के साथ-साथ सभी एहतियाती उपाय जरूरी हैं। पुराने अनुभव बताते हैं कि कोरोना वायरस तेजी के साथ अपना रूप बदलता है। इस बात को ध्यान में रखकर हमें हर समय कोरोना से निपटने की पुख्ता तैयारियां रखनी हैं।

डोर टू डोर सर्वे कर शत प्रतिशत बच्चों का कराएँ टीकाकरण

केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बैठक में विशेष जोर देकर कहा कि डोर टू डोर सर्वे कर 15 से 17 वर्ष आयु वर्ग के शतप्रतिशत बच्चों को कोरोना के टीके लगवाएं। उन्होंने कहा बीएलओ, नगर पालिका निगम के कर्मचारी, ग्रामीण क्षेत्र में पंचायत के कर्मचारी मिलकर इस काम को अंजाम दें। बैठक में मौजूद जनप्रतिनिधियों से भी उन्होंने आग्रह किया कि इस पुनीत काम में आप सब भी सहयोग करें। श्री सिंधिया ने 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बुजुर्गों को तेजी के साथ प्रिकोशन डोज लगाने पर भी विशेष बल दिया। साथ ही कहा कि सभी स्वास्थ्य कर्मी और फ्रंट लाईन वर्कर्स को भी प्रमुखता के साथ प्रिकोशन डोज लगवाए जाएं।

पॉजिटिविटी रेट में आई गिरावट

कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने बैठक में जानकारी दी कि पिछले एक हफ्ते में कोरोना संक्रमण दर (पॉजिटिविटी रेट) में कमी आई है। उन्होंने बताया कि जिले में तीसरी लहर के दौरान अधिकतम पॉजिटिविटी रेट 16.25 प्रतिशत तक पहुँची थी, जो अब घटकर 9.27 प्रतिशत पर आ गई है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि जिले में वर्तमान में कुल 3 हजार 335 एक्टिव कोरोना केस हैं। इनमें से मात्र 55 मरीज अस्पताल में भर्ती हैं। शेष मरीज घर पर ही आइसोलेट होकर अपना इलाज करा रहे हैं। कमाण्ड एण्ड कंट्रोल सेंटर के माध्यम से दिन में दो बार घर पर आइसोलेट मरीजों से संपर्क किया जाता है। साथ ही सभी को घर पर ही दवाएँ पहुँचाई जा रही हैं। उन्होंने जानकारी दी कि जिले में वर्तमान में 257 माइक्रो कंटेनमेंट जोन एक्टिव हैं। कलेक्टर ने कोविड से निपटने के लिये अस्पतालों में की गई व्यवस्थाओं पर भी विस्तार से प्रकाश डाला।

बैठक में इनकी रही मौजूदगी

बैठक में प्रदेश के लोक निर्माण राज्य मंत्री श्री सुरेश धाकड़, सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर, लघु उद्योग विकास निगम की अध्यक्ष श्रीमती इमरती देवी, जिला पंचायत प्रशासकीय समिति की अध्यक्ष श्रीमती मनीषा यादव, पूर्व मंत्री श्रीमती माया सिंह व श्री नारायण सिंह कुशवाह, भाजपा जिला अध्यक्ष शहर श्री कमल

माखीजानी व ग्रामीण श्री कौशल शर्मा, पूर्व विधायकगण श्री रमेश अग्रवाल , श्री रामबरन सिंह गुर्जर व श्री मदन कुशवाह एवं पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, संभाग आयुक्त श्री आशीष सक्सेना, पुलिस महानिरीक्षक श्री अनिल शर्मा, कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री अमित सांघी, नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल, स्मार्ट सिटी की सीईओ श्रीमती जयति सिंह, अपर कलेक्टर श्री इच्छित गढ़पाले, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनीष शर्मा, जिले के सभी एसडीएम व अन्य इंसीडेंट कमाण्डर तथा क्राइसेस मैनेजमेंट ग्रुप के अन्य सदस्यगण मौजूद थे।

कमाण्ड सेंटर से फोन और वीडियो कॉलिंग से जाने मरीजों के हाल

केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बैठक से पहले स्मार्ट सिटी के कमाण्ड एण्ड कंट्रोल सेंटर का जायजा लिया। उन्होंने यहाँ संचालित कोविड हैल्पलाइन सेवा से टेलीफोन और वॉट्सएप वीडियो कॉलिंग के जरिए होम आइसोलेट मरीजों से बात कर उनके हालचाल जाने। केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने श्रीमती तानिया व श्री मृगांक सहित अन्य मरीजों से चर्चा की। एलआईसी में पदस्थ श्रीमती लक्ष्मी का कहना था कि कमाण्ड सेंटर द्वारा सतत संपर्क रखकर हमें सलाह दी जाती है। साथ ही दवायें मुहैया कराई गई हैं। इसी तरह मृगांक बोले कि हमारा आप सबको दिल से धन्यवाद है। प्रशासन ने हमारा पूरा ख्याल रखा है।

एक हफ्ते में ओला प्रभावित किसानों को राहत वितरण सुनिश्चित करें

केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने जिले में ओलावृष्टि से प्रभावित फसलों के सर्वेक्षण और राहत वितरण की समीक्षा भी की। उन्होंने एक हफ्ते के भीतर सभी प्रभावित किसानों के खाते में राहत पहुँचाने के निर्देश दिए। बैठक में जानकारी दी गई कि जिले में ओलावृष्टि से 51 गाँवों व उनसे जुड़े मजरों के लगभग 14 हजार 224 किसानों की करीबन 10 हजार 442 हैक्टेयर रकबे की फसल प्रभावित हुई है। प्रभावित किसानों को लगभग 23 करोड़ 88 लाख रूपए की राहत राशि वितरित की जायेगी। सर्वेक्षण का काम पूर्ण किया जाकर राहत वितरित करने के लिये बिल लगाए जा रहे हैं। जल्द ही सिंगल क्लिक के जरिए सभी प्रभावित किसानों के खातों में राहत राशि पहुँचाई जायेगी।

उपार्जन में गड़बड़ी करने वालों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई करें

केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने समर्थन मूल्य पर फसल उपार्जन में गड़बड़ी करने वालों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई करने के निर्देश भी बैठक में दिए। उन्होंने कहा विशेष मुहिम चलाकर गलत पंजीयन कराने वालों, गड़बड़ी करने वाले कर्मचारियों व ऐसे व्यापारियों को खोजें जो किसानों के नाम पर समर्थन मूल्य पर उपज बेचने की जुर्रत करते हैं। इन सभी के खिलाफ पुलिस कार्रवाई के साथ-साथ अन्य कानूनी प्रावधानों के तहत कठोरतम कार्रवाई की जाए। कार्रवाई ऐसी हो जो ऐसा उदाहरण बने कि कोई अन्य गड़बड़ी करने की जुर्रत न कर पाए। श्री सिंधिया ने कहा कि शिकायत का इंतजार किए बगैर पहले से ही कार्रवाई करें, जिससे पारदर्शिता के साथ खरीदी हो सके। उन्होंने खरीदी केन्द्रों पर उपज की मानकता जांच के लिये तैनात किए जाने वाले सर्वेयर को पूरा संरक्षण देने पर भी बल दिया।

विकास कार्य के साथ साथ पर्यावरण के लिए वृक्षा रोपण भी जरूरी- श्री अग्रवाल

विकास कार्य जितना जरूरी है उतना ही पर्यावरण पर ध्यान देना आबश्यक है। और इसके लिए जरूरी है हम सभी लोगों को वृक्षारोपण करना साथ साथ उन बृक्षों को विकसित होने तक ध्यान दे। चर्चा को आगे आगे बढ़ाते हुए नीमच डी एम मयंक अग्रवाल ने बताया कि निमचं मैं पर्यावरण पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कोरोना (कोविड 19) से बचने के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार के जो भी निर्देश ओर गाइडलाइंस है उसका हम पालन कर भी रहे है और कर रहे है। वर्तमान मैं निमचं जिले मे वैक्सीनेशन का कार्य सफलतापूर्वक चल रहा है और यहाँ नागरिक भी पूरा सपोर्ट कर रहे है प्रशासन का उत्साह के साथ।

नीमच की बाग बगीचा की समस्याओं पर भी प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया कि कई अवैध निर्माण कार्य और अबैध कब्जा था उसको भी हटाया गया है और जल्दी ही ओर जल्दी ही इस समस्या का निराकरण कर दिया जाएगा। कुछ धरोहरों जैसे वरुखेड़ा मंदिर जो कि बड़ी दयनीय स्थिति मे है के बारे मे प्रश्न पूछने पर बताया कि आपके द्वारा यह मेरे संज्ञान मैं लाया गया है तो इस पर मैं जानकारी प्राप्त करके इससे संबंधित समस्याओं को दूर करूँगा।

स्मार्ट सिटी सीईओ जयति सिंह जी के साथ हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के संपादक मनोज चतुर्वेदी से विशेष चर्चा

डॉ. मुकेश चतुर्वेदी को चंबल संभाग का प्रभारी तथा प्रदेश का सह संयोजक बनाया

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद श्री विष्णु दत्त शर्मा जी की अनुशंसा पर भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक डॉक्टर अभिजीत देशमुख द्वारा आज भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ मध्य प्रदेश में सह संयोजकों की नियुक्ति की गई। जिसमें डॉ मुकेश चतुर्वेदी को चंबल संभाग का प्रभारी तथा प्रदेश का सह संयोजक बनाया गया है ।

कोविड-19 की शुरुआत से ही स्मार्ट सिटी का कंट्रोल कमांड सेंटर निभा रहा है अपनी अहम भूमिका...

कमांड कंट्रोल सेंटर में कोरोना की तीसरी लहर को देखते हुए कर्मचारियों को दिया प्रशिक्षण

• मनोज चतुर्वेदी

कोरोना की तीसरी लहर की संभावनाओ को देखते हुये ग्वालियर स्मार्ट सिटी ने पेशेंट, ड्यूटी, शिकायत और ऑक्सीजन सफ्लाई मैनेजमेंट सिस्टम को अपडेट करना शुरु कर दिया है साथ ही कंट्रोल कमांड सेंटर में तैनात ऑपरेटर सहीत मेडिकल स्टॉफ की भी ट्रेनिंग लगातार की जा रही है ताकि किसी भी विषम परिस्थितियो से निपटने के लिये तैयार रहा जा सके।

ओमिक्रॉन वैश्विक महामारी की संक्रमण दर तीव्रता से फैल रही है। आगामी संभावित लहर को दृष्टीगत रखते हुये शासन द्वारा जारी जरुरी निर्देशो के तहत ग्वालियर स्मार्ट सिटी के कंट्रोल कमांड सेंटर में भी कोरोना से लडने के लिये हर तैयारियां पूरी की जा रही है। मार्च 2020 में कोरोना महामारी की पहली दस्तक से ही ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा विकसित एकीकृत कमांड कंट्रोल सेंटर कोविड कॉम्बैट में अहम भूमिका निभा रहा है। ग्वालियर स्मार्ट सिटी के इस आपदा केन्द्र से अनेक महत्वपूर्ण गतिविधियाँ निरन्तर संचालित की जा रही हैं। कोरोना की तीसरी लहर की सम्भावनाएँ देखते हुए कमांड सेंटर में कार्यरत कर्मचारियों को रीफ्रेशर ट्रेनिंग प्रदान की गई है। इस समय कंट्रोल कमांड सेंटर में 15 सदस्यो का मेडिकल दल शिफ्ट में 24 घंटे तैनात है वही 25 से अधिक ऑपरेटर द्वारा मैनेजमेंट पोर्टल द्वारा कोराना महामारी की हर गतिविधी पर नजर रखी जा रही है।

कोविड की दो लहरों में कमांड सेंटर ने संक्रमण की रोकथाम में अहम भूमिका निभाई थी। कमांड सेंटर पर तैनात ऑपरेटरस में अधिकांश दो लहर में अपना योगदान दे चुके हैं तथा उनके अनुभव निश्चित ही लाभप्रद होगा। कमांड सेंटर में स्मार्ट सिटी के साथ ही स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी व चिकित्सक भी कार्यरत हैं तथा स्थिति पर निरंतर नजर बनाए हैं। इसके अलावा इन्सिडेंट कमांडरों की टीम का समन्वय भी कमांड सेंटर से किया जाता है।

निम्न बिन्दुओं पर रहेगा फ़ोकस

1. होम आइसोलेटेड पेशंट की मॉनिटरिंग - पिछले कुछ महीनों में कोरोना संक्रमण के अधिकांश व्यक्ति होम आइसोलेशन में ही परामर्श व उपचार से 10 से 14 दिन में स्वस्थ होकर डिस्चार्ज हो रहे हैं। गम्भीर लक्षणों व स्वास्थ्य की स्थिति को देखते हुए कुल संक्रमितों को कमांड सेंटर द्वारा चिकित्सालय में शिफ़्ट किया जाता है। इस मॉनिटरिंग के चलते होम आइसोलेटेड संक्रमित को प्रतिदिन दो बार कॉल कर उसके स्वास्थ्य सम्बंधी जानकारी भी ली जाती है।
2. कोरोना हेल्पलाइन सेवाः ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा कोविड हेल्पलाइन सेवा का संचालन मार्च 2020 से किया जा रहा है। कोरोना से जुड़ी किसी भी शंका को 0751-2646604/5/6/7/8/9/ पर कॉल कर साझा किया जाता है जिसे कमांड सेंटर पर 24X7 कार्यरत टीम निराकृत करती है।
3. व्हाट्सऐप वीडियो कॉल द्वारा चिकित्सकीय परामर्शः यह सेवा ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा लागू की गई एक अहम पहल है। अनुभवी चिकित्सकों द्वारा घर बैठे परामर्श दिया जाता है तथा निः शुल्क होने के कारण काफ़ी लोगों ने इस सेवा का उपयोग किया।
4. कंटेनमेंट जोन मॉनिटरिंग : अत्याधुनिक जियो फेंसिंग तकनीक की सहायता से कंटेनमेंट ज़ोन निरधारित किए जाते हैं जो संक्रमण को रोकने में/ संक्रमण की रफ़्तार धीमी करने में अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुए हैं।

ग्वालियर स्मार्ट सिटी के एकीकृत कमांड कंट्रोल सेंटर से निम्न सेवाएँ आमजन के लिए उपलब्ध हैं:

1. कोविड हेल्पलाइन
2. रात्रिकाल आपातकालीन ऐंबुलेंस हेल्पलाइन
3. कोरोना रिपोर्ट हेल्पलाइन
4. शिशु रोग विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा परामर्श
5. वहाट्सैप वीडियो द्वारा चिकित्सकीय परामर्श
6. हॉस्पिटल बेड प्रबंधन
7. ऑक्सीजन डिमांड ऐनेलिसिस एंड मैनेजमेंट
8. कोविड ससपेक्ट ट्रेसिंग एंड इन्फ़र्मेशन मैनेजमेंट सिस्टम
9. स्मार्ट कवच मोबाइल ऐप

मनोज चतुर्वेदी सम्पादक हमारा देश हमारा अभिमान एवं विशेष संवाददाता साधना न्यूज़ को कोरोना काल मे सहयोग, अच्छी कबरेज के लिए गणतंत्र दिवस को हुए डबरा एस डी एम प्रदीप शर्मा जी के द्वारा हुए सम्मानित।

अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम मेरे पिताजी का बहुत पुराना सपना- सिंधिया

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि यह अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम मेरे पिताजी का बहुत पुराना सपना था। वो लंबे समय से प्रयासरत रहे, वो सपना अब तेज गति से साकार होता जा रहा है। स्टेडियम का करीब 45 फीसदी काम पूरा हो चुका है। 30000 दर्शकों की क्षमता वाला स्टेडियम अगले साल दिसंबर तक पूरी तरह तैयार हो जाएगा। इंडिया ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में दर्शकों के साथ एक कारपोरेट बॉक्स और मीडिया के लिए भी खास बॉक्स बनाए जा रहे हैं, सिंधिया के मुताबिक हमें उम्मीद है कि ग्वालियर का ये नया स्टेडियम न सिर्फ देश का बल्कि दुनिया का सबसे अत्याधुनिक स्टेडियम बनेगा। यहां की टर्फ विकेट भी शानदार होगी, जो हाई स्कोरिंग मैच के लिए उपयुक्त जानी जाएगी। सिंधिया ने उम्मीद जताई कि जनवरी 2023 में जब अंतरराष्ट्रीय मैच आवंटित होंगे तब ग्वालियर की बारी आएगी तो इस नए ग्राउंड में मैच कराया जाएगा।

कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने श्री सांघी को एसपी से डीआईजी बनने पर दी बधाई

ग्वालियर के पुलिस अधीक्षक श्री अमित सांघी को पुलिस उप महानिरीक्षक पद पर पदोन्नति मिली है। पदोन्नत होने पर उन्हें कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने बधाई एवं शुभकामनायें दीं। इस अवसर पर पूर्व विधायक श्री मदन कुशवाह एवं अपर कलेक्टर श्री एच बी शर्मा भी मौजूद थे।

यूपी चुनाव में ओबीसी फैक्टर

उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में एक नया राजनीतिक-सामाजिक परिदृश्य उभर रहा है। कई वर्षों से चुनावी राजनीति में जो ओबीसी फैक्टर प्रमुखता पाता आया है, वह आज दलित फैक्टर ही नहीं, उग्र हिंदुत्व की राजनीति पर भी हावी हो गया है। उसने हिंदुत्व की आक्रामक राजनीति को भी कदम पीछे खींचने को मजबूर कर दिया है। दलित वोटों के बहुमत पर एकाधिकार रखनेवाली बसपा भी इसी कारण किनारे होती दिख रही है।

बसपा में बिखराव के बावजूद मायावती उत्तर प्रदेश में एक बड़ी ताकत हैं, किंतु ओबीसी फैक्टर के हावी होने से उनकी दावेदारी कमजोर लग रही हैं। मुख्य चुनावी संग्राम सपा और भाजपा के बीच सिमट गया है और दोनों ही अपना पूरा फोकस ओबीसी वोटों पर किये हुए हैं।

भाजपा सरकार और पार्टी से आधा दर्जन से अधिक मंत्री और विधायक सपा के खेमे में पहुंच गये। इनमें अधिकसंख्य ओबीसी नेता हैं। इसके दो बड़े कारण सामने आ रहे हैं। पहला, 'राजपूत' मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विरुद्ध बढ़ता गुस्सा, जो ब्राह्मण से लेकर ओबीसी मंत्रियों-विधायकों में काफी समय से था। दूसरा कारण है राम मंदिर, काशी विश्वनाथ धाम, गोरक्षा और मुस्लिम-विरोध की मार्फत जिस कट्टर हिंदुत्व की राजनीति को भाजपा ने अपना प्रमुख हथियार बनाया, वह उसके ओबीसी नेता-वर्ग को रास नहीं आ रहा था।

वर्ष 2014 से जिन दलित-ओबीसी जातियों को साथ लेकर भाजपा ने यूपी का किला भेदा, वे हिंदुत्व की हावी होती राजनीति में सामाजिक न्याय की अपनी लड़ाई को कमजोर होता देख रहे थे। मुख्यतः यादव-मुस्लिम आधार वाली जो समाजवादी पार्टी 2017 के चुनाव में गैर-यादव ओबीसी जातियों का समर्थन खो देने के बाद हाशिये पर चली गयी थी, वह एकाएक मजबूती से खड़ी हो गयी। कारण सिर्फ यह कि मौर्य, कुशवाहा, लोध, कुर्मी, राजभर, जैसी जातियों के बड़े नेता भाजपा छोड़कर अखिलेश यादव के साथ आ खड़े हुए।

कुछ ब्राह्मण और दलित नेता भी भाजपा से निकले। पार्टी छोड़ने वाले इन नेताओं ने भाजपा सरकार पर ओबीसी हितों की उपेक्षा करने का आरोप जड़ा। इसी समय मुख्यमंत्री योगी का बयान आया कि 'लड़ाई अस्सी प्रतिशत बनाम बीस प्रतिशत है।' इसने इन आरोपों को हवा ही दी।

अप्रत्याशित रूप से भाजपा ओबीसी विरोधी और सिर्फ हिंदुत्व को समर्पित पार्टी दिखायी देने लगी। राज्य से लेकर केंद्र तक के बड़े नेताओं के कान खड़े हुए। भाजपा के प्रमुख ओबीसी चेहरे केशव प्रसाद मौर्य को फिर से सामने किया जा रहा है। हिंदुत्व के आक्रामक चेहरे योगी को तनिक मंद होने को कहा गया और सपा के ओबीसी के हमले की काट के लिए उसके घर में तोड़फोड़ के प्रयास किये गये।

मुलायम की 'छोटी बहू' जो पहले से भाजपा में आना चाहती थीं, अचानक महत्वपूर्ण हो गयीं। उन्हें और मुलायम के साढ़ू भाई को तत्काल भाजपा की सदस्यता दिलायी गयी। कहा गया कि अखिलेश स्वयं अपने घर को नहीं संभाल पा रहे, ओबीसी का क्या भला करेंगे। किंतु, यह उस बड़े ओबीसी नुकसान की भरपाई नहीं थी।

भाजपा का ओबीसी-प्रेम थमा नहीं है, यह साबित करने के लिए ओबीसी प्रत्याशियों को वरीयता दी जाने लगी। अब तक घोषित भाजपा प्रत्याशियों की दोनों सूचियों में ओबीसी उम्मीदवारों की भरमार है। जिन ओबीसी उम्मीदवारों के टिकट कटने की आशंका थी, उनकी नाव भी इस बयार में पार हो गयी! पूरे घटनाक्रम में हुआ यह कि पिछड़ों-अति पिछड़ों का दबदबा एकाएक बढ़ गया। सभी दल, विशेष रूप से सपा और भाजपा, पिछड़ों की असल नुमाइंदगी की दावेदारी की प्रतिस्पर्धा करने लगे हैं। योगी जिसे अस्सी बनाम बीस (यानी हिंदू बनाम मुस्लिम) की लड़ाई कह रहे थे, वह पचासी बनाम पंद्रह (बहुजन बनाम अन्य) का संग्राम बन गया है।

मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू होने के इतने वर्षों के बाद अति पिछड़ी जातियों में भी सत्ता में अपना हिस्सा या अधिकार पाने की चेतना तेज हुई है। मंडल के तत्काल बाद सिर्फ कुछ प्रभुत्वशाली पिछड़ा वर्ग ने अधिकतम लाभ हासिल किये। अब यह ललक नीचे तक पहुंची है। इसी कारण अति पिछड़ी जातियों के कई नेताओं ने सपा और बसपा से अलग होकर अपने छोटे-छोटे दल बनाये हैं।

ये छोटे दल समय-समय पर बड़े दलों से गठबंधन करके सत्ता में भागीदारी मांगते हैं। भाजपा ने 2014 और 2017 के चुनावों में यूपी की अधिकाधिक सीटें जीतने के लिए इन्हीं छोटे दलों के साथ गठबंधन किया। गैर-यादव पिछड़ी जातियों और गैर-जाटव अनुसूचित जातियों को क्रमशः सपा और बसपा से अलग करके उसने अपने साथ लिया। प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं पिछड़ी जाति का होने को खूब प्रचारित किया था।

आज यूपी में पिछड़ी और दलित जातियों के ये छोटे-छोटे दल या नेता बहुत महत्वपूर्ण हो गये हैं। इनके जातीय वोट पूरी तरह इनके पीछे हैं। ये स्वयं जिताऊ उम्मीदवार तो होते ही हैं, कई अन्य सीटों पर अपने जातीय वोट दिलाने में सक्षम भी। इस बार अखिलेश यादव ने शुरू से ही इन छोटे दलों को साथ लेने की कोशिश की थी।

बीते कुछ सालों में मांगें न मानी जाने के कारण भाजपा से नाराज हुए कुछ ओबीसी दल फौरन सपा के साथ आ गये थे। आज कम से कम आधा दर्जन ऐसे दलों का सपा से गठबंधन है। भाजपा ने कुछ दलों को अभी भी साधे रखा है। इसी तरह मायावती से नाराज कुछ अति दलित जातियों की छोटी-छोटी पार्टियां भाजपा, सपा या अब नये उभरे दलित नेता चंद्र शेखर आजाद के साथ आ गये हैं। वैसे, मायावती के उम्मीदवारों में भी ओबीसी की संख्या काफी है।

भाजपा यूपी में हिंदुत्व के एजेंडे को तनिक पीछे करने या कम से कम उसी की बराबरी पर ओबीसी की राजनीति करने के लिए दवाब में आ गयी है। उसे लगता है कि सवर्ण हिंदू तो कहीं नहीं जायेगा, लेकिन अगर ओबीसी छिटक गया तो बड़ा नुकसान होगा। सपा ने भी अपने को अति पिछड़ा हितैषी दिखाने के लिए अपने मुस्लिम झुकाव को कुछ दबा दिया है। वह ओबीसी प्रेम के साथ ही हिंदू-विरोधी न दिखने की राह पर है। फिलहाल यूपी में ओबीसी सब पर हावी हैं।

क्या फंस गई अखिलेश की करहल सीट..?

अखिलेश यादव का मैनपुरी से नामांकन और चुनाव लड़ना काफी दिलचस्प होता जा रहा है। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ने जा रहे हैं। अखिलेश यादव ने सोमवार को मैनपुरी की करहल विधासभा सीट पर नामांकन कर दिया है। दूसरी तरफ बीजेपी ने अखिलेश यादव को बड़ा सरप्राइज दिया।

बीजेपी ने करहल में अखिलेश यादव के खिलाफ केंद्रीय मंत्री एसपी सिंह बघेल को उतार दिया है। उधर, कभी अखिलेश यादव का साथ देने वाली बसपा सुप्रीमो मायावती ने भी उनके खिलाफ अपना उम्मीदवार घोषित किया है। कांग्रेस , आम आदमी पार्टी से भी अखिलेश यादव को लगातार चुनौती मिल रही है। ऐसा लग रहा है कि यूपी में सभी राजनीतिक दल अखिलेश यादव का पहला विधानसभा चुनाव जीतना मुश्किल बनाने वाले हैं।

बीजेपी ने अखिलेश यादव के खिलाफ करहल विधानसभा सीट पर केंद्रीय मंत्री और आगरा से सांसद एसपी सिंह बघेल को मैदान में उतारा है। सोमवार को अचानक एसपी सिंह बघेल मैनपुरी कलेक्ट्रेट पहुंच गए और नामांकन किया एसपी सिंह बघेल का राजनीतिक सफर समाजवादी पार्टी से ही शुरू हुआ था, 1998 से 2009 तक सपा के टिकट पर जलेसर से सांसद थे। लेकिन इसके बाद वह 2009 में बसपा में शामिल हो गए। 2014 में बीजेपी में शामिल हो गए। 2017 में बीजेपी के टिकट पर टूंडला से विधायक चुने गए। उन्होंने फिर 2019 में पार्टी के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा और सांसद चुने गए। एसपी सिंह बघेल ने 2009 में फिरोजाबाद से अखिलेश यादव के खिलाफ पहले भी चुनाव लड़ चुके हैं। अभी वह केंद्र में कानून और न्याय मंत्री हैं।

बसपा सुप्रीमो मायावती ने अखिलेश यादव के खिलाफ करहल सीट से कुलदीप नारायण को उम्मीदवार बनाया है। कुलदीप नारायण पिछले 25 सालों से बसपा से जुड़े हैं। जो कि सात साल तक मैनपुरी के बसपा से जिला अध्यक्ष भी रह चुके हैं। कुलदीप 2007 में जिला पंचायत सदस्य भी बने थे। फिलहाल आगरा मंडल के कोऑर्डिनेटर हैं। इन्हें मायावती का विश्वसनीय माना जाता है।

कांग्रेस के उम्मीदवार को लेकर विरोध भी हुआ

कांग्रेस ने अखिलेश यादव के खिलाफ ज्ञानवती यादव को उम्मीदवार घोषित किया है। ज्ञानवती कांग्रेस की महिला विंग में प्रदेश महासचिव और उपाध्यक्ष के पद पर भी रह चुकी हैं। ज्ञानवती यादव करहल विधानसभा क्षेत्र की ही रहने वाली हैं। हाल में पार्टी के अंदर ही उनका अमेठी का होने की बात कहकर विरोध किया गया। आम आदमी पार्टी ने सपा के गढ़ करहल से रामबाबू सिंघानिया को उम्मीदवार बनाया है।

बजट से आसान होगी यूपी चुनाव में BJP की राह?

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद वित्त वर्ष 2022-23 का बजट पेश करते हुए किसानों के लिए कई बड़े ऐलान किए हैं। वित्त मंत्री की ओर से खेती और किसानों के लिए किए गए बड़े ऐलानों को यूपी चुनाव से भी जोड़कर देखा जा रहा है। केंद्रीय कृषि कानूनों को लेकर एक साल तक चले आंदोलन की वजह से किसानों की नाराजगी को दूर करने का प्रयास करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि अगले वित्त वर्ष में किसानों के खाते में 2.37 लाख करोड़ रुपए डीबीटी के माध्यम से दिए जाएंगे।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि गंगा नदी के किनारे जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाएगा। गंगा नदी के पांच किमी चौड़े कोरिडोर्स की कृषि भूमि पर पहले चरण में विशेष ध्यान दिया जाएगा। किसानों के समावेशी विकास को सरकार की प्राथमिकता बताते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि अगले वित्त वर्ष में 1000 लाख मीट्रिक टन धान की खरीद की जाएगी, जिससे 1 करोड़ से अधिक किसानों को फायदा होगा।

खेती-किसानी में टेक्नॉली के इस्तेमाल के लिए 'किसान ड्रोन' की घोषणा की गई है। इसके तहत फसल मूल्यांकन, भूमि रिकॉर्ड, कीटनाशकों के छिड़काव आदि के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया जाएगा। वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं और धान की खरीद के लिए 2.37 लाख करोड़ रुपए भुगतान करेगी। साल 2023 मोटा अनाज वर्ष घोषित किया गया है। तिलहन उत्पादन बढ़ाने और आयात पर निर्भरता कम करने के लिए योजना लाई जाएगी।

क्या कम होगी किसानों की नाराजगी?

किसानों को ध्यान में रखकर किए गए ऐलानों को यूपी चुनाव से जोड़कर भी देखा जा रहा है। माना जा रहा है कि केंद्र सरकार की ओर से उत्तराखंड, यूपी सहित पांच राज्यों में किसानों की नाराजगी दूर करने का प्रयास किया गया है। हालांकि, किसान बजट से कितना खुश हैं यह तो 10 मार्च को चुनावी नतीजे ही बताएंगे।

उप्र में इन सीटों पर उपचुनाव के आसार

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के बाद कुछ सीटों पर उपचुनाव के भी आसार बन रहे हैं। इसकी वजह है कि सांसद अखिलेश यादव, सांसद आजम खां विधानसभा चुनाव लड़ रहे हैं। कई विधान परिषद सदस्य भी भाजपा व सपा से मैदान में उतर चुके हैं। यह 'माननीय' चुनाव जीतते हैं तो वे दोनों में किसी एक सीट से इस्तीफा देंगे। ऐसे में इन रिक्त सीटों पर उपचुनाव होगा। सांसद व एमएलसी के साथ साथ विधानसभा सीट के लिए उतरे इन नेताओं के चुनाव पर सबकी नजर है।

विधान परिषद सदस्य के तौर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी मैदान में हैं जो गोरखपुर शहर की सीट से विधानसभा का चुनाव लड़े रहे हैं तो उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य भी सिराथु सीट से मैदान में हैं। इन दोनों का विधान परिषद में कार्यकाल छह जुलाई 2022 तक है। ऐसे में यह दोनों जीतने पर एमएलसी सीट से इस्तीफा देंगे लेकिन इन पर उपचुनाव शायद न हो क्योंकि कार्यकाल काफी कम वक्त का बचा है। सपा के एमएलसी संजय लाठर मथुरा की मांठ सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। वह सपा रालोद गठबंधन के प्रत्याशी हैं। इनका कार्यकाल इसी साल 26 मई को ही खत्म हो रहा है।

भाजपा प्रत्याशी के तौर पर ठाकुर जयवीर सिंह बरौली से चुनाव लड़ रहे हैं। उनका विधान परिषद में कार्यकाल 5 मई 2024 तक है। उनकी सीट रिक्त हुई तो यहां उपचुनाव कराया जाएगा। इसी तरह भाजपा के एमएलसी सलिल विशनोई चुनाव लड़ रहे हैं। उनका कार्यकाल 31 जनवरी 2027 तक है। वह कानपुर की सीसामऊ से भाजपा प्रत्याशी हैं। वर्ष 2017 के चुनाव के वक्त योगी आदित्यनाथ गोरखपुर से व केशव प्रसाद मौर्य फूलपुर से सांसद थे। जब योगी मुख्यमंत्री व मौर्य उपमुख्यमंत्री बने तो उनकी रिक्त सीट पर गोरखपुर व फूलपुर में लोकसभा उपचुनाव कराया गया था। पिछले विधानसभा चुनाव के बाद कई विधायकों के सांसद बन जाने के कारण उपचुनाव हुआ था।

अखिलेश यादव- सांसद आजमगढ़

समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव मैनपुरी की करहल विधानसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। विधानसभा के लिए यह उनका पहला चुनाव है जबकि वह आजमगढ़ से सांसद हैं। करहल से जीत की सूरत में उन्हें विधायक व सांसद पद में किसी एक सीट से इस्तीफा देना होगा। 10 मार्च के बाद चुनाव नतीजे आने के बाद ही वह इस पर निर्णय लेंगे। अगर वह लोकसभा सीट छोड़ते हैं तो उस पर उपचुनाव होगा। लोकसभा का आम चुनाव 2024 में होना है। सपा के विशम्भर प्रसाद निषाद राज्यसभा सांसद हैं और उनका कार्यकाल 4 जुलाई 2022 तक ही है। सपा ने उन्हें फतेहपुर की अयाहशाह सीट से मैदान में उतारा है।

एसपी बघेल-सांसद- केंद्रीय मंत्री

एसपी सिंह बघेल आगरा से भाजपा सांसद हैं और केंद्रीय मंत्री भी। अब वह करहल विधानसभा से चुनाव लड़ने जा रहे हैं। जहां से सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव भी मैदान में हैं। इस तरह करहल सीट से दो सांसद आमने-सामने आ गए हैं।

आजम खां- सांसद रामपुर

मो. आजम खां सपा के टिकट पर पिछले विधानसभा चुनाव में रामपुर सीट से चुने गए। वर्ष 2019 में वह रामपुर संसदीय सीट से चुनाव जीत कर सांसद बने। अब वह फिर विधानसभा चुनाव लड़ रहे हैं। आजम खां अभी जेल में ही हैं। उनके मामले भी पूरी तस्वीर दस मार्च के बाद ही साफ होगी।

अखिलेश यादव के पास इतने करोड़ की संपत्ति...

सपा प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने मैनपुरी की करहल सीट से सोमवार को नामांकन दाखिल कर दिया है। इस नामांकन में अखिलेश यादव ने अपनी, पत्नी डिंपल यादव और समेत बच्चों की चल अचल संपत्ति का ब्यौरा दिया है। हलफनामे के मुताबिक उनके पास करीब 40 करोड़ रुपये की संपत्ति है। अखिलेश यादव के पास महज 1.79 लाख और पत्नी डिंपल यादव के पास 3.32 लाख रुपये नकद हैं।

अखिलेश के नाम पर सात और डिंपल यादव के नाम पर 11 बैंक खाते हैं। उन्होंने अपनी कमाई का मुख्य जरिया कृषि और लोकहित, वेतन, किराया बताया है। पत्नी डिंपल यादव की आय का स्त्रोत पूर्व सांसद पेंशन, किराया और खेती है।

बैंक खातों में अखिलेश के पास 5.56 करोड़ और डिंपल यादव के खाते में 2.57 करोड़ रुपये जमा हैं। दोनों के पास मिलकर कुल मिलाकर 26.83 करोड़ रुपये की अचल संपत्ति है। बेटी अदिति यादव के पास भी 10.39 लाख रुपये की चल संपत्ति है।

पत्नी डिंपल से लिया है कर्ज

पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की सालाना आय 83.98 लाख और पत्नी डिंपल की आय 58.92 लाख है। इसके बाद भी अखिलेश यादव ने पत्नी डिंपल से 8.15 लाख रुपये का कर्ज लिया है। हालांकि अखिलेश ने पिता मुलायम सिंह यादव को 2.13 करोड़ का कर्ज दिया भी है। इसके अतिरिक्त अखिलेश यादव ने छह अन्य कंपनियों व लोगों को लाखों रुपये का उधार दिया है।

जाट की पसंद सपा लेकिन वेस्ट में सीटें ला रही बीजेपी...

योगी आदित्यनाथ अब भी नंबर वन पसंद...

सीएम योगी के गोरखपुर से लड़ने की घोषणा के बाद किया गया यह सर्वे बता रहा है कि उनके लड़ने से पूर्वांचल में बीजेपी का बड़ा फायदा हो रहा है। केवल पूर्वांचल ही नहीं पूरे यूपी में बीजेपी की सीटें बढ़ रही हैं। दिसंबर में किये गए ओपिनियन पोल की तुलना में अब बीजेपी को फायदा और सपा को नुकसान हो रहा है। सर्वे के अनुसार भाजपा को को 242-244 सीटें मिलती दिख रही हैं। सपा गठबंधन को 148-150 सीटें मिल सकती हैं। दिसंबर में हुए सर्वे में बीजेपी को 230 से 235 और सपा को 160-165 सीटें मिलती दिख रही थीं। यानी बीजेपी को पिछले महीने के मुकाबले करीब 12 सीटें ज्यादा मिल रही हैं। वहीं सपा की 12 सीटें कम हो गई हैं।

बसपा और कांग्रेस की सीटों में ज्यादा अंतर नहीं है। बीएसपी को पहले 3 से 7 सीटें मिल रही थीं जो अब 4-6 मिल रही हैं। इसी तरह कांग्रेस को पहले 3 से 5 सीटें मिल रही थीं और अब 3 से 7 मिलती दिख रही हैं। अन्य को पहले की तरह 1 से 3 सीटें मिल सकती हैं। वोट प्रतिशत की बात करें तो भाजपा को 42 और सपा को 37 प्रतिशत वोट मिल रहे हैं। बसपा को 13 और कांग्रेस के खाते में 4 प्रतिशत ही वोट आ रहे हैं।

मुख्यमंत्री की पसंद

मुख्यमंत्री के तौर पर योगी आदित्यनाथ अब भी नंबर वन पसंद बने हुए हैं। योगी को 38 प्रतिशत लोग सीएम देखना चाहते हैं। वहीं सपा प्रमुख अखिलेश यादव को 31 प्रतिशत लोगों ने सीएम देखने की इच्छा जाहिर की है। बसपा प्रमुख मायावती 13 और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी केवल 6 प्रतिशत लोगों की पसंद हैं।

जाट सपा गठबंधन के साथ

जातिवार वोटों की बात करें तो साठ प्रतिशत जाट वोट सपा गठबंधन को मिलने जा रहा है। 80 प्रतिशत मुस्लिम भी सपा के साथ हैं। ओवैसी को कोई फायदा होता नहीं दिख रहा है। पिछड़ों में यादवों को वोट सपा को मिल रहा है, जबकि गैर यादव वोट बीजेपी के साथ जा रहे हैं। ब्राह्मण मतदाता भी बीजेपी के साथ बना हुआ है।

जाट वोट सपा के पास लेकिन सीटें बीजेपी को मिल रही

सर्वे में जाट वोट सपा को भले मिल रहा हो लेकिन पश्चिमी यूपी में बीजेपी को ज्यादा सीटें मिलती दिख रही हैं। बीजेपी को 58 से 62 सीटें मिल सकती हैं। वहीं समाजवादी पार्टी और आरएलडी को 34 से 38 सीटें मिलती दिख रही हैं। बीएसपी को 0 से 2 और कांग्रेस और अन्य का खाता खुलता नहीं दिख रहा है।

अवध में बीजेपी को 111 में से 66 से 68 सीटें

ओपिनियन पोल के मुताबिक अवध की कुल 111 सीटों में से बीजेपी गठबंधन को 66 से 68 सीटें मिलती दिख रही हैं। वहीं सपा गठबंधन 39 से 41 सीटें जीत सकती है। इस इलाके में भी बसपा का प्रदर्शन ठीक नहीं है। बसपा और कांग्रेस को इस इलाके में 1 से 3 सीटें मिल सकती हैं।

रोहिलखंड में भी खिलेगा कमल

इस क्षेत्र में आने वाली 52 सीटों में से 22 से 24 सीटें भारतीय जनता पार्टी के खाते में जाती दिख रही है। वहीं समाजवादी पार्टी के खाते में 28 से 30 सीटें जा सकती हैं। दूसरे दलों का इस इलाके में खाता खुलता नहीं दिख रहा है।

बीजेपी को सबसे बड़ा फायदा

इंडिया टीवी के सर्वे रिपोर्ट में बुंदेलखंड इलाके में बीजेपी के सामने कोई दल टिकता नहीं दिख रहा। इस इलाके से बीजेपी के खाते में 16 से 18 सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया है। वहीं समाजवादी पार्टी के खाते में महज 1-3 सीटें जा सकती हैं। कांग्रेस और बीएसपी दोनों का ही खाता खुलता नहीं दिख रहा।

योगी के लड़ने का असर

योगी आदित्यनाथ के गोरखपुर से चुनाव लड़ने का फायदा क्या बीजेपी को पूर्वांचल में मिल रहा है। इंडिया टीवी के सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक बीजेपी और सपा के बीच कई सीटों पर कांटे का मुकाबला है। सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक पूर्वांचल में बीजेपी गठबंधन को 74 से लेकर 78 सीटें मिल सकती हैं। वहीं दूसरी ओर सपा गठबंधन को 40 से 44 सीटें और बीएसपी-कांग्रेस और अन्य को 1 से 3 सीटें मिलने का अनुमान है।

यूपी विधानसभा चुनाव को लेकर एक और ओपिनियन पोल सामने आया है। इंडिया टीवी-ग्राउंड जीरो रिसर्च टीम ने यह ओपिनियन पोल किया है। इसी टीम ने पिछले महीने यानी दिसंबर में भी सर्वे किया था। दिसंबर और जनवरी के सर्वे में अन्य ओपिनियन पोल के मुकाबले कुछ चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। 2017 के नतीजों से तुलना करें तो बीजेपी को नुकसान हो रहा है और सपा को बड़ा फायदा हो रहा है। लेकिन दिसंबर से तुलना करने पर स्थिति उलट जाती है।

देश भर में धूमधाम से मनाया

गया गणतंत्र दिवस का पर्व...

क्रिप्टोकरेंसी पर 30% टैक्स का एलान

लेकिन इससे वर्चुअल करेंसी वैध नहीं हो जाती

आम बजट 2022-23 में जिस बारे में एलान का सबसे ज्यादा इंतजार था, उस पर ही वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण बोलने से कतराती नजर आईं। उन्होंने पूरे बजट भाषण में क्रिप्टोकरेंसी शब्द का इस्तेमाल तक नहीं किया, लेकिन वर्चुअल करेंसी और डिजिटल असेट पर हुए एलान से उनका इशारा इसी ओर माना जा रहा है। वित्त मंत्री ने वर्चुअल करेंसी या डिजिटल से होने कमाई पर 30 फीसदी टैक्स लगाने का एलान किया, जिसके बाद क्रिप्टोकरेंसी के वैध होने की अटकलें काफी तेज हो गईं। हालांकि, विशेषज्ञ कहते हैं कि सरकार ने भले ही वर्चुअल करेंसी पर टैक्स लगा दिया है, लेकिन इसके लीगल होने के बारे में कुछ भी नहीं कहा है। ऐसे में भारत में अभी क्रिप्टोकरेंसी वैध नहीं हुई है।

वित्त मंत्री ने किया यह एलान

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में आभाषी मुद्रा या क्रिप्टोकरेंसी को लेकर बड़ा एलान किया है। उन्होंने घोषणा करते हुए कहा कि अब क्रिप्टोकरेंसी के लेन-देन को लेकर कर लगाने का फैसला किया गया है। इसके तहत क्रिप्टो से होने वाली आय पर 30 फीसदी का टैक्स देना होगा। वित्त मंत्री ने कहा कि वर्चुअल डिजिटल असेट्स के टैक्सेशन में बदलाव किया गया है। ऐसी किसी भी प्रॉपर्टी के ट्रांसफर पर 30 फीसदी टैक्स लगेगा। कोई छूट नहीं मिलेगी। वित्त मंत्री के इस एलान के बाद ये सवाल खड़ा होता है कि क्या देश में क्रिप्टो को अनुमति दे दी गई है।

क्रिप्टोकरेंसी बिल का इंतजार

गौरतलब है कि क्रिप्टोकरेंसी को देश में प्रबंधित करने के लिए सरकार पिछले काफी समय से कार्यरत है और इसे लेकर एक बिल का मसौदा भी तैयार किया जा चुका है। हालांकि इसे शीतकालीन सत्र में पेश नहीं किया जा सका। क्रिप्टो से आय पर टैक्स लगाते हुए वित्त मंत्री ने इसी साल देश की डिजिटल करेंसी लॉन्च किए जाने का भी एलान किया। उन्होंने कहा कि ब्लॉकचेन और अन्य टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करते हुए इसी साल आरबीआई डिजिटल रुपया जारी करेगी। इससे इकोनॉमी को बहुत अधिक बढ़ावा मिलेगा। एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में 10.5 करोड़ क्रिप्टो निवेशक हैं। बता दें कि भारत में काफी समय से क्रिप्टोकरेंसी बिल आने की अटकलें लग रही हैं।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ?

वजीर एक्स के सीईओ निश्चल शेट्टी कहते हैं कि भारत अब क्रिप्टोकरेंसी को वैध करने के रास्ते पर चल पड़ा है। सबसे बड़ी खबर यह है कि भारत में भी ब्लॉकचेन पर आधारित डिजिटल रुपया लॉन्च किया जाएगा। इससे क्रिप्टोकरेंसी को अपनाने में मदद मिलेगी और यह कदम भारत को इनोवेशन में काफी आगे ले जाएगा। यह रोचक बात है कि सरकार ने क्रिप्टोकरेंसी को असेट के रूप में स्वीकार कर लिया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने भाषण के दौरान वर्चुअल डिजिटल करेंसी के नाम से इसके बारे में एलान किया। इससे भारत में क्रिप्टो इकोसिस्टम की पहचान बनेगी। हमें उम्मीद है कि इस कदम से बैंकों के लिए भी अस्पष्टता की स्थिति खत्म होगी और वे क्रिप्टो इंडस्ट्री को वित्तीय सेवाएं मुहैया करा सकेंगे। क्रिप्टोकरेंसी पर टैक्स लगाने के कदम का स्वागत है। वहीं, लक्ष्मीकुमारन एंड श्रीधरन अटॉर्नीज के एल बद्री नारायणन का कहना है कि वर्चुअल डिजिटल असेट में एनएफटी और क्रिप्टोकरेंसी आती हैं, जिनके ट्रांसफर पर 30 फीसदी टैक्स का एलान किया गया है। अधिग्रहण की लागत को छोड़कर किसी भी तरह की कटौती नहीं की गई है। सरकार के इस कदम से क्रिप्टो करेंसी में निवेश करने वालों की चिंताएं कम हुई हैं।

ऐसे समझें पूरा गणित

मान लीजिए कि आपने एक हजार रुपये किसी वर्चुअल डिजिटल करेंसी पर लगाए हैं और उसकी कीमत 1500 रुपये हो गई है तो आपको 500 रुपये पर 30 फीसदी टैक्स देना है। ब्लॉकचेन स्टार्टअप वरदान के सीईओ अंकुर गर्ग और कंपनी फ्लूपर के सीईओ अंशुल शर्मा कहते हैं कि सरकार के एलान के बाद सवाल उठ रहा है कि क्या क्रिप्टोकरेंसी वैध हो गई है? इसका जवाब है- अभी नहीं। टैक्स तो अवैध आर्थिक गतिविधियों पर भी देना होता है। उदाहरण के लिए अगर बेहिसाब संपत्ति के मामले में छापे की कार्रवाई होती है तो उस दौरान जब्त हुए पैसे पर टैक्स वसूलने का अधिकार सरकार को होता है। अभी सरकार क्रिप्टोकरेंसी पर विचार-विमर्श के दौर में है।

कोरोनावायरस महामारी के बीच लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए एक बड़ा एलान

टेली- मेंटल हेल्थ कार्यक्रम

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को वित्त वर्ष 2022-23 का केंद्रीय बजट पेश किया। इसमें वित्त मंत्री ने कोरोनावायरस महामारी के बीच लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए एक बड़ा एलान किया। सीतारमण ने अपने बजट भाषण में राष्ट्रीय टेली-मेंटल हेल्थ कार्यक्रम शुरू करने की बात कही। हालिया समय में ऐसी कई स्टडीज सामने आ चुकी हैं, जिनमें दावा किया गया है कि कोरोनावायरस महामारी के चलते लोगों की मानसिक सेहत पर भी असर पड़ने लगा है। खासकर उन लोगों पर जो कोरोनावायरस संक्रमण से उबरे हैं।

महामारी के दौरान बड़ी संख्या में लोगों ने डिप्रेशन और तनाव में रहने की शिकायत की है। इसके अलावा कोरोना से उबर चुके कई मरीजों को लॉन्ग कोविड से प्रभावित भी पाया गया। इस स्थिति में मरीजों ने दिमागी तौर पर धुंधलेपन का शिकार होने की शिकायत की। यानी कोरोना से उबरने के बाद उन्हें इसके लक्षण दिखते रहे और उनकी सोचने-समझने की क्षमता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

इसके अलावा लॉकडाउन और प्रतिबंधों के बीच रहने की वजह से भी लोगों ने मानसिक तौर पर परेशान होने की शिकायत की। कुछ अन्य लोगों ने भी कोरोना महामारी के दौरान मनोवैज्ञानिक समस्याओं से जूझने की बात कही है।

अगर कोरोनावायरस महामारी के इस कठिन समय को अलग भी कर दें तो भारत को मानसिक स्वास्थ्य

पर ध्यान न देने की बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, 2012 से 2030 के बीच लोगों में पैदा हो रही मानसिक समस्याओं की वजह से भारत को 77 लाख करोड़ रुपये का आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है।

भारत में महामारी के आने से पहले भी करीब 5 करोड़ बच्चे मानसिक स्वास्थ्य की परेशानियों से जूझ रहे थे। इनमें से 80-90 फीसदी ने समस्या खत्म करने के लिए कोई मदद नहीं ली। यानी भारत की अगली पीढ़ी का एक बड़ा हिस्सा मानसिक समस्याओं के इलाज के बिना ही रहने को मजबूर है।

केंद्र सरकार ने दिसंबर 2021 में राज्यसभा में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर किए गए एक सवाल पर कहा था भारत में करीब 10.6 फीसदी वयस्क किसी न किसी तरह के मनोवैज्ञानिक विकार से जूझ रहे थे।

वित्त मंत्री ने एलान किया है कि आईआईआईटी बंगलुरु विशेष टेली-कंसल्टेशन सेवाओं के संचालन के लिए तकनीकी सपोर्ट मुहैया कराएगा। उन्होंने कहा कि महामारी ने सभी उम्र के लोगों के लिए मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएं पैदा की हैं। ऐसे में मानसिक स्वास्थ्य पर परामर्श और देखभाल सेवाओं तक बेहतर पहुंच मुहैया कराने के लिए राष्ट्रीय टेली मेंटल हेल्थ कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है।

कैसे लोगों की समस्याओं को किया जाएगा दूर?

सेंटर फॉर साइकोलॉजिकल सपोर्ट ने महामारी के दौरान एक राष्ट्रीय टोल फ्री नंबर जारी किया था। इसका मकसद महामारी और लॉकडाउन के दौरान मानसिक और मनोवैज्ञानिक दिक्कतों से जूझ रहे लोगों के लिए परामर्श मुहैया कराना होता था। अब इसी सेवा को नेशनल टेली-मेंटल हेल्थ प्रोग्राम के तहत आगे बढ़ाया जा रहा है। इसके तहत सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण मुफ्त मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित की जाएगी। इसके अलावा ये प्रोग्राम देश में मानसिक स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच में एक बड़े अंतर को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आखिर आम जनता 'कन्फ्यूज्ड' क्यों है?

अक्सर ये कहा जाता है कि दूर की सोचो, कुछ बड़ा सोचो, आज की छोड़ो, कल की सोचो। मोदी सरकार के बजट हमेशा दूर की सोच लिए होते हैं। अगले 25 साल में देश कैसे बदल जाएगा, कैसे टेक्नॉलॉजी और डिजिटल तकनीक से आम जीवन में बदलाव आ जाएगा, कैसे ज्यादा से ज्यादा टैक्स कलेक्शन का रिकॉर्ड बने और कैसे एक सुंदर सलोने राष्ट्र को सोने की चिड़िया के वास्तविक स्वरूप में लाया जा सके। आंख बंद करके सोचिए, तो बेशक सबकुछ बेहद सुंदर, आधुनिक और मैंड्रेक के मायाजाल जैसा लगता है। और सचमुच मैंड्रेक के सम्मोहन कला जैसा ही सबकुछ चलता दिख भी रहा है।

------------ • ------------

प्रयागराज में एक जमावड़े के बीच चुनावी बहस छिड़ी हुई थी। जगह थी के.पी. कॉलेज के सामने का एक कम्युनिटी सेंटर। बजट तो अपने तय समय पर निर्मला सीतारमण ने पेश कर दिया और अर्थशास्त्र के जानकार उसके मायने भी निकालने में लगे हैं, लेकिन बजट से तीन दिन पहले इस चुनावी बहस के दौरान एक साइकिल वाला रुका और जबरन कूद पड़ा – इ सरकार तो भइया खाने कमाने को तरसाय दिहिन। कड़ू तेल, चावल, आटा, दाल सभे में आग लगाए दिहिन। हम गरीबन का तो कोई सुनइ वाला नहीं।

उधर बहस जारी थी। पेट्रोल, डीजल से लेकर रसोई गैस तक, नोटबंदी से लेकर जीएसटी तक। 70 साल के 'विनाश' से लेकर 7 साल के 'विकास' तक। भीड़ बढ़ रही थी और हिन्दू और मंदिर से लेकर राष्ट्रवाद की बातें जोर जोर से कहने वालों के स्वर धीमे पड़ते जा रहे थे। वो बार बार यही कह रहे थे, तुमलोगों से बात करना बेकार है, आंखों पर चश्मा चढ़ा है, देश को बचाना है तो मोदी-योगी को ही लाना होगा। बाकी किसी में दम नहीं है। विरोधी गुट ललकार रहा था कि भइया गांव गिराम में जाकर देखो, तुम तो बहुत पैसा वाले हो, तुमको महंगाई कहां लगेगी, पेट्रोल 200 भी पहुंच जाए तो तुमको कोई फर्क थोड़े पड़ेगा। तुम तो भइया अपनी राजनीति चमकाओ, लेकिन जहां न नौकरी, न कामकाज हो, महंगाई की मार हो वहां मंदिर में जाकर क्या करें। इ सब तो भइया खाली टीवी पर दिखाए लिए होत है।

चुनावी वक्त में ऐसी बहसें आम हैं। जहां कुछ लोग जमा हो रहे हैं और अपनी बातें खुलकर बोलने की कोशिश कर रहे हैं। खासकर यूपी में तो यही हाल है। वोट कहां जाएगा पता नहीं, लेकिन महंगाई, बेरोज़गारी और खेती किसानी का संकट एक बड़ा मुद्दा तो है ही।

भाजपा का प्रचारतंत्र पूरी मुस्तैदी से गरीबों को मुफ्त राशन, किसानों के खाते में 6 हजार रूपए से लेकर सड़क, एक्सप्रेस वे, अयोध्या, काशी, मथुरा, विंध्याचल आदि गिनवा रहा है। सोशल मीडिया पर पूरा नेटवर्क सक्रिय है। लेकिन ज़मीनी हकीकत कुछ और कहती है।

बजट के बारे में बात करते हुए ज्यादातर लोग यही कहते हैं कि काहे का बजट, कैसा बजट। यहां तो अपना ही बजट बिगड़ा हुआ है। ये करोड़ों, अरबों के आंकड़े सुन सुनकर क्या करें। ये बजट वजट तो टीवी वालों के लिए है या उनके लिए जो बैठकर आंकड़ों के

परमुटेशन-कॉम्बिनेशन का खेल खेलते हैं। ये तो सरकार की एक रुटीन प्रक्रिया है।

बड़ी-बड़ी घोषणाएं कीजिए, हर मंत्रालय या योजना के लिए बजट बांटिए, लेकिन आम लोगों को क्या मिलता है ये कभी पता नहीं चलता। जीवन जैसे था, दिनोंदिन उससे भी बुरा ही हो रहा है। अब तो कभी भी किसी भी चीज का दाम बढ़ जाता है, किसी भी समय कोई भी घोषणा हो जाती है। ऐसे में भला बजट फरवरी में आए, मार्च में आए क्या फर्क पड़ता है। ये तो बस औपचारिकता है।

पहले तो ये पता होता था कि अप्रैल से कुछ चीजें बदलेंगी, कुछ सस्ता या महंगा होगा, टैक्स स्लैब में कुछ फायदा होगा, लेकिन अब काहे का अप्रैल, काहे का मई। हर दिन एक समान। देश में या तो कहीं न कहीं चुनाव होंगे, या कोई न कोई उल्टी सीधी घोषणाएं हो जाएंगी।

कोविड के इस टाइम में तो हेल्थ सेक्टर बल्ले-बल्ले हो रहा है। दो साल से सारे सेक्टर का हाल खराब है, लेकिन हेल्थ और आईटी सेक्टर में बूम बरकरार है। सारा देश डिजिटल हो रहा है। लेकिन गांव वाले अब भी डिजिटल इंडिया के सपने को साकार नहीं देख पा रहे या कनेक्टिविटी की समस्या से त्रस्त हैं।

निर्मला सीतारमण के ताजा बजट में इस कनेक्टिविटी के बारे में खास ध्यान दिया गया है। तरह-तरह के ऐप विकसित हो रहे हैं और ई-शिक्षा, ई-स्वास्थ्य, ई-बैंकिंग के साथ-साथ देश के पहले डिजिटल यूनिवर्सिटी खोलने की भी योजना है। यानी कोरोना काल के दो साल की 'उपलब्धियों' में ये सारे कदम डिजिटल इंडिया की तरफ ले जाने वाले लगते हैं। लेकिन सवाल वहीं आकर खड़ा हो जाता है कि कैसे देश की आम जनता, गरीब जनता, गांव के लोग इस पूरी प्रक्रिया से जुड़ पाएंगे और कैसे इसका फायदा लोगों तक पहुंचेगा। दरअसल अब बजट पहले जैसे नहीं होते। बहुत उलझे उलझे से होते हैं।

आप इसे अच्छा कहें, खराब कहें या साधारण कहें, लेकिन ये असमंजस बड़े-बड़े अर्थशास्त्रियों के दिमाग में भी होता है कि आखिर इस बजट के बारे में कुछ शब्दों में कहा क्या जाए। विपक्ष का काम आलोचना करना है, वह तो करेगा ही, लेकिन आम लोगों के लिए भी अब बजट के मायने पहले वाले नहीं रहे। वह हमेशा कन्फ्यूज्ड रहता है कि क्या कहे। सस्ता-महंगा का वर्गीकरण भी अब पहले की तरह नहीं होता और अब सस्ता-महंगा क्या, कब और कितना होगा, ये आम जनता तो छोड़िए, व्यापारी वर्ग भी ठीक से समझ नहीं पाता।

जाहिर है बजट की ये पारंपरिक प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और अब इस औपचारिकता के बाद चुनावी वाकयुद्ध का सिलसिला एकबार फिर तेज हो जाएगा। आरोप-प्रत्यारोप, अनर्गल भाषा, धर्म, राष्ट्रवाद, आतंकवाद, दंगाई और जाने क्या क्या। खेल जारी है। आनंद लीजिए।

करोड़ों में कमाते हैं 'शार्क टैंक इंडिया' के जज...

'शार्क टैंक इंडिया' वर्तमान में भारतीय टेलीविजन पर सबसे लोकप्रिय शो में से एक है। इस व्यावसायिक रियलिटी शो में उद्यमियों को अपने व्यवसाय मॉडल को निवेशकों (शार्क) के पैनल के सामने पेश करना होता है और उन्हें इस बात के लिए राजी करने होता है कि वह उनके मॉडल पर पैसे लगाएं।

शो में जजों के पैनल में अशनीर ग्रोवर, नमिता थापर, अनुपम मित्तल, विनीता सिंह, ग़ज़ल अलगी, पीयूष बंसल और अमन गुप्ता शामिल हैं। शुरुआत में ही इनमें से कुछ चेहरे जनता के बीच बेहद लोकप्रिय हो गए हैं। ऐसे में हम आपको इन शार्क की कुल संपत्ति के बारे में बताने जा रहे हैं।

अशनीर ग्रोवर

एक रिपोर्ट के अनुसार, 'भारत पे' के प्रबंध निदेशक और सह-संस्थापक अशनीर ग्रोवर की कुल संपत्ति तकरीबन 700 करोड़ रुपये है। वह शो के सबसे अमीर शार्क में से एक हैं।

अमन गुप्ता

2015 में स्थापित लोकप्रिय टेक ब्रांड 'बोट' के सह-संस्थापक और सीएमओ, अमन गुप्ता की अनुमानित संपत्ति 700 करोड़ रुपये की है। रिपोर्ट्स के मुताबिक अमन गुप्ता के पास बमर, शिपरॉकेट और अन्वेषन जैसी कंपनियों में भी शेयर हैं।

नमिता थापरी

नमिता थापर एक बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी 'एमक्योर फार्मास्युटिकल्स' की कार्यकारी निदेशक हैं। कथित तौर पर, उनकी कुल संपत्ति 600 करोड़ रुपये है। वह इनक्रेडिबल वेंचर्स लिमिटेड की संस्थापक भी हैं।

पीयूष बंसल

आईवियर के लिए एक ई-कॉमर्स पोर्टल 'लेंसकार्ट' के सीईओ की कुल संपत्ति 600 करोड़ रुपये बताई जा रही है। 36 वर्षीय पीयूष बंसल ने इनफेडो और डेली ऑब्जेक्ट्स जैसी कंपनियों में भी निवेश किया है।

अनुपम मित्तल

लोकप्रिय मैचमेकिंग साइट 'शादी डॉट कॉम' और ऑनलाइन रियल एस्टेट पोर्टल 'मकान डॉट कॉम' चलाने वाली मूल कंपनी 'पीपल ग्रुप' के संस्थापक और सीईओ अनुपम मित्तल की कथित तौर पर कुल संपत्ति 185 करोड़ रुपये है। रिपोर्ट्स के मुताबिक अमन ने ओएलए में भी निवेश किया है।

ग़ज़ल अलघ

33 वर्षीय ग़ज़ल अलघ सभी शार्कों में सबसे छोटी हैं और 'मामाअर्थ' की सह-संस्थापक और प्रमुख हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अलघ की कुल संपत्ति 148 करोड़ रुपये है।

विनीता सिंह

'शुगर कॉस्मेटिक्स' की सीईओ और सह-संस्थापक, विनीता सिंह की अनुमानित कुल संपत्ति लगभग 300 करोड़ रुपये है। 37 वर्षीय विनीता 'फैब बैग' की सह-संस्थापक भी हैं।

सीईओ जयति सिंह ने स्मार्ट सिटी से संबंधित कार्यो का जायजा लिया

स्मार्ट सी ई ओ जयति सिंह ने ग्वालियर मैं हो रहे स्मार्ट सिटी से संबंधित कार्यो का जायजा लिया और स्वयं ने हर कार्य की गुणवत्ता की जांच की इसी क्रम में आज निर्माणाधीन स्मार्ट रोड का निरीक्षण करने के दौरान निर्माण स्थल पर प्लेसमेकिंग कार्य की प्रगति का मुआयना करने के साथ उपस्थित अधिकारियों को जनता की सुविधा दृष्टिगत यातायात सुगम बनाए रखने के निर्देश दिये।

हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका के कार्यालय पर पहुँचे विधायक श्री राजे व डॉ.श्रीमन नारायण मिश्रा

डबरा हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के कार्यालय पर पहुँच कर डबरा विधायक सुरेश राजें एवं डॉ श्रीमन मिश्रा जी संरक्षक हमारा हमारा अभिमान और मध्यप्रदेश के गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा जी के बड़े भाई ने सभी नागरिकों एवं न्यूज परिवार को दी गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं। इस मौके पर तिरंगे को लगाकर मनोज चतुर्वेदी और पूरी टीम ने दी शुभकामनाएं

आज की जरूरत, मल्टी पर्पज हेल्थ वर्कर

• बालकिशन यादव

मल्टी पर्पज हेल्थ वर्कर (एमपीएचडब्लू) का काम आपातकालीन या आपदा की हालत में स्वास्थ्य मसलों से निपटना होता है। भारत में मल्टी पर्पज हेल्थ वर्कर का कांसेप्ट 1974 में आया। उप स्वास्थ्य केंद्रों के स्तर पर निवारक और प्रोत्साहक स्वास्थ्य देखभाल या सेवाओं का वितरण करना ही इनका अहम मकसद होता है। ये सीनियर डॉक्टरों के असिस्टेंट के तौर पर काम किया करते थे। उस समय ये लोग मलेरिया, टीबी, कुष्ठ रोग, जलजनित जैसी बीमारियों या महामारी के समय पर लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराते थे। अब इनके कार्य का दायरा बढ़ा है। इसलिए करिअर के ऑप्शन के तौर पर इसे ज्यादा लिया जा रहा है। इनके काम करने का तरीका बहुत अलग होता है। सामान्यतः मल्टी पर्पज हेल्थ वर्कर उन क्षेत्रों में जाते हैं जहां अस्पताल या डॉक्टर उपलब्ध नहीं होते। ये लोग स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करते हैं। महामारी में नियंत्रण करना, लोगों को भोजन सामग्री पहुंचाना, किसी भी तरह की आपदा में घायलों का इलाज करना एवं आपात स्थिति में अस्पताल पहुंचाना इनका काम होता है।

कोर्स एवं योग्यता

डीपीएमआई की प्रिंसिपल अरुणा सिंह के मुताबिक, डिप्लोमा इन मल्टीपर्पज हेल्थ वर्कर के लिए अभ्यर्थी का किसी भी संकाय या किसी भी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 12वीं पास होना जरूरी है। कोर्स के दौरान उन्हें सीख

दी जाती है कि आपातकालीन स्थिति या किसी भी तरह की आपदा की स्थिति में किस तरह समुचित मेडिकल सुविधाओं का प्रबंध करना है, उनकी तीमारदारी और सेवा कैसे करनी है। वे आपदा या महामारी फैलने की स्थिति में कैसे और किस हद तक तत्पर रहें। उन्हें महामारी या आपदा के दौरान काम करने, भोजन सामग्री पहुंचाने, जख्मी होने पर उपचार करने की ट्रेनिंग दी जाती है। यूं तो इस कोर्स में डिप्लोमा लेने के बाद हर राज्य में सरकारी व गैर सरकारी विभाग में नौकरी के कई नए अवसर खुल जाएंगे। लेकिन हरियाणा, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में इन दिनों मल्टी पर्पज हेल्थ वर्कर की खासी डिमांड है। इनमें लड़के व लड़कियों दोनों के लिए सामान अवसर उपलब्ध हैं। डिप्लोमा इन मल्टी पर्पज हेल्थ वर्कर कोर्स करने के बाद स्वास्थ्य विभाग, परिवार नियोजन मंत्रालय, पर्यावरण विभाग के अलावा सरकारी व गैर सरकारी एनजीओ में तो नौकरी के ढेरों विकल्प हैं ही, प्राइवेट आर्गेनाइजेशंस में भी नौकरी के विकल्प मौजूद हैं। इन्हें प्रत्येक महीने हर एक परिवार में जाकर उनका चेकअप करना, महामारी फैलने पर नियंत्रण करना, पर्यावरण स्वच्छता पर ध्यान रखना, इमरजेंसी की हालत में किसी भी दुर्घटना की प्राथमिक चिकित्सा करना होता है। डिप्लोमा इन मल्टीपर्पज हेल्थ वर्कर का कोर्स करने के बाद आप सुपरवाइजर व डेवलपमेंट ऑफिसर के तौर पर काम कर सकते हैं। इन्हें शुरुआती वेतन के तौर पर 10 से 15 हजार रुपये तक मिल सकता है लेकिन तजुर्बे के आधार पर वेतन में इजाफा होता चला जाता है।

महत्वपूर्ण संस्थान

- दिल्ली पैरामेडिकल एंड मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट, नयी दिल्ली
- महर्षि मार्कंडेश्वर यूनिवर्सिटी, अम्बाला, हरियाणा
- इंडियन मेडिकल इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग, जालंधर, पंजाब
- इंस्टीट्यूट ऑफ एलाइड हेल्थ साइंसेज, कोलकाता

राधेश्याम गुप्ता डायरेक्टर

दी स्टेट सिटीजन साख सहकारी संस्था मर्यादित डबरा की ओर से गणतंत्र दिवस की...

पंकज जैन डायरेक्टर

बहुत बहुत शुभकामनाएं

समस्त देशवासियों को
गणतंत्र दिवस की
बहुत बहुत
शुभकामनाएं

मा. नरोत्तम मिश्रा, गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

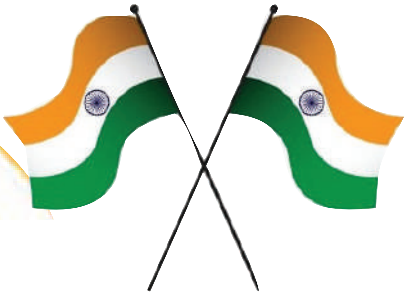

एडवोकेट अनिल शुक्ला, शासकीय अधिवक्ता, ग्वालियर हाईकोर्ट

समस्त देशवासियों को
गणतंत्र दिवस की
बहुत बहुत
शुभकामनाएं

शिव दयाल धाकड़ तहसीलदार, बहोड़ा पुर, ग्वालियर

समस्त देशवासियों को
गणतंत्र दिवस की
बहुत बहुत
शुभकामनाएं

दीपक शुक्ला तहसीलदार, डबरा, ग्वालियर

एयरटेल में एक अरब डॉलर तक निवेश करेगा गूगल

इस निवेश में गूगल स्वर भारती एयरटेल में INR 734 के प्रति शेयर की कीमत पर $700 मिलियन का इक्विटी निवेश शामिल है। इसमें $300 मिलियन तक की राशि को कमर्शियल एग्रीमेंट्स को लागू करने के लिए किया जाएगा। इसमें एयरटेल के प्रोडक्ट्स और सर्विसेज को बढ़ाने में निवेश शामिल होगा। साथ ही, इसमें भारत के डिजिटल इकोसिस्टम में पहुंच बढ़ाने और डिजिटल उपयोग को तेज करने के उद्देश्य से किए जाने वाले इनोवेशन प्रोग्राम्स भी शामिल हैं। साथ ही, विभिन्न सर्विसेज और टूल्स को भी विकसित किया जाएगा।

भारती एयरटेल के चेयरमैन सुनील भारती मित्तल ने कहा, "एयरटेल और गूगल अभिनव उत्पादों के माध्यम से भारत के डिजिटल लाभांश को बढ़ाने के लिए समान दृष्टिकोण साझा करते हैं। हमारे भविष्य के लिए तैयार नेटवर्क, डिजिटल प्लेटफॉर्म, डिलीवरी और डिजिटल पेमेंट सिस्टम के साथ, हम भारत के डिजिटल इकोसिस्टम को व्यापक रूप से बढ़ाने लिए गूगल के साथ मिलकर काम करने की आशा करते हैं।"

एयरटेल और गूगल, दोनों संगठन डिजिटल समाधान बनाने के लिए संयुक्त रूप से व्यापक क्षेत्रों में निवेश और सहयोग करने पर सहमत हुए हैं जो विशिष्ट रूप से भारत की आवश्यकताओं को पूरा करेगा। इस कमर्शियल एग्रीमेंट के एक हिस्से के रूप में, एयरटेल और गूगल साथ मिलकर गूगल-एयरटेल की बेहतरीन सर्विसेज और ऑफर्स के लिए काम करेंगे, जिसमें उपभोक्ताओं को अभिनव सामर्थ्य कार्यक्रमों के माध्यम से एंड्रॉयड-सक्षम टूल्स की एक सीरीज उपलब्ध कराना भी शामिल है। साथ ही, दोनों कंपनियां विभिन्न डिवाइस निर्माताओं के साथ साझेदारी में, प्राइस पॉइंट्स सीरीज में एक स्मार्टफोन उपभोक्ताओं की बाधाओं को कम करने के लिए और उपलब्ध अवसरों को भी पहचानने का काम जारी रखेंगी। दोनों कंपनियां इस डिजिटल परिवर्तन यात्रा में तेजी लाने के लिए भारत में क्लाउड इकोसिस्टम को आकार देने और विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित करेंगी। एयरटेल अपने

उद्यम कनेक्टिविटी की पेशकश के साथ दस लाख से अधिक छोटे और मध्यम व्यवसायों को सेवा प्रदान करता है, और यह साझेदारी उन्हें डिजिटलाइजेशन अपनाने में तेजी लाने में मदद करेगी।

साझेदारी के बड़े रणनीतिक लक्ष्यों के तहत, दोनों कंपनियां अत्याधुनिक कार्यान्वयन के साथ, 5G और अन्य मानकों के लिए भारत-विशिष्ट नेटवर्क डोमेन उपयोग के मामलों का संभावित रूप से समाधान करेंगी। एयरटेल पहले से ही गूगल के 5G-रेडी इवॉल्व्ड पैकेट कोर और सॉफ्टवेयर डिफाइंड नेटवर्क प्लेटफॉर्म का उपयोग कर रहा है, और अपने ग्राहकों को बेहतर नेटवर्क अनुभव प्रदान करने के लिए गूगल के नेटवर्क वर्चुअलाइजेशन समाधानों की उपलब्धता को बढ़ाने की योजना बना रहा है।

गूगल और अल्फाबेट के सीईओ सुंदर पिचाई ने कहा, "एयरटेल भारत के डिजिटल भविष्य को आकार देने में अग्रणी है, और हमें कनेक्टिविटी के विस्तार और अधिक भारतीयों के लिए इंटरनेट तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए साझा दृष्टिकोण पर साझेदारी करने पर गर्व है।" उन्होंने आगे कहा, "एयरटेल में हमारा वाणिज्यिक और इक्विटी निवेश स्मार्टफोन तक पहुंच बढ़ाने, नए व्यापार मॉडल का समर्थन करने के लिए कनेक्टिविटी बढ़ाने और कंपनियों को उनके डिजिटल परिवर्तन में मदद करने के लिए हमारे गूगल डिजिटलीकरण फंड के प्रयासों की निरंतरता का विस्तार है।"

भारत के डिजिटल इकोसिस्टम के विकास में तेजी लाने के लिए और भविष्य को ध्यान में रखते हुए, एयरटेल और गूगल ने लंबे समय के लिए एक समझौता किया है। इस साझेदारी के हिस्से के रूप में गूगल ने अपने 'गूगल फॉर इंडिया डिजिटलाइजेशन फंड' से एक बिलियन डॉलर तक का निवेश एयरटेल में करने का इरादा किया है। इन निवेश में इक्विटी निवेश के साथ-साथ संभावित कमर्शियल एग्रीमेंट्स के लिए फंड शामिल हैं। इस फंड का उपयोग अगले पांच वर्षों में देश के डिजिटलाइजेशन के लिए आवश्यक क्षेत्रों की पहचान कर पारस्परिक रूप से सहमति से किया जाएगा।

------------ • ------------

वतन की नींव मजबूत रखने की आस्था...

• मोनिका शर्मा

आस्था, निष्ठा या भरोसे का भाव सिर्फ धार्मिक-आध्यात्मिक जीवन से ही नहीं, राष्ट्रीय भाव-चाव से भी जुड़ा है। देश से जुड़े होने के इस पहलू पर आस्था का भाव जवाबदेही लाता है। मन से जुड़े हर जज्बात और हालात को बेहतर बनाता है। अपने वतन की मिट्टी से जुड़ी निष्ठा के मायने असल में यही हैं। नागरिकों का यही भरोसा देश की नींव सुदृढ़ करता है। उनकी वैचारिक पृष्ठभूमि और व्यवहार यह तय करते हैं कि उस देश का भविष्य कैसा होगा। फिर बात चाहे युवा पीढ़ी के जोश और जुनून की हो, बुजुर्गों के सधे संयत व्यवहार की या बच्चों की आशा भरी सोच और विश्वास की। देश के नागरिक ही देश की शान और जान होते हैं। परिवेश को स्वच्छ रखने से लेकर मानवीय व्यवहार और संस्कार की शालीनता बनाये रखने तक। अधिकतर समस्याओं का हल देश के नागरिकों के विचार और व्यवहार पर ही निर्भर है। अपने वतन से जुड़ाव की आस्था से जुड़ा है।

सहयोग का भाव

हम ईश्वर से शिकायत नहीं करते, संबल मागते हैं। ऐसे ही अपने देश में मौजूद समस्याओं को लेकर नकारात्मक और शिकायती बर्ताव रखने के बजाय उनसे जूझने का बल पाने की सोच जरूरी है। देश में जो भी परिस्थितियां हों, परिवार के सदस्य की तरह खुद अपनी भूमिका को पूरी निष्ठा के साथ निभाने और सहयोग भरी सोच के साथ विकास में भागीदार बनने की दरकार होती है। शिकायतों और आलोचनाओं की बात करने से कुछ नहीं बदल सकता। इसीलिए सकारात्मक विचारों से हम सब जिम्मेदार नागरिक बनने और कर्तव्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहने की सोचें, तो देश की काया पलट सकती है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि हमारा देश उठेगा, ऊपर उठेगा और इसी जनता के बीच में से ऊपर उठेगा।

शब्दों का संस्कार

संवाद का भी एक संस्कार होता है। अभिव्यक्ति की आजादी के बावजूद अपने आंगन में उलझनें पैदा करने वाला बर्ताव उचित नहीं होता। न आम परिवार के लिए, न ही राष्ट्र के लिए। यह सच है कि अभिव्यक्ति की आजादी हमारे अधिकारों में समाहित है, पर समझना जरूरी है कि अधिकार मिले हैं, तो कर्तव्यों की जिम्मेदारी भी हमारे ही हिस्से आएगी। ऐसे में जवाबदेही का यह भाव अपने देश के प्रति आस्था का ही रूप है। यह दायित्वबोध स्वतंत्र होकर भी हमें स्वच्छंद नहीं होने देता। ध्यान रहे कि कई सामाजिक और धार्मिक उन्माद ऐसी स्वच्छंदता के चलते ही फैलते हैं। ऐसे में संतुलित आत्ममंथन हर नागरिक का नैतिक उत्तरदायित्व है। विचारों का आदान-प्रदान करते समय नकारात्मकता और कटुता से न बचा जाए तो द्वेष ही फैलता है। तर्कसंगत और मर्यादित विचार हर हाल में देश की बेहतरी के लिए होते हैं।

धरोहर से जुड़ाव

देश की गरिमामयी पहचान को कायम रखने वाली धरोहर से जुड़ाव रखना भी अपने आंगन के बीते कल से जुड़े रहना ही है। यह लगाव हमारे मूल्यों से जुड़ी आस्था को बल देता है। भारत देश एक गर्वित करने वाली विरासत रखता है, जिसे दुनियाभर में सराहा जाता है। देश का गौरव बढ़ाने वाले शहीदों, स्मारकों, राष्ट्रीय धरोहरों और राष्ट्रीय चिन्हों के प्रति सम्मान हमें देश के साथ गहराई से जोड़ता है। यूं भी अपनी मातृभूमि, राष्ट्रीय प्रतीक और संस्कृति-सभ्यता का सम्मान किसी भी देश के नागरिकों का धर्म भी है और कर्तव्य भी। इसीलिए अपनी सांस्कृतिक विरासत का मान करना, उस पर गर्व महसूस करना जरूरी है। ध्यान रहे कि अपनी जड़ों से कटकर खड़े रहना और पहचान को कायम रखना नामुमकिन होता है। धरोहर सहेजने का कर्तव्य हमें देश की गरिमा और स्वाभिमान से जोड़े रखता है। आम नागरिक का यही जुड़ाव देश की उन्नति को आधार देता है। अपने वतन की पहचान को कायम रखता है। अपने देश के प्रति अडिग आस्था रखना जज्बात और जवाबदेही से जुड़ा सबसे सुंदर भाव है।

मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

म. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मध्यप्रदेश

पीछोर नगर परिषद

की ओर से समस्त पीछोर नगर वासियों को

गणतंत्र दिवस की हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएं

ब्रज मोहन आर्य
प्रशासक

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
डी. एम. ग्वालियर

पीयूष श्रीवास्तव
सीएमओ नगर परिषद पिछौर

नगर पालिका डबरा के नागरिकों से अपील करती है...

1. स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता का ध्यान रखे साथ ही कचड़ा नगर परिषद की कचड़ा लेने आने बाली गाड़ी में ही डाले।
2. डेंगू बीमारी डेंगू मच्छरों के काटने से होती है, इसलिए डेंगू बिमारी से बचने के लिए, आस-पास गदंगी ना फैलाये, और ना आस-पास गंदे पानी को एकत्रित होने दे, क्योकि मच्छरों पनपने का ऐसे स्थान बहुत उचित होते है।
3. कोरोना से बचने के लिए वैक्सीन अवश्य लगवाए जिन्होंने प्रथम डोज लगवा लिया है वो दूसरा डोज अवश्य लगवाये, जिनको प्रथम डोज नहीं लगा है वो अपने आधार कार्ड को लेकर अस्पताल और वैक्सीनेशन शिविर में जाकर रजिस्ट्रेशन कराए और तुरंत वैक्सीन लगवाये, जिससे आप भी सुरक्षित रहे साथ में मातापिता और परिवार को सुरक्षित रखे।
4. पिछोर नगर परिषद हमेशा आपकी सेवा में तत्यपर्य है आप भी नगर परिषद का सहयोग करें, जिससे पीछोर नगर परिषद का विकास हो सके।
5. पेड़ पौधों को अवश्य लगाए।
6. करो, नलों के बिल का भुगतान अवस्य करें।

आकाशगंगाओं में डुबकी...

• मुकुल व्यास

ब्रह्मांड में सबसे पहले तारों की रोशनी कब हुई? सबसे पहले आकाशगंगाएं कहां बनीं? ऐसे अनगिनत अनसुलझे सवालों का जवाब खोजने के लिए जेम्स वेब टेलीस्कोप कई वर्षों के लंबे इंतजार के बाद अंततः गत 25 दिसंबर को अंतरिक्ष में भेज दिया गया। जेम्स वेब टेलीस्कोप आधुनिक इंजीनियरिंग का उत्कृष्ट नमूना है। इसका विकास नासा, यूरोपियन एजेंसी और कैनेडियन स्पेस एजेंसी ने मिलकर किया है। इस प्रोजेक्ट पर काम 1996 में शुरू हुआ था। इसे पहले 2005 में अंतरिक्ष में स्थापित किया जाना था लेकिन प्रक्षेपण की तारीख आगे खिसकती रही। इस दौरान टेलीस्कोप के डिजाइन में सुधार होते रहे। वर्ष 2016 में टेलीस्कोप के निर्माण का कार्य पूरा हुआ। इसके पश्चात इसके विस्तृत परीक्षण का दौर शुरू हुआ। 2018 में परीक्षण के दौरान टेलीस्कोप की शील्ड फट जाने के बाद नासा ने इसका प्रक्षेपण स्थगित कर दिया। मार्च 2020 में कोविड महामारी के कारण टेलीस्कोप के एकीकरण और परीक्षण के काम को स्थगित करना पड़ा। टेलीस्कोप की टीम ने यान की रवानगी से पहले हर उपकरण को अंतरिक्ष की विषम परिस्थितियों में आजमा कर देखा था। अमेरिकी खगोल वैज्ञानिक एडविन हबल ने सबसे पहले यह सिद्ध किया था कि हमारी मिल्की वे के आगे दिखने वाले अनेक ऑब्जेक्ट दरअसल दूसरी आकाशगंगाओं की मौजूदगी को दर्शाते हैं। तब से खगोल वैज्ञानिक यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि सबसे पुरानी आकाशगंगाएं कितनी पुरानी हैं, उनका गठन कैसे हुआ और बाद में उनमें क्या बदलाव हुए? नासा के हबल टेलीस्कोप ने ब्रह्मांड के बारे में बहुत सी नयी जानकारियां हमें दी हैं लेकिन उसके बहुत से रहस्य अनसुलझे हैं, बहुत से सवालों के उत्तर खोजे जाने बाकी हैं।

खगोल वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि नए जेम्स वेब टेलीस्कोप से ब्रह्मांड में ज्यादा गहराई तक झांका जा सकेगा। ब्रह्मांड में दूर तक झांकने के लिए इस टेलीस्कोप में बहुत बड़ा दर्पण लगाया गया है। यह दर्पण करीब 6 मीटर चौड़ा है। इस पर एक शेड लगा हुआ है जिसका आकार टेनिस कोर्ट के बराबर है। यह शेड सूरज के विकिरण को अवरुद्ध करेगा। इसके अलावा टेलीस्कोप में चार पृथक कैमरे और सेंसर सिस्टम हैं। यह टेलीस्कोप एक सेटेलाइट डिश की तरह काम करता है। किसी तारे या आकाशगंगा से आने वाली रोशनी टेलीस्कोप के मुख में प्रवेश करेगी और प्राथमिक दर्पण से टकराकर चार सेंसरों तक जाएगी। एक सेंसर प्रकाश को विभिन्न रंगों में विभक्त करेगा और प्रत्येक रंग की ताकत को नापेगा। एक अन्य सेंसर प्रकाश की वेवलेंथ को नापेगा।

इस टेलीस्कोप का एक प्रमुख लक्ष्य ब्रह्मांड के छोर के निकट स्थित आकाशगंगाओं का अध्ययन करना है। इन आकाशगंगाओं के प्रकाश को ब्रह्मांड को पार करने और पृथ्वी पर पहुंचने में अरबों वर्ष लगते हैं। टेलीस्कोप से जुड़े एक वैज्ञानिक के अनुसार, टेलीस्कोप द्वारा ली जाने वाली तस्वीरों में उन प्राथमिक आकाशगंगाओं को देखा जा सकेगा जिनका गठन बिग बैंग घटना के 30 करोड़ वर्ष बाद हुआ था। जेम्स वेब टेलीस्कोप से वैज्ञानिक यह भी पता लगाने की कोशिश करेंगे कि हमारी मिल्की वे में तारों का गठन किस प्रकार होता है। साथ ही इससे सौरमंडल के बाहर दूसरे ग्रहों के वायुमंडलों का भी अध्ययन किया जा सकेगा। बिग बैंग थ्योरी के मुताबिक, ब्रह्मांडीय महाविस्फोट से ब्रह्मांड की शुरुआत हुई थी। बिग बैंग के बाद बने तारों के पहले जमघट को खोजना बहुत ही जटिल काम है क्योंकि ये प्राथमिक आकाशगंगाए बहुत दूर हैं और मंद दिखाई देती हैं। वेब टेलीस्कोप के दर्पण में 16 भाग हैं और वह हबल टेलीस्कोप के दर्पण के मुकाबले 6 गुणा ज्यादा प्रकाश एकत्र कर सकता है। वेब टेलीस्कोप को पर्यवेक्षण के दौरान एक बड़ी जटिल समस्या का सामना करना पड़ेगा। चूंकि ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है, वे आकाशगंगाएं भी पृथ्वी से दूर जा रही हैं जिनका वैज्ञानिकों द्वारा अध्ययन किया जाएगा। दूर जाने वाली आकाशगंगाओं के प्रकाश की वेवलेंथ दृश्य प्रकाश से इन्फ्रारेड प्रकाश में तब्दील हो जाएगी। इन्फ्रारेड प्रकाश विद्युत-चुंबकीय रेडिएशन है जिसकी वेवलेंथ दृश्य प्रकाश से बड़ी होती है।

इन्फ्रारेड प्रकाश को करेगा डिटेक्ट

वेब टेलीस्कोप इन्फ्रारेड प्रकाश को डिटेक्ट कर सकता है लेकिन मंद आकाशगंगाओं को इन्फ्रारेड प्रकाश में देखने के लिए टेलीस्कोप का अत्यंत ठंडा होना जरूरी है अन्यथा वह अपना ही इन्फ्रारेड रेडिएशन देखने लगेगा। इसी वजह से टेलीस्कोप के कैमरों और सेंसरों को माइनस 224 सेल्सियस तापमान पर रखने के लिए उसमें एक विशेष हीट शील्ड बनाई गई है।

... और मिलने लगेगी जानकारी

इस समय टेलीस्कोप के विभिन्न उपकरणों की चेकिंग और उनमें तारतम्य बैठाने का काम चल रहा है। इस काम में छह महीने लग जाएंगे। इसके बाद ही टेलीस्कोप से डेटा मिलने का क्रम शुरू हो पाएगा। अपनी 29 दिन की यात्रा के बाद यह टेलीस्कोप अंतरिक्ष में 'लग्रांज पॉइंट 2' या एल 2 नामक स्थान पर पहुंचेगा। यह स्थान पृथ्वी से 15 लाख किलोमीटर दूर है। लग्रांज पॉइंट अंतरिक्ष में उस स्थान को कहते हैं जहां भेजा गया ऑब्जेक्ट एक ही स्थिति में रहता है। एल 2 पॉइंट खगोल विज्ञान के लिए एक आदर्श स्थान है क्योंकि वहां भेजे गए अंतरिक्ष यान के साथ पृथ्वी से संपर्क करना आसान होता है। यहां से दूरबीन से अंतरिक्ष की ज्यादा साफ तस्वीर दिखती है। नासा का कहना है कि जेम्स वेब टेलीस्कोप को अपने गंतव्य पर पहुंचाने के लिए तीन बार दिशा-सुधार के उपाय करने पड़ेंगे। टेलीस्कोप के सफल प्रक्षेपण और दिशा-सुधार के दो उपायों के बाद टेलीस्कोप की टीम ने अनुमान लगाया है कि इस अंतरिक्ष वेधशाला में दस साल तक वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए समुचित ईंधन रहेगा।

बहुत बड़ा है जेम्स वेब

जेम्स वेब टेलीस्कोप को दस साल तक संचालित करने के उद्देश्य से निर्मित किया गया है। इंजीनियरों का कहना है कि यह टेलीस्कोप दस साल के बाद भी काम करेगा। यह अंतरिक्ष टेलीस्कोप 21वीं सदी के सबसे बड़े वैज्ञानिक प्रोजेक्टों में गिना जाता है। इसे विकसित करने में लगभग तीन दशक लगे हैं और करीब दस अरब डॉलर का खर्च आया है। यह हबल टेलीस्कोप की तुलना में बहुत बड़ा है जो 1990 से पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। वेब टेलीस्कोप की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह उस अदृश्य इन्फ्रारेड प्रकाश को डिटेक्ट कर सकता है जिसे हबल के जरिए नहीं देखा जा सकता। ब्रह्मांड के दूरवर्ती ऑब्जेक्ट्स की चमक को इन्फ्रारेड प्रकाश में ही देखा जा सकता है।

डबरा कृषि उपज मंडी

डबरा की ओर से 73 वें गणतंत्र दिवय की समस्त डबरा वासियों और समस्त किसानों को

बहुत-बहुत शुभकामनाएं

प्रदीप शर्मा
डबरा कृषि मंडी प्रशासक
एवं डबरा एस.डी.एम

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
ग्वालियर कलेक्टर

एस.एस तोमर
सचिव कृषि मंडी डबरा

देवेन्द श्रीवास्तव
कार्यालय निरीक्षक
डबरा कृषि मंडी

कृषि उपज मंडी डबरा के नागरिकों से अपील करती है...

1. मण्डी प्रागंण में प्रवेश करते समय कृषि पत की जानकारी प्रवेश द्वार पर आवश्यक रूप से दर्ज करावें एवं प्रवेश पर्ची प्राप्त करें।
2. किसान भाई अपनी फसल का क्रय-विक्रय मण्डी प्रागंण में ही करें।
3. अपनी कृषि उपज साफ करके ही विक्रय करने हेतु लावें जिससे कृषि उपज का उचित मूल्य प्राप्त हो सके।
4. नीलामी के समय किसान भाई अपनी ट्राली पर उपस्थित रहें।
5. कृषि उपज का विक्रय करते समय बिचौलियों से सावधान रहें।
6. कृषि उपज का विक्रय होने पर कर्मचारी से अनुबंध पर्ची अवश्य प्राप्त करें एवं तौल कराने के उपरान्त व्यापारी से भुगतान प्राप्त करें।

सौजन्य : कृषि उपज मंडी डबरा

बीजेपी का 78 सीटों पर खास मिशन विजय

भारतीय जनता पार्टी ने 2017 में 312 सीट जीती थी, अभी भी उनके मन में 78 ऐसी सीटें हारने की कसक है। जहां सपा या दूसरी पार्टियों का असर ज्यादा है। खासकर अल्पसंख्यक समुदाय जहां निर्णायक स्थिति में है, इसलिए बीजेपी ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह समेत कई बड़े चेहरों को इन सीटों पर कमल खिलाने की जिम्मेदारी सौंपी है। संगठन के लोग भी इन सीटों पर रात्रि प्रवास कर रहे हैं। घर-घर संपर्क कर रहे हैं।

प्रत्येक बूथ पर मतदाताओं की संख्या बढ़ाने की कोशिश की जा चुकी है। इन सीटों पर सदस्यता अभियान पर भी खास जोर दिया था। हालांकि फिर भी इन सीटों पर बीजेपी के कमल खिलाने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। रिकॉर्ड के मुताबिक इन सीटों में वेस्ट यूपी के सहारनपुर, कैराना, नगीना, संभल, मेरठ शहर पर सपा और धौलाना पर बसपा जीती थी।

इन सीटों पर भी नजर

मुजफ्फरनगर जिले के मीरापुर सीट पर पिछली बार कड़ा मुकाबला हुआ था। बीजेपी के अवतार सिंह भड़ाना सपा से 193 वोटों से ही जीत सकी थी। मथुरा जिले की मांट सीट पर कड़ा मुकाबला हुआ था। बसपा के श्यामसुंदर जीते थे। रालोद योगेश चौधरी हार गए थे, लेकिन जीत का अंतर सिर्फ 432 वोटों का था। सहारनपुर की रामपुर मनिहारान सीट पर भी बीजपी के देवेंद्र कुमार नीम ने बसपा के रविंद्र कुमार मोलू को सिर्फ 595 वोटों से हराया था।

बसपा का इन सीटों पर फोकस

बहुजन समाज पार्टी इस बार 204 सीट पर खास ध्यान दे रही है। खासकर 2017 के विधानसभा चुनाव में दूसरे नंबर पर रही 118 सीटें और 86 रिजर्व सीट पर फोकस है। बसपा ने रणनीति के तहत 2017 के विधानसभा चुनाव में बसपा जिन सीटों पर नंबर दो पर रही वहां पर जातीय, क्षेत्रीय, समीकरणों के आधार पर उम्मीदवार उतारे हैं। इन उम्मीदवारों को जिताने के लिए मंडलिया, जिला, सेक्टर प्रभारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। 2017 में बसपा जिन सीटों पर दो नंबर पर रही उनमें सहारनपुर, देवबंद, रामपुर मनिहारान, थाना भवन, चांदपुर, चमराआ, अमरोहा, हसनपुर, मेरठ कैंट, मेरठ दक्षिण, बागपत, लोनी, मुरादनगर, गाजियाबाद, मोदीनगर, गढ़मुक्तेश्वर, दादरी, जेवर, स्याना, सिकंदराबाद, बुलंदशहर, अनूपशहर, शिकारपुर, खुर्जा, खेर, गोवर्धन, बरौली, इगलास, हाथरस, सिकंदराराव, एत्मादपुर, आगरा कैंट, आगरा दक्षिण, आगरा उत्तर, आगरा ग्रामीण, फतेहपुर सीकरी, खैरागढ़, बाह, टूंडला, सहसवान, बिल्सी, दातागंज, बहेड़ी आदि शामिल है।

कांग्रेस चाहे हाथ की पकड़ मजबूत

उत्तर प्रदेश में चुनावी दंगल में कमजोर आंकी जा रही कांग्रेस वैसे तो हर विधानसभा क्षेत्र पर अपने कैंडिडेट उतारने की तैयारी में है, लेकिन उसकी कोशिश है कि

वह इस बार अपना जनाधार बढ़ाए। उसका फोकस 59 विधानसभा क्षेत्र पर है। उसके लिए खास रणनीति बनाई है। दरअसल 2012 के चुनाव में कांग्रेस पहले या दूसरे नंबर पर जिन सीटों पर रही थी, उनमें 28 कांग्रेस ने जीती और 31 स्थानों पर दूसरे स्थान पर रही थी।
कई क्षेत्र में तो उनके प्रत्याशी बहुत कम अंतर से हारे थे। इस परिणाम के आधार पर कांग्रेस ने इन सीटों को बहुत पहले ही काम शुरू कर दिया है। अनुभवी कार्यकर्ताओं को मैदान में उतरकर ट्रेनिंग कैंप लगाए हैं। जैसे वेस्ट यूपी की सहारनपुर में दो एमएलए जिताकर सहारनपुर नगर सीट पर कांग्रेस मुख्य लड़ाई में थी रामपुर मनिहारान में भी टक्कर में रही। हालांकि दोनों जगह बीएसपी दूसरे नंबर पर थी, लेकिन कांग्रेस कड़े मुकाबले में रही थी। जेवर और दूसरी कई सीटों पर भी कांग्रेस दूसरे स्थान पर रही थी।

23 सीटों पर खास नजर

समाजवादी पार्टी भी इस चुनाव में अपने कांटे की टक्कर वाली सीटों पर और ध्यान दे रही है सपा का मानना है कि अगर वह अपनी दो नंबर पर 2017 में रहे सीटों पर फतह हासिल कर लेती है तो सरकार बनाने में आसानी होगी इसी के साथ 2017 में जी टी 48 में से 23 सीट का मंत्र से सपा जीत पाई थी सभा को चिंता है कि इन सीटों पर के उलट फेर ना हो जाए इसलिए सभा का पूरा जोर इन सीटों को बचाने का है इनमें वेस्ट यूपी की सहारनपुर नगर नजीबाबाद नगीना मैनपुरी कन्नौज आदि है।

गुन्नौर विधानसभा सीट

कभी मुलायम सिंह ने रिकॉर्ड बनाया था, अब परिवार ने बनाई दूरी

गंगा किनारे बसा गुन्नौर कई मायनों में अपनी खास पहचान रखता है। कभी सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव ने इस सीट पर सबसे ज्यादा वोट का रिकॉर्ड बनाया था लेकिन धीरे-धीरे यह परिवार इस सीट से दूर हो गया। इस बार भी अखिलेश-शिवपाल के यहां से उतरने की चर्चा सिर्फ चर्चा बनकर ही रह गई। 2004 के उप चुनाव में गुन्नौर की जनता ने यहां से सपा नेता मुलायम सिंह यादव के नाम सबसे ज्यादा वोट से जीत का रिकॉर्ड दर्ज कराया तो 2017 के पासा पलटते हुए विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी को जिताकर विधानसभा में भेज दिया। इस बार गुन्नौर में मुलायम परिवार से पहले शिवपाल और फिर खुद अखिलेश के मैदान में उतरने की चर्चाएं तैरती रहीं। इलाके की जनता भी इस सीट की अहमियत फिर से बढ़ने का इंतजार करती रह गई लेकिन सीट न ही शिवपाल के खाते में आई और न ही अखिलेश ने इस पर दांव खेला। बदले हुए हालात में भाजपा फिर से इस सीट पर अपनी जीत दोहराने के लिए दम लगा रही है तो सपा अपना किला वापस लेने जद्दोजहद में है। मतदाताओं की चुप्पी दोनों ही दलों का तनाव बढ़ा रही है।

इसलिए खास है यह सीट

गुन्नौर विधानसभा सीट को सपा का मजबूत गढ़ माना जाता रहा है। सवा दो लाख से अधिक यादव मतदाताओं वाली इस सीट पर 2004 के उप चुनाव और 2007 के चुनाव में सपा नेता मुलायम सिंह यादव चुनाव मैदान में उतरे थे। उस समय इस सीट का असर बदायूं, मुरादाबाद व अमरोहा सहित आसपास जनपदों की सीटों पर भी पड़ा था। 2004 के उप चुनाव में एक लाख 83 हजार 899 वोट के अंतर से गुन्नौर में मुलायम सिंह यादव ने चुनाव जीता था। यह जीत रिकार्ड अंतर से मिली थी। 1998 के लोकसभा चुनाव में मुलायम सिंह यादव को इस सीट से डेढ़ लाख से ज्यादा वोटों से जीत मिली।

ये है हवा का रुख

गुन्नौर से सपा ने फिर से पूर्व विधायक रामखिलाड़ी यादव को उतारा है। इससे सपा का एक खेमा नाराज बताया जा रहा है। उधर, शिवपाल के चुनाव लड़ने की आस लगाए प्रसपा के लोग भी सीट खाते में न आने से निराश हैं। उधर, भाजपा विधायक अजित कुमार उर्फ राजू यादव को लेकर भी जनता में कई तरह के सुर हैं। ऐसे में उनके लिए भी सीट को बचाए रखना चुनौतीपूर्ण माना जा रहा है।

जैसा आपका भाव वैसी ही आत्मा और कर्मफल...

• अशोक 'प्रवृद्ध'

चार पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष मनुष्य जीवन के सशक्त स्तम्भ अथवा आदर्श माने गये हैं। इसी तरह मानव शरीर में चित्त, मन, बुद्धि और अहंकार को अंतःकरण चतुष्ट्य कहा जाता है। मानव शरीर इन्हीं चारों के निर्देशन की तारतम्यता से चलता है। हमारी आत्मा का निवास अथवा घर हमारा चित्त है। चित्त की पवित्रता का होना नितांत आवश्यक है, क्योंकि कर्म की आत्मा उसका भाव होता है। कर्म क्रियाशील शरीर है, भाव उसकी आत्मा है। मनुष्य हाथ चलाता है, यह कर्म है। यह कर्म शुभ अथवा अशुभ इसमें क्रोध अथवा प्रेम का भाव होने पर ही हो सकता है। आत्मा सर्वमय है, अर्थात जिसके साथ जुड़ जाती है, ठीक वैसी ही हो जाती है। पाप के साथ जुड़ जाने पर पापात्मा और पुण्य से जुड़ जाने पर पुण्यात्मा। वेद में इसे ही इदंमय और अदोमय भी कहा गया है। इदंमय अर्थात पृथ्वीलोक, इहलोक, अर्थात इस जन्म से संबद्ध है और अदोमय अर्थात आदित्य लोक, परजन्म और परलोक।

कर्म का निष्पादन करने में हमारे चित्त की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। चित्त का संबंध मुख्य रूप से जीवात्मा के साथ है तथा गौण रूप से अहंकार, सूक्ष्मप्राण, मन, बुद्धि और सब इंद्रियों से भी है। चित्त का जीवात्मा के साथ संबंध अनादि काल से है अर्थात मोक्ष से पुनरावर्त्तन के पश्चात से ही चला आ रहा है। चित्त और आत्मा के मध्य अन्योन्याश्रित संबंध है। मृत्यु के पश्चात जिस प्रकार का चित्त होता है उसी प्रकार का चित्त प्राण के पास पहुंचता है। प्राण अपने तेज के साथ आत्मा के पास पहुंचता है। प्राण ही तेज चित्त और आत्मा पुण्यकर्मों के कारण पुण्यलोक में और पाप कर्मों के कारण पापलोक में उभयकर्मों के कारण मनुष्य लोक में पहुंच जाता है। मनुष्य को कर्म और चित्त के संस्कारों के प्रति सावधान रहना चाहिए। जीवनपर्यन्त किये हुए कर्मों के संस्कार हमारे चित्त में अंकित रहते हैं। जीव शरीर छोड़ते समय सविज्ञान हो जाता है, अर्थात जीवन का सारा कार्य व्यवहार उसके समक्ष आ जाता है यही विज्ञान उसके साथ-साथ जाता है। जिस प्रकार किसी भूखंड में लगे कई प्रकार के पौधे अपने सजातीय रसों को ही भूमि से खींचकर बढ़ते, फलते-फूलते हैं, विजातीय रसों को नहीं, ठीक उसी प्रकार व्यष्टि चित्त में पड़ा कोई प्रबल शुभ संस्कार अनुकूल वातावरण पाकर भोगोन्मुख होने पर समष्टि चित्त से सजातीय संस्कारों को खींचता है, जिनसे उसे विशेष ऊर्जा मिलती है। अति निर्धनता, विघ्न-बाधाओं के उपस्थित होने बावजूद ऐसे व्यक्ति कूड़े व कांटों के मध्य खिलते हुए गुलाब के समान सबके आकर्षण और प्रेरणा का केन्द्र बनते हैं। यह व्यक्ति के

व्यष्टि चित्त पर निर्भर करता है कि वह समष्टि चित्त से शुभ संस्कारों को खींचता है अथवा अशुभ संस्कारों को। कई बार हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति उत्तरोत्तर तरक्की के शिखर पर पहुंचता है। लोग कहते हैं, इसका कोई पूर्वजन्म का शुभ संस्कार उदय हो गया है अथवा कोई पूर्व जन्म का पुण्य सामने आ गया है, जिसका प्रतिफल इसे प्राप्त हो रहा है। ईश्वर की कृपा इस पर बरस रही है, दिव्य शक्तियां इसका साथ दे रही हैं, आदि। असल में कर्म में शुभता और चित्त की स्थिरता ही मनुष्य के कर्मफल में बहुत बड़ा कारक है।

संस्कारवान के स्वयं खुलते हैं द्वार

संस्कारवान व्यक्ति के लिए विकास के मार्ग स्वतः ही खुलते चले जाते हैं। उसे वैसे ही मित्र, बंधु-बांधव, साधन वातावरण और मार्गदर्शक गुरु मिलते चले जाते हैं जैसा उसका पूर्व जन्म का प्रबल संस्कार उसे बनाना चाहता है। लेकिन चित्त में कुसंस्कारों का प्राबल्य होने पर लाख विधि समझाने पर भी उसके हित की बात भी उसे समझ नहीं आती और वह किसी की बात नहीं सुनता। महाभारत में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा युद्ध के पूर्व दुर्योधन को लाख समझाये जाने पर भी दुर्योधन का उनकी बात न मानना और युद्धोन्मुख होना दुर्योधन के व्यष्टि चित्त से अपने पूर्व जन्म के कुसंस्कारों को खींच रहे होने के कारण ही है। मनुष्य को छोड़कर सृष्टि की सभी योनियां भोग योनियां हैं, जबकि मनुष्य योनि, कर्म योनि और भोग योनि दोनों है। हमें कर्मों का फल अगले जन्म में भी मिलता है। चित्त के मलिन होने पर ही आत्मा मलिन होती है। चित्त के संस्कार ही हमें पापलोक और पुण्यलोक गमन के अधिकारी बनाते हैं। इसलिए चित्त को पवित्र और संस्कारवान रखेंगे तो दोनों लोक में उद्धार होगा।

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण का स्वरूप

• विजय सिंगल

श्रीकृष्ण वो शिक्षक हैं जिन्होंने भगवद्गीता में जीवन के आधारभूत सिद्धांतों की शिक्षा दी है। उनके उपदेश सभी जीवों पर समान रूप से लागू होते हैं, इसलिए उन्हें जगद्गुरु अर्थात् सारे विश्व के शिक्षक के रूप में देखा जाता है। वे एक प्रकट भगवान हैं। यद्यपि वे अजन्में, अविनाशी तथा समस्त सृष्टि के स्वामी हैं; फिर भी वे स्वयं को अपनी ही प्रकृति में स्थापित करके, अपनी अंतर्निहित शक्ति (योगमाया) द्वारा प्रकट होते हैं (श्लोक संख्या 4.6)। अन्य प्राणियों के विपरीत, भगवान अपनी स्वयं की शक्ति और अपनी स्वतंत्र इच्छा से ही जन्म लेते हैं। मानव जाति के उत्थान के लिए भगवान पुनः पुनः जन्म लेते हैं। परमेश्वर द्वारा मानव देह ग्रहण करने से उनकी अखंडता या पूर्णता में वृद्धि या ह्रास जैसा कोई अंतर नहीं आता।

श्रीकृष्ण को विष्णु का नौवां अवतार कहा गया है। उनका जन्म मथुरा में देवकी और वासुदेव के यहां हुआ था। रात के अंधेरे में और कारागार के बंधन में जन्म लेना एक महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक संदेश देता है। मानव जाति के उद्धारक ने सर्वत्र व्याप्त संकट तथा घुटनभरी दासता के बीच जन्म लिया।

श्रीकृष्ण कहते हैं कि गीता में उन्होंने कोई नया उपदेश नहीं दिया है। उन्होंने सिर्फ वहीं दोहराया है जिसे वे पहले भी कह चुके हैं (श्लोक संख्या 4.1 से 4.3 तक)। इसलिए उनका संदेश किसी विशेष अवधि तक ही सीमित नहीं है। वह एक बीते युग से संबंधित व्यक्ति नहीं हैं; बल्कि अंतर में स्थित आत्मा हैं, व्यक्ति की आध्यात्मिक चेतना का प्रतिबिम्ब हैं। वह शाश्वत सत्य हैं। वह हर जगह और हर किसी में हैं। वे वर्तमान में भी हमसे बात करने के लिए उतने ही तत्पर हैं जितने कभी किसी और से रहे होंगे। इस प्रकार वे दोनों हैं- एक ऐतिहासिक पुरुष और ईश्वर का एक स्वरूप।

भौतिक साधनों की सीमाओं के कारण हमारे लिए श्रीकृष्ण को संपूर्ण रूप से परिभाषित करना बहुत कठिन है। लेकिन गीता ने अपने विभिन्न श्लोकों द्वारा इस कार्य को अपेक्षाकृत सरल बना दिया है। ग्यारहवें अध्याय में प्रदर्शित किया गया है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड सर्वोच्च भगवान में मौजूद है। लेकिन जो कुछ भी यशस्वी, सुंदर और ओजस्वी है; उसमें ईश्वर की उपस्थिति और अधिक प्रमुख हो जाती है।

श्रीकृष्ण विश्व के सृजनहार एवं संहारक हैं। श्लोक संख्या 9.8 में कहा गया है कि वे सम्पूर्ण प्राणियों के समूहों को बार-बार सृजित करते हैं। साथ में यह भी कहा गया है कि कोई भी चर या अचर (चलने वाला या नहीं चलने वाला) जीव उनके बिना नहीं रह सकता (श्लोक संख्या 10.39)। सम्पूर्ण जगत की क्रियाशीलता भी श्रीकृष्ण से ही है (श्लोक संख्या 10.8)। वो विभिन्न प्रजातियों के सभी जीवों के बीज देने वाले पिता हैं। इसके अलावा, श्लोक संख्या 7.6 में कहा गया है कि सभी प्राणी उनकी दो प्रकृतियों (भौतिक एवं चेतन) से ही उत्पन्न होते हैं। वे सम्पूर्ण जगत को उत्पन्न करने वाले और उसका विनाश करने वाले हैं।

आगे यह भी कहा गया है कि श्रीकृष्ण अपने एक अंश मात्र से सम्पूर्ण जगत में व्याप्त होकर इसको आधार देते हैं। वे ही सूर्यरूप में गर्मी प्रदान करते हैं। वे ही वर्षा को रोकते तथा भेजते हैं। वे अमरत्व हैं, और वे ही मृत्यु भी हैं। वे सत् और असत् दोनों हैं।

श्रीकृष्ण सम्पूर्ण जगत के आश्रयदाता, माता, पिता और पितामह हैं। वे जानने योग्य तत्व हैं और वो ही शुद्ध करने वाला अक्षर ओंकार हैं। ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद भी वे ही हैं (श्लोक संख्या 9.17)। वे ही सभी प्राणियों का प्राप्त करने योग्य परम लक्ष्य, उनके पालनकर्ता, उनके स्वामी, सब को देखने वाले साक्षी, सबका धाम, सबकी शरणस्थली; और सबके हितकारी हैं। सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय का कारण, सबका आधार, सबका निधान (प्रलयकाल में सभी प्राणी जिसमें लय होते हैं); और अविनाशी बीज भी वे ही हैं (श्लोक संख्या 9.18)।

श्रीकृष्ण के ही निर्देश के अनुसार प्रकृति सभी चीजों- गतिमान और गतिहीन दोनों- की रचना करती है; जिससे ब्रह्मांडीय चक्र घूमता रहता है (श्लोक संख्या 9.10)। आगे श्लोक संख्या 15.12 में बताया गया है कि सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि का तेज भी उन्हीं का तेज है। श्रीकृष्ण समस्त जीवों के हृदय में स्थित आत्मा हैं; तथा उन सभी का आदि, मध्य और अंत भी वे ही हैं (श्लोक संख्या 10.20)। समस्त प्राणियों के हृदय में स्थित हुआ ईश्वर अपनी माया के द्वारा उन सभी को इस जगत में ऐसे घुमाता रहता है, जैसे कि वे सब किसी यंत्र पर आरूढ़ हों। यह सम्पूर्ण जगत उनमें ऐसे ही गुंथा हुआ है जैसे माला के मोती धागे में पिरोये हुए होते हैं। कृष्ण सर्वज्ञ हैं। वे उन सभी प्राणियों को जानते हैं जो अतीत में थे, जो वर्तमान में स्थित हैं; तथा वह भी जो अभी आने वाले हैं (श्लोक संख्या 7.26)।

भगवान श्रीकृष्ण ने मानव जाति को आश्वासन दिया है कि चिन्ता का कोई कारण नहीं है। जो कोई भी उनकी शरण लेगा, वह सभी बुराइयों से मुक्त हो जाएगा।

नगर पालिका डबरा

के द्वारा देशवासियों को

गणतंत्र दिवस की हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएं

प्रदीप शर्मा
प्रशासक नगर पालिका
डबरा एवं एसडीएम

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
डी. एम. ग्वालियर

महेश पुरोहित
सीएनओ डबरा नगर पालिका

नगर पालिका डबरा के नागरिकों से अपील करती है...

1. जल ही जीवन है, जल का दुरूपयोग न करें।
2. भवन स्वामी अपने-अपने भवनों में रूफ वाटर हार्वेस्टिंग संरचना बनाकर जल स्तर बढाने में सहयोग प्रदान करें।
3. नगर पालिका की भूमि एवं शासकीय भूमि पर अतिक्रमण न करें।
4. नगर को सुन्दर एवं स्वच्छ बनाने में नगर पालिका का सहयोग करें, कचड़ा नियत स्थानों पर ही डाले जन्म-मृत्यु का पंजीयन समय पर करायें तथा निकाय से कम्प्यूटरीकृत जन्म/मृत्यु प्रमाण पत्र प्राप्त करें।
6. नगर पालिका से अनुमति प्राप्त कर ही भवन निर्माण करें।
7. नगर में वृक्षारोपण कर नगर को हरा-भरा बनाने में सहयोग प्रदान करें।
8. भवन स्वामी एवं ग्रहणियां अपने-अपने घर का कचरा, कचरा संग्रहण दूत के मांगने पर कचरा संग्राहक वाहन को दें।
9. मुख्यमंत्री आर्थिक कल्याण एवं स्वरोजगार योजनाओं का लाभ प्राप्त करें।
10. स्वच्छ भारत अभियान में अपना सहयोग प्रदान करें।
11. स्वच्छत भारत मिशन अंतर्गत अपने-अपने घरों में शौचालय अवश्य बनवायें।
12. अपने-अपने घरों में गीला कचरा के लिये हरा डस्टबिन एवं सूखा कचरा के लिये नीला डस्टबिन का उपयोग कर नगर को स्वच्छ रखने में अपना सहयोग प्रदान करें।

पीठ पीछे की दीवार... तारीफ मिलेंगी हजार

कहते हैं न कि दीवारें भी बोलती हैं। ऐसा ही तो होता है जब आप अपने घर की विभिन्न दीवारों को सजाते और संवारते हैं। कोई रंग की तारीफ करता है और कोई पैटर्न की। आप घर में घुसते हैं तो दीवारों को देख प्रसन्न हो जाते हैं। दीवारों से अगर सुकून मिलता है तो क्यों न दीवारों को सुंदर बनाया जाए। आजकल आपने देखा होगा कि लोग अपने घरों में बेहद सुंदर तरीके से दीवारों को सजाते हैं। अगर आप भी सोच रहे हैं कि घर की दीवारों को कैसे डिफरेंट लुक दिया जाए तो इसके लिए जरूरी है कि आप एक कमरे में चारों दीवारों में से एक को ज्यादा आकर्षित बनाएं और एक दीवार आपके बैक वाली भी होगी। जैसे सोफे के पीछे या बेड के पीछे। क्योंकि यही वह दीवार होती है जो आपके कमरे के लुक को एकदम चेंज कर देती है। आइए जानिए कैसे आप अपने घर की बैक वॉल को बना सकते हैं आकर्षक।

रंगों पर दें ध्यान

जरूरी है कि आप कलर्स का चयन कुछ इस तरह करें कि बैक वॉल का कलर आपके कमरे को डिफरेंट बना दे। या तो आप बैड वाला कलर ही वॉल पर करवा लें या फिर कोई ब्राइट कलर जो अट्रैक्शन का केंद्र बन जाए। बैक की वॉल कलर में यलो, ग्रीन, ओरेंज आदि ब्राइट कलर्स काफी चल रहे हैं या फिर ग्रे, ब्लू, ब्राउन आदि काफी बेहतरीन लुक देते हैं। इसके अलावा इस दीवार को अलग-अलग रंगों वाला भी बनाया जा सकता है। इनमें दो या तीन कलर का इस्तेमाल करके वॉल खूबसूरत बनायी जाती है। इसी तरह आप वॉल को क्रिएटिव बनाने के लिए बैक में बड़े साइज की पेंटिंग्स बनवाएं, या फिर फ्रेम में भी लगवा सकते हैं। पेंटिंग में आप जंगल का सीन या फिर किसी भगवान की पिक्चर या ग्रीनरी बनवा सकते हैं। इससे आपकी बैक की दीवार जैसे बोल उठेगी।

मेटल

यदि आपको थोड़ा क्लासी और विंटेज लुक चाहिए तो आप वॉल पर ग्रे कलर के साथ मेटल से वर्क करवाएं जिसमें बैक में पूरा मेटल से फ्रेम बनाया जाता है। और उसी के अंदर आप पेंटिंग्स या फोटोज को टांग सकते हैं। साथ ही जो भी पेंटिंग्स और फोटो आप टांगें उसे भी मेटल के फ्रेम से फ्रेमिंग करवा लें। फिर आपकी बैक वॉल बेहद क्लासी नजर आएगी। इसके साथ ही लाइट पर भी ध्यान जरूरी है। बैक वॉल पर कुछ स्टाइलिश और फैंसी लाइट्स लगवाएं। इन सबके अलावा आप बैक में पूरी वॉल पर फैमिली फोटो बड़े साइज में या फिर अलग-अलग शेप में लगा सकते हैं। वुड लुक द्वारा भी आजकल वॉल को काफी क्लासी लुक दिया जाता है। टाइल्स जो आजकल मार्केट में काफी डिफरेंट डिजाइन में मिल जाती हैं उनसे भी बैक को आकर्षित बनाया जा सकता है।

आनंद और ऊर्जा का संगम ऋतुराज वसंत

अलका 'सोनी'

शीत ऋतु की कंपन पैदा करने वाली ठंड से त्रस्त जगत को, अपने मंद सुगंधित, शीतल झोंके और खुशनुमा मौसम से राहत देते वसंत का आगमन अपने आप में एक त्योहार है। वसंत के आते ही सम्पूर्ण जीवन में एक तरह के हर्ष और ऊर्जा का संचार होता है। वसंत यानी स्वर्णिम पीत आभा लिए महकता-बहकता मौसम। आम्र-मंजरियों की सुवासित सुगंध के बीच वाग्देवी मां सरस्वती का आगमन। वसंत ऋतु में ज्ञान की देवी सरस्वती की आराधना, रिश्तों को नव संस्कार देती है। वसंत कहता है कि हम देवी-देवताओं की तरह आकर्षक और चिर यौवन बने रहें, किंतु इस चरम आकर्षण में भी हम अपना देवत्व, अपनी पवित्रता संजोए रखें। यह आनंद हमारे भीतर-बाहर समान रूप से प्रवाहित होता रहे।

ऋतुओं का राजा वसंत बड़ी सौम्यता से मानव-मन पर दस्तक देता है। जब केवल उपवन ही नहीं हर ओर सृष्टि केसर, कदंब, कचनार के फूलों से सज उठती है और पूरी प्रकृति अमलतास के मनोहर पीले फूलों से भरी रहती है। वसंत हमारे मन में सुंदर भावनाओं का जागरण करता है। देवदार के वृक्षों की छाया और सघन हो जाती है। अंगूरों की लता रस से युक्त हो जाती है। बूटी-बूटी अपने चरम सौंदर्य पर होती है। चारों तरफ प्रकृति अपने यौवन पर होती है। एक अद्भुत, सुवासित सुगंध हर तरफ अनुभव होने लगती है। वसंत ऋतु का एक अत्यंत गौरवमय इतिहास रहा है। जब राजभवनों में वसंतोत्सव और मदनोत्सव का भव्य आयोजन पूरे ठाट-बाट से किया जाता था। युवतियां पूरे श्रृंगार के साथ इसका स्वागत किया करती थीं।

जाने क्यों आजकल वसंत उदास-सा लगता है। एक अनचाहे मेहमान की तरह आता है, ठिठकता है और चुपचाप चला जाता है। इस मशीनी युग में उसके इस आने-जाने की पदचाप तक लोग नहीं सुन पाते हैं। तकनीकी प्रगति के साथ लोगों की सौंदर्य बोध की क्षमता कम हो गई है। अब मन भावों की उस तरलता से भींजता नहीं है। एक सुंदर और सजीला मौसम हमारे सामने से गुजर जाता है और हमें इतनी भी फुर्सत नहीं कि उसकी सुगंध हम अपने अंतर्मन में उतार सकें। ऐसे में वसंत उदास ना हो तो क्या करे? लेकिन इस उदास वसंत को हम-आप ही ऊर्जावान बना सकते हैं।

विलौआ नगर परिषद

की ओर से समस्त विलौआ नगर वासियों को

गणतंत्र दिवस की हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएं

संग्राम सिंह बघेल
प्रशासक विलौआ नगर परिषद
एवं नायब तहसीलदा

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
डी. एम. ग्वालियर

सी.एम.ओ. विलौआ
प्रदीप शर्मा

विलौआ नगर परिषद के समस्त नागरिकों से अपील करती है...

1. स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता का ध्यान रखे साथ ही कचड़ा नगर परिषद की कचड़ा लेने आने बाली गाड़ी में ही डाले।
2. डेंगू बीमारी डेंगू मच्छरों के काटने से होती है, इसलिए डेंगू बिमारी से बचने के लिए, आस-पास गदंगी ना फैलाये, और ना आस-पास गंदे पानी को एकत्रित होने दे, क्योकि मच्छरों पनपने का ऐसे स्थान बहुत उचित होते है।
3. कोरोना से बचने के लिए वैक्सीन अवश्य लगवाए जिन्होंने प्रथम डोज लगवा लिया है वो दूसरा डोज अवश्य लगवाये, जिनको प्रथम डोज नहीं लगा है वो अपने आधार कार्ड को लेकर अस्पताल और वैक्सीनेशन शिविर में जाकर रजिस्ट्रेशन कराए और तुरंत वैक्सीन लगवाये, जिससे आप भी सुरक्षित रहे साथ में मातापिता और परिवार को सुरक्षित रखे।
4. विलौआ नगर परिषद हमेशा आपकी सेवा में तत्यपर्य है आप भी नगर परिषद का सहयोग करें, जिससे विलौआ नगर परिषद का विकास हो सके।
5. पेड़ पौधों को अवश्य लगाए।
6. करो, नलों के बिल का भुगतान अवस्य करें।

बच्चों से बहुत ज्यादा नो.. नो... ठीक नहीं

बच्चों को अच्छी राह दिखाने की कसरत कहें या फिर अपनी अज्ञानता कि हम उनसे इतना नो... नो कहते हैं कि उसका बुरा प्रभाव उन पर कब पड़ गया, हमें पता ही नहीं चलता। हम कई बार कहते या औरों के मुंह से सुनते हैं-'नो डोंट डू दिस।' या ऐसे मत करो, यहां मत बैठो, ऐसे मत खाओ, ऐसे मत पियो, बड़ों से ऐसे बात नहीं करते, अपनों से छोटों को ऐसे नहीं परेशान करते वगैरह-वगैरह। असल में पैरेंट्स, खासतौर पर मां अपने बच्चे को काबिल और नेक इंसान बनाने की जुगत करती है। माना कि आप अपने प्यारे बच्चे को अच्छा नागरिक बनाना चाहती हैं, लेकिन कभी आपने यह सोचा है कि आपकी इसी आदत की वजह से कहीं आपका लाडला या लाडली नेगेटिव तो नहीं हो रहे हैं। ऐसा लगे तो कुछ ध्यान दीजिए, स्थिति संभल जाएगी।

थोड़ा सा नजरअंदाज

एक सीमा में बच्चों को शैतानी करने ही देना चाहिए। कभी-कभी बच्चों की छोटी-मोटी ग़लतियों को नज़र-अंदाज़ भी कर दें। इससे आपको स्ट्रेस भी नहीं होगा और बच्चे कुछ पल अपने अंदाज में एंजॉय भी कर सकेंगे। बच्चों का मन कोमल और मासूम होता है। इसीलिए, वे किसी भी चीज़ को खुद करके देखना चाहते हैं। हर बार टोकाटाकी से वे जीवन में स्वयं फैसले लेने में पिछड़ जाते हैं। वैसे भी देखा और कहा गया है कि बिना ग़लती किए इंसान कुछ नहीं सीख पाता। तो, इसीलिए अपने बच्चों को ग़लती करने दें, बस आपकी निगाह में हो गलती।

समझायें... प्यार से

बात-बात पर बच्चों को डांटना या मारना ख़तरनाक हो सकता है। इससे बच्चे आपसे अपनी बातें शेयर करने से डरेंगे, जिसके चलते वे राह भटक सकते हैं। प्यार से समझाना ही मुफीद रहता है। प्यार से अपने बच्चे को किसी भी चीज़ के फ़ायदे और नुकसान के बारे में समझाएं। माना जाता है कि जो पैरेंट्स अपने बच्चों पर चीखते-चिल्लाते हैं, उनके बच्चों में कॉन्फ़िडेंस की कमी साफ़ तौर पर देखी जा सकती है। और तो और, ऐसे बच्चे अपने जीवन में हर बात को चीख-चिल्लाकर पूरा करवाने के लिए अग्रसर हो जाते हैं। ऐसे बच्चे बड़े होकर मां-बाप और समाज के लिए सर दर्द बन जाते हैं। अक्सर देखा जाता है कि जब बच्चे पैरेंट्स की बात नहीं मानते, तो उन पर हाथ उठा दिया जाता है। बात-बात पर पैरेंट्स आग-बबूला हो जाते हैं। चाइल्ड एक्सपर्ट्स भी कहते हैं कि पिटाई तो बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। पूर्वी दिल्ली के क्लीनिकल सॉयकोलॉजिस्ट डॉ. ईशा मनचन्दा कहते हैं, 'पैरेंट्स को चाहिए कि वे अपने बच्चों को किसी भी चीज़ के पहलुओं को अच्छे से समझाएं! क्योंकि मारने या पीटने से बच्चे रिजिड हो जाते हैं और कई केसेस में तो बच्चे अपना कॉन्फ़िडेंस तक खो देते हैं। बच्चों का मन एकदम कच्ची मिट्टी जैसा होता है, जिसे आप जैसे चाहें, वैसे मोड़कर शेप दे सकते हैं। इसीलिए, अपने बच्चों के साथ किया गया अच्छा व्यवहार उन्हें समाज में एक अच्छे नागरिक का स्टेटस दिला सकता है और वहीं बुरा व्यवहार बना सकता है उन्हें समाज का एक सबसे ख़राब इंसान। इसलिए, यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपने बच्चे को कैसे इंसान के रूप में देखना चाहते हैं। जहां तक बात है बच्चों की निगेटिव पर्सनैलिटी की, तो उनको किसी भी ग़लत काम को करने से रोकने के लिए सीधा नो कहने के बजाय उन्हें उस काम को करने से होने वालीं परेशानियों से अवग़त कराएं। इससे आपके लाडलों को जीवन में किसी भी काम को करने से पहले तर्क-शक्ति का उपयोग करने की आदत बनेगी और फिर वे ले सकेंगे अपने जीवन में सही फ़ैसले।' तो बच्चों को बात-बात पर नो कहने से अच्छा है कि उनके साथ संवाद स्थापित करें।

डायबिटिक लोग ऐसे करें दूध-दही का सेवन...

• कुमार गौरव अजीतेन्दु

डायबिटीज यानी मधुमेह या शुगर मुख्यतः एक मेटाबॉलिक डिसऑर्डर होता है। इस बीमारी में अपने खान-पान को नियंत्रित और नियमित रखना बेहद जरूरी है। असल में शुगर पेशेंट को लाइफ स्टाइल का खास ध्यान देने की जरूरत होती है। किसी डायबिटिक पर्सन के डाइट चार्ट में दूध-दही का क्या स्थान हो, इस बारे में सीनियर मेडिकल काउंसलर डॉ. शशांक शर्मा ने स्थिति स्पष्ट की। उन्होंने बताया कि मधुमेह से पीड़ित व्यक्ति को दूध का सेवन करने में सावधान रहना चाहिए क्योंकि दूध में लैक्टोज पाया जाता है, जो चीनी का ही एक रूप है। इसलिए इसकी मात्रा पर ध्यान देना जरूरी है। जिला नोडल चिकित्सा अधिकारी कबीरधाम, छत्तीसगढ़ में तैनात डॉ. शशांक शर्मा यह भी कहते हैं कि दूध में मौजूद फैट भी स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें खड़ी कर सकता है लेकिन इसमें मौजूद कैल्शियम, मैग्नीशियम और विटामिन जैसे पोषक तत्व डायबिटीज से पीड़ित लोगों की हेल्थ अच्छी रखते हैं। आइये इस संबंध में और विस्तार से जानते हैं।

दूध का सेवन करें या नहीं?

डायबिटीज रोगी के लिए दूध की अलग वैरायटीज़ को चुनना चाहिए। हाई प्रोटीन और लो फैट वाला दूध डायबिटीज से पीड़ित लोगों के लिए पूरी तरह सेफ है। इससे ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में सहायता मिलेगी। सोते समय दूध पीने से बचना चाहिए क्योंकि रात में दूध में मौजूद कैलोरी की मात्रा शरीर के लिए खतरनाक हो सकती है। इससे ब्लड शुगर लेवल बढ़ जाएगा और आपको असुविधा महसूस होने लगेगी। लो फैट मिल्क सुबह के नाश्ते के साथ ले सकते हैं। सुबह के समय ब्लड शुगर लेवल कम होता है और बॉडी को एनर्जी की जरूरत होती है। इसलिए शुगर पेशेंट को अगर दूध लेना ही हो तो सुबह नाश्ते के साथ लेना चाहिए।

दही का सेवन कैसे और कब?

दही का सेवन इसके कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स और कम ग्लाइसेमिक लोड के कारण डायबिटिक लोगों के लिए लो रिस्क से जुड़ा हुआ है। ग्लाइसेमिक इंडेक्स कार्बोहाइड्रेट वाली खाने की चीजों की रैंकिंग का एक सिस्टम है, जो कि इस बात पर आधारित है कि खाने की कोई चीज सेवन के बाद कितनी तेजी से ब्लड शुगर लेवल बढ़ाती है और गिराती है? वहीं ग्लाइसेमिक लोड नाम का पैमाना, ब्लड शुगर पर भोजन के असल प्रभाव की अधिक सटीक तस्वीर देता है।

दही/योगर्ट का संतुलित मात्रा में सेवन टाइप-2 डायबिटीज़ के खतरे को 14 प्रतिशत तक कम करता है। अपनी सेहत की स्थितियों को ध्यान में रखते हुए आप 125 ग्राम तक दही/योगर्ट ले सकते हैं। दही का प्रोबायोटिक प्रभाव ग्लूकोज मेटाबॉलिज्म को कंट्रोल करने और बुजुर्गों में डायबिटीज के रिस्क को कम करने में मदद करता है। अच्छी क्वालिटी का योगर्ट चुनने के लिए प्रोडक्ट के लेबल को जांच लें कि उसमें कार्ब्स 10-15 प्रतिशत तक हों। ब्रेकफास्ट में हाई प्रोटीन या कार्ब डाइट की जगह पर इसका सेवन किया जा सकता है। खाने के बाद मिठाई के विकल्प में भी आप दही ले सकते हैं। हां, अपनी बीमारी की कंडीशन को समझकर और अपने डॉक्टर की सलाह के अनुसार बताई गयी मात्रा में ही ये चीजें खानी चाहिए। अगर दही खाने से कोई विकार उत्पन्न होता है तो डॉक्टर से सलाह जरूर लें।

भोजनशैली भी सिखाएं बच्चों को

हजार खतरों में पल रहे आज के बच्चों की बिगड़ती सेहत और अस्वास्थ्यकर खानपान बड़ी समस्या बना गया है। कभी बच्चों का मन रखने के लिए तो कभी अपनी व्यस्तता के चलते, अभिभावक उनकी भोजन सम्बन्धी आदतों के बदलाव को गंभीरता से नहीं ले पा रहे हैं। साथ ही बाजार की आक्रामक रणनीति भी बच्चों के सामने खान-पान के ललचाऊ विकल्प परोसने से नहीं चूक रही। ऐसे में नई पीढ़ी की सेहत सहेजने के लिए सजगता जरूरी है। जरूरी है उन्हें भोजन शैली की शिक्षा देने की। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 के ताज़ा आंकड़ों के मुताबिक़ देश में 5 साल की उम्र तक के बच्चों में मोटापा बढ़ा है।

सही पोषण के बारे में बताएं

बच्चे जबरदस्ती थोपे जाने से कोई काम नहीं करते। अभिभावकों को चाहिए कि बच्चों को धैर्य और सूझबूझ के साथ सही पोषण के बारे में बताएं। साथ ही खाने पीने की अस्वस्थ आदतों को लेकर होने वाले नुक़सानों की भी जानकारी दें। बच्चे खुद अपने स्वास्थ्य और सेहत के लिए सजग नहीं हो सकते। इसीलिए उन्हें सेहत के लिए ख़तरा पैदा करने वाली इस राह पर चलने से रोकने का काम मम्मी-पापा को ही करना होता है। विशषज्ञों का मानना है कि खाने की आदतें बच्चों के व्यवहार को भी प्रभावित करती हैं। इतना ही नहीं बिगड़ता खानपान अनियमित दिनचर्या की भी एक बड़ी वजह बनता है जिसके परिणामस्वरूप छोटे-छोटे बच्चे भी आजकल डायबिटीज जैसी बीमारियां देखने को मिल रही हैं।

हमेशा मनमानी ना करने दें

मनचाहा खाने की ज़िद करने वाले बच्चों को हर बार मनमानी ना करने दें। कभी-कभी बच्चे अपने मन का भी खा सकते हैं आमतौर पर उन्हें फल, सब्ज़ी और घर का बना स्वास्थ्य वर्धक भोजन करने के लिए मनायें। घर में भी प्रोसेस्ड फ़ूड आइटम अधिक न लाएं। कई बार देखने आता है कि कुछ बच्चे खाना नहीं खाने के लिए भी जिद करते हैं। उनका यह मनमौजी व्यवहार भी उनका स्वास्थ्य बिगड़ता है।

अपनाएं जमीनी जीवनशैली

बच्चों के बिगड़ते खानपान और बढ़ती शारीरिक निष्क्रियता का ही नतीजा है कि अब हमारे यहां ग्रामीण इलाकों में बच्चों में वजन ज्यादा होने का आंकड़ा शहरी बच्चों से ज्यादा हो गया है। बच्चों में जंक फ़ूड खाने का बढ़ता चाव और बहुत हद तक अभिभावकों की भी अनदेखी इसका कारण है।

दुनियाभर में होते हैं फूलों के उत्सव...

फूल अपनी खुशबू, खूबसूरती, कोमलता और उपयोग के कारण दुनिया भर के लोगों को लुभाते हैं। अगर कहें कि फूलों की दीवानी पूरी दुनिया है तो गलत नहीं होगा। दुनिया के कई देशों में फूलों से जुड़े खास उत्सव मनाए जाते हैं। आइए जानते हैं ऐसे ही कुछ उत्सवों के बारे में...

फेस्टिवल फ्लावर्स, कोलंबिया

कोलंबिया के मेडेलिन सिटी में आयोजित यह फ्लावर फेस्टिवल दुनिया के बेहतरीन फूल महोत्सवों में एक माना जाता है। पहले यानी जब 1957 में इसकी शुरुआत हुई तब इसे वर्जिन मैरी डे के रूप में मनाया गया था। उत्सव के दौरान निकाली जाने वाली सिलेटेरस परेड में हिस्सा लेने वाले लोग फूलों से बनाई गयी अनूठी और आकर्षक आकृतियां अपनी पीठ पर लादकर चलते हैं। दरअसल यह उत्सव गुलामी प्रथा के अंत का प्रतीक है, जब लोग अपने मालिक को पीठ पर ढोकर चलते थे। इसके अलावा तरह-तरह की झांकियां भी इस परेड का विशेष आकर्षण है।

रोज़ परेड, कैलिफोर्निया

यह अमेरिका के न्यू ईयर का सेलिब्रेशन है। इसकी शुरुआत 1 जनवरी, 1890 को हुई थी। कैलिफोर्निया के पासाडेना में आयोजित होने वाली रोज़ परेड दुनिया भर में मशहूर है। हजारों की संख्या में लोगों का हुजूम गुलाब के फूलों को तरह-तरह से सजाकर सड़कों पर निकलता है। तरह-तरह की प्रतियोगिताओं और म्यूजिक शो'ज का आयोजन किया जाता है। इस दौरान खेला जाने वाला रोज़ बॉल नामक फुटबॉल गेम भी खूब चर्चित है। इस अवसर पर हॉर्स परेड और ब्यूटी क्वीन कंटेस्ट भी आयोजित किया जाता है।

माइ फ्लावर फेस्टिवल, थाईलैंड

थाइलैंड के उत्तरी हिस्से में मौजूद चियांग माइ नामक इस शहर के नाम का अर्थ है उत्तर का गुलाब। यहां हर साल फरवरी के प्रथम वीकेंड में शानदार फ्लावर फेस्टिवल का आयोजन किया जाता है। उत्सव के दौरान हर ओर पीले और सफेद, गुलाबी और बैंगनी फूल और विशेष रूप से सिर्फ यहीं पाये जाने वाले डमस्क गुलाब सजे हुए दिख जाएंगे। उत्सव का मुख्य आकर्षण है, यहां का सार्वजनिक उद्यान सुआन बुआक हाड। उत्सव के दौरान एक फ्लावर परेड निकाली जाती है जिसमें लड़के-लड़कियां सुंदर और रंग-बिरंगे कपड़ों में सड़कों पर नाचते-कूदते हैं, ये लोग रास्ते में खड़े दर्शकों को तोहफे के रूप में गुलाब के फूल भी देते हैं।

फ्लावर कारपेट, बेल्जियम

अपने नाम के मुताबिक ही इस अवसर पर रंग-बिरंगे लाखों फूलों को कालीन की तरह सजा दिया जाता है। यह सजावट ब्रुसेल्स के राजमहल के प्रांगण में की जाती है। बेल्जियम के ब्रुसेल्स में मनाया जाने वाला फ्लावर कारपेट फेस्टिवल दुनिया के सबसे अनोखे उत्सवों में शामिल है। हर साल किसी खास थीम पर काम किया जाता है। ऐसा पहला फूल-कालीन 1971 में बनाया गया था। 1986 के बाद यह उत्सव नियमित बन गया।

फ्लावर परेड, नीदरलैंड

नीदरलैंड और बेल्जियम के कई शहरों में ब्लूमेनकोर्सो यानी फ्लावर परेड का आयोजन किया जाता है। इसमें फूलों से सजी तरह-तरह की आकृतियां, फूलों से सजी कारें, नौकाएं आदि शामिल की जाती हैं। शहरी और कलाकार अपनी पूरी कल्पना-शक्ति उड़ेल कर एक से बढ़कर एक सजावटी कृतियां तैयार करते हैं। हर परेड की अपनी खास थीम होती है।

स्किल सीखने पर दें जोर...

ब भी लगे कि जिंदगी इम्तिहान ले रही है तो सोचें कि इतनी बड़ी दुनिया में ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं जो आप जैसे ही या आप से भी बुरे हालातों से गुजर रहे हैं या गुजर आए हैं। कोई भी समस्या हो, सुलझ सकती है।

कामयाब होने के लिए विचार करना और योजना बनाना ही काफी नहीं। जरूरी है, अपने अनुभव व जॉब मार्केट के ट्रेंड्स के मुताबिक ही फील्ड चुनें। संबंधित प्रोफेशन में प्रयुक्त नयी टेक्नोलोजी व प्रॉडक्ट की जानकारी प्राप्त कर आगे बढ़ें। कम्युनिकेशन व सोशल नेटवर्किंग बेहतर बना लें। यकीनी बनायें कि फील्ड में जरूरी सॉफ्टवेयर में काम करना आपको आता हो। फिर ईमानदारी व मेहनत के बल पर तरक्की की राह पकड़ें। हर कोई अपना अच्छा, सुखद, सफल और समृद्ध भविष्य करना चाहता है। अक्सर लोग जब भी अकेले होते हैं या सफर कर रहे होते हैं तो अपने भविष्य के बारे में सोचते रहते हैं, सपने देखते हैं व कभी डे ड्रीमिंग करते हैं, तो कभी किसी कागज या डायरी में तरह-तरह की योजनाएं लिखते रहते हैं। भविष्य की योजना बनाना और इस बारे में सोचना-विचारना वाकई अच्छी बात है लेकिन सिर्फ कागज काले करते रहने या सपने देखने से कुछ भी हासिल नहीं होने वाला। इसके लिए आप को अपनाने होंगे कुछ कारगर उपाय।

यह भी जरूरी

डिग्रियां आपको कहीं जॉब दिलाने का मार्ग भले ही प्रशस्त कर सकती हैं लेकिन आप किसी भी जॉब में तभी टिकेंगे और तरक्की तभी करेंगे जब आप अपने जॉब से संबंधित स्किल्स में दक्षता हासिल कर लेंगे। आप सेल्स में हैं तो आपकी कम्युनिकेशन स्किल अच्छी होनी चाहिए, डिमांड-सप्लाई और दूसरी कंपनियों के प्रोडक्ट व सर्विसेज की मूल बातें आपकी जानकारी में होनी चाहिए। आप सॉफ्टवेयर आर्किटेक्ट हैं तो एडवांस टेक्नोलॉजी में आपको लगातार अपडेट रहना चाहिए। आप जो भी हों अपने प्रोफेशन के हर पहलू की जानकारी के साथ तकनीक, मशीनरी आदि की जानकारी जरूर हासिल करें।

प्रैक्टिकल बनें

कई लोग भारी-भरकम योजनाएं और रूटीन तो बना लेते हैं लेकिन उन पर अमल नहीं करते। जब तक आप योजनाओं पर काम नहीं करते तब तक वे कागज पर चिपके काले अक्षरों से ज्यादा कुछ नहीं। आपको जी तोड़ मेहनत से खुद को संवारना और आगे बढ़ाना होगा। अभिनेत्री काजोल ने इस संबंध में बहुत अच्छी बात कही है- प्रेजेंस ऑफ माइंड बड़ी बात है। आप भविष्य के बारे में सोचें लेकिन उड़ने से पहले पांव के नीचे जमीन तलाशें। जब भी लगे कि जिंदगी इम्तिहान ले रही है तो सोचें कि इतनी बड़ी दुनिया में ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं जो आप जैसे ही या आप से भी बुरे हालातों से गुजर रहे हैं या गुजर आए हैं। कोई भी समस्या हो, सुलझ सकती है। कोशिश करें, फेल हुए तो कुछ सीखेंगे जरूर।

अपनी इमेज बनाएं

समाज हो, कारोबार हो या आपका परिवार हो- आपको सफलता और प्रतिष्ठा तभी मिलेगी जब आप अपनी इमेज एक विश्वसनीय, मेहनती और अच्छे इंसान की बनाएंगे। याद रहे, आप अपनी सफलता या विस्तार की जो भी योजना बनाएंगे या अपनी दैनिक समय सारणी बनाएंगे उन्हें आप अकेले साकार नहीं कर सकते। आपको अपने परिजनों, मित्रों, सहकर्मियों, ग्राहकों व समाज के लोगों का सहयोग चाहिए। यह सहयोग आपको तभी मिलेगा जब आप उनकी नजर में एक योग्य, अच्छे और काम के इंसान होंगे। इसलिए अपने संपर्क बढ़ाने और सोशल नेटवर्क का विस्तार करने के लिए मानवीय गुणों को अवश्य अपनाएं।

ट्रेंड को समझें

आपको अपनी दिनचर्या का एक महत्वपूर्ण समय मौजूदा ट्रेंड पर रिसर्च करने में खर्च करना चाहिए। आप को समझना होगा कि मौजूदा दौर में कौन से बिजनेस या प्रोफेशन ज्यादा उपयोगी हैं और डिमांड में हैं। आप की क्या योग्यताएं व अनुभव हैं और आप ट्रेंड में चल रहे कौन से फील्ड में फिट हो सकते हैं। फिर आपको इन बातों में महारत हासिल करने में जुटना चाहिए। जब आप इन चीजों पर अपनी पकड़ बना लेंगे तो आपके लिए आगे बढ़ना और तरक्की करना बहुत आसान हो जाएगा।

बचें रेनॉड्स डिज़ीज से...

• रजनी अरोड़ा

सर्दी के मौसम में तापमान में होने वाली गिरावट, खुश्क और बर्फीली हवाओं से हाथ-पैर ठंडे होना आम बात है। लेकिन कुछ लोगों के हाथ-पैर की उंगलियां ठंड के मारे सफेद, नीली या लाल पड़ जाती हैं। उनमें दर्द रहता है और यहां तक कि उंगलियों के पोरों पर नाखूनों के नीचे की स्किन पर घाव हो जाते हैं और उनमें से ब्लड भी आने लगता है। मेडिकल टर्म में ऐसी स्थिति को रेनॉड्स डिज़ीज़ कहा जाता है जो मूलतः ब्लड सर्कुलेशन का विकार है। दरअसल यह कोई गंभीर बीमारी नहीं है। ध्यान रखने पर इसका उपचार आसानी से किया जा सकता है। आंकड़ों के हिसाब से रेनॉड्स के कुल मरीजों में 80 प्रतिशत महिलाएं होती हैं। मौटे तौर पर रेनॉड्स को दो स्टेज में बांटा जा सकता है।

रेनॉड्स डिजीज

40 साल से कम उम्र के लोगों में रेनॉड्स डिजीज की प्राइमरी स्टेज मिलती है। ठंड की वजह से शरीर के टेम्परेचर में गिरावट आने लगती है। ब्लड आर्टिरीज ब्लॉक हो जाने से उंगलियों तक शुद्ध ऑक्सीजन और ब्लड की सप्लाई में रुकावट आती है। उंगलियों की स्किन का रंग पहले सफेद, फिर धीरे-धीरे नीला पड़ने लगता है। ठंड से बचाने के लिए किए गए उपायों के बाद रिकवरी फेज में ये लाल रंग के हो जाते हैं। इनमें हल्की-हल्की सूजन और दर्द की शिकायत भी होती है। रेनॉड्स डिजीज का असर कान के सिरे या ईयरलूप्स और नाक जैसे सॉफ्ट टिशूज पर भी पड़ता है।

उपचार

आमतौर पर रेनॉड्स डिजीज की प्राइमरी स्टेज में ज्यादा नुकसान नहीं होता। ठंड से गर्म माहौल में जाने पर स्वास्थ्य लाभ ज्यादा मिलता है।

रेनॉड्स फिनोमिना

यह सेकेंडरी स्टेज है जो 40 साल की उम्र से बड़े लोगों को होती है। कई बार प्राइमरी स्टेज के मरीज इमोशनल स्ट्रेस के कारण कैफीन-निकोटिन एल्कोहल जैसी चीजों का आधिक सेवन करने लगते हैं। जिससे यह मामूली-सी डिजीज रेनॉड्स फिनोमिना में बदल जाती है। ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, अर्थराइटिस, रूमैटिक्स जैसी गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीज़ इसकी चपेट में ज्यादा आते हैं। सेकेंडरी स्टेज में मरीज को हाथों में अल्सर, गेन्ग्रीन की स्थिति आ जाती है। ज्यादा समय तक ब्लड सर्कुलेशन बाधित होने से हाथ-पैर की स्किन डेड होने लगती है, बहुत सख्त होकर जगह-जगह से कटने लगती है, नाखूनों के नीचे की स्किन से खून निकलने लगता है, उंगलियों में झनझनाहट सी महसूस होती है, सूनापन आ जाता है यानी ठंडे-गर्म का अहसास नहीं रहता।

उपचार

मरीज को ब्लड सर्कुलेशन बढ़ाने वाली मेडिसिन दी जाती हैं। हालात में सुधार न आने पर मरीज़ की प्रभावित उंगलियों की सिम्पैनेक्टोमी सर्जरी की जाती है। सिम्पैनेक्टोमी नर्व जो दूसरी आर्टिरीज़ को सिकोड़ती है, उसमें छोटा-सा चीरा लगाया जाता है। इससे ब्लड सर्कुलेशन ठीक हो जाता है और रेनॉड्स फिनोमिना का खतरा टल जाता है।

बचाव और रोकथाम

शरीर में ब्लड सर्कुलेशन और गर्माहट बढ़ाना ज़रूरी है। इसके लिए कुछ तरीकों पर अमल किया जा सकता है। एक तो जहां तक हो सके ठंडे पानी में हाथ डालने, फ्रिज में से सामान निकालने से बचें। काम करते हुए रबड़ के ग्लव्स पहनें। इसके अलावा बार-बार डिटर्जेन्ट से हाथ न धोएं। स्किन सॉफ्ट रखने के लिए मॉइश्चराइजर का इस्तेमाल करें। ठंडे हाथ-पैर गर्म करने के लिए आपस में रगड़ें। गुनगुने पानी में हाथ डुबो कर गर्म करें। यह भी ध्यान रहे कि नियमित रूप से ऑलिव, नारियल या सीसम ऑयल से मसाज करें। अगर ऐसा न हो पाए तो फिर मॉइश्चराइजर से मालिश कर ग्लव्स या जुराबें पहन लें। इससे ब्लड सर्कुलेशन ठीक रहेगा और हाथों में गर्माहट बनी रहेगी। साथ ही नियमित रूप से योग और व्यायाम करें। इससे शरीर में ऑक्सीजन की कमी नहीं होगी। उंगलियों में झनझनाहट महसूस हो, तो ब्लड सर्कुलेशन बढ़ाने के लिए दाएं-बाएं घुमाएं। अपने हाथों को चारों ओर घुमाएं, एक स्थान पर खड़े होकर दौड़ें। गर्म तासीर वाली चीजें खाएं। ड्राई फ्रूट्स, अलसी, तिल, चिया जैसे सीड्स सिर्फ शरीर को गर्म रखते हैं, बल्कि इनमें पाए जाने वाले पोषक तत्व लंबे समय तक के लिए इम्यूनिटी को मजबूत बनाते हैं। अपने आहार में पालक, बादाम, मछली, ब्रोकली, कद्दू, गाजर, टमाटर जैसी विटामिन ई से भरपूर चीजों को शामिल करें। ये चीजें ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ाती हैं। हरी पत्तेदार सब्ज़ियां अदरक, लहसुन, फलियां दालें, एवाकाडो, केला जैसी मैग्नीशियम से भरपूर चीजें ब्लड आर्टिरीज को बढ़ाती है और रेनॉड्स डिजीज के खतरे को कम करती हैं। आहार में ओमेगा 3 फैटी एसिड, विटामिन बी, नियासिन से भरपूर मटर, मशरूम, एवाकेडो, चिकन, मछली लीवर, अंडे जैसे खाद्य पदार्थ फायदेमंद है। चाय-कॉफी, अल्कोहल जैसे पेय पदार्थों, धूम्रपान और तंबाकू निकोटिन वाली चीजों के बजाय गर्म तासीर वाले सूप, ब्रेवरेज, हल्दी या केसर, बादाम, छुआरे वाला दूध जैसे ड्रिंक्स ज्यादा लें। ये सभी तरह के ड्रिंक्स शरीर को गर्माहट प्रदान करने के साथ-साथ इम्यूनिटी को बूस्ट भी करते हैं।

मिथुन की पहली वेब सीरीज का काउंटडाउन शुरू

ट्रेलर में दिखी श्रुति, अर्जन बाजवा गौहर और सत्यजीत की चमक

अमेजन प्राइम वीडियो ने अपनी वेब सीरीज बेस्टसेलर के ट्रेलर को मंगलवार को रिलीज कर दिया। हालांकि, मंगलवार के दिन एक के बाद एक हिंदी सिनेमा में हुए तमाम बड़े ऐलानों के बीच ये ट्रेलर कहीं गुम होकर रह सकता था लेकिन इस सीरीज में मिथुन चक्रवर्ती की मौजूदगी ने लोगों की उत्सुकता इसे लेकर बनाए रखे। ट्रेलर से पता चलता है कि ये सीरीज एक साइकोलॉजिकल थ्रिलर है। सस्पेंस और ड्रामा की छौंक भी इसमें लगाई गई है। प्राइम वीडियो पर ये सीरीज 18 फरवरी से शुरू होने जा रही है। सीरीज का निर्देशन किया है मुकुल अभ्यंकर ने।

मुकुल अभ्यंकर निर्देशित बेस्टसेलर में मिथुन चक्रवर्ती, श्रुति हासन, अर्जन बाजवा, गौहर खान, सत्यजीत दुबे और सोनाली कुलकर्णी जैसे दमदार सितारों की फौज है। मुकुल कहते हैं, 'स्क्रिप्ट पढ़ते ही ये सीरीज मुझे इतनी जोरदार और रोमांचक लगी कि मैंने इसे लिए फौरन हां कर दी। दर्शक इस सीरीज के हर रहस्यमय क्षण को बेहद पसंद करेंगे और आठवां एपिसोड खत्म होने तक उनकी भूख और ज्यादा बढ़ जाएगी।" वहीं सीरीज का आकर्षण बन चुके मिथुन के मुताबिक "बेस्टसेलर वाला मेरा किरदार लोकेश प्रमाणिक दिलचस्प व्यवहार करने वाला एक अनोखा व्यक्तित्व है। मुझे उसकी तमाम सनकों के साथ यह रोल निभाने में बड़ा मजा आया। मेरा इससे बेहतर स्ट्रीमिंग डेब्यू हो ही नहीं सकता था।" मिथुन चक्रवर्ती के अलावा श्रुति हासन भी इसे अपना डिजिटल डेब्यू मान रही हैं हालांकि वह इसके पहले भी डिजिटली नजर आ चुकी हैं। वह कहती हैं, 'मैं इस बात को लेकर रोमांचित हूं कि बेस्टसेलर मेरा फुल-फीचर डिजिटल डेब्यू है। जिस पल मैंने इसकी स्क्रिप्ट देखी, मैं इसे पढ़ती ही रह गई। मैं कहानी में मौजूद परतों के भीतर गहराई तक उतर गई और मुझे अपना किरदार इतना सम्मोहक लगा

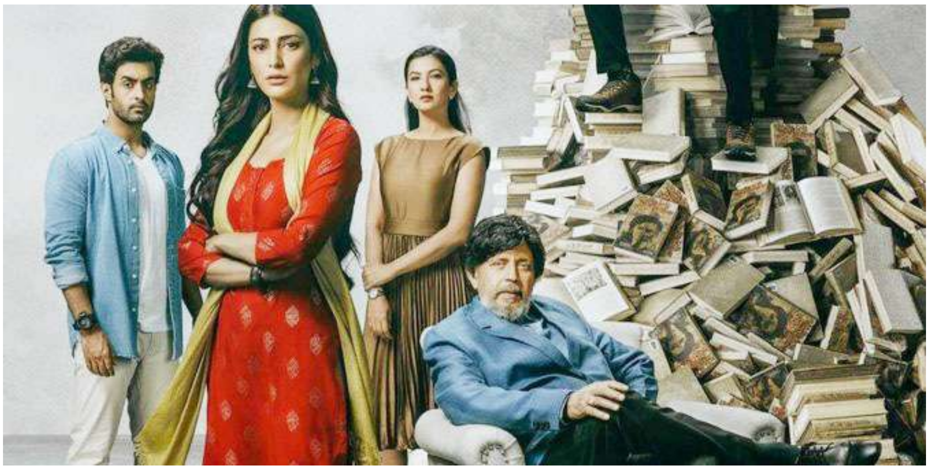

कि मुझे इसे निभाना ही था। मैं हमेशा एक महिलाप्रधान कहानी के साथ इस स्पेस में दाखिल होना चाहती थी और यह ऐसा किरदार निभाने का अद्भुत अवसर था, जिसे मैं ठुकरा नहीं सकती थी। मैंने अपनी भूमिका की तैयारी के लिए कड़ी मेहनत की है और मैं इस सीरीज के बारे में दर्शकों की प्रतिक्रिया को लेकर वाकई उत्सुक हूं।"

वहीं अर्जन बाजवा कहते हैं, 'बेस्टसेलर की स्टोरी एक ऐसी दास्तान है, जो दर्शकों को पूरी तरह से बांध कर रखेगी। हर कैरेक्टर बेहद खास है, जिसे मुकुल अभ्यंकर ने काफी कुशलते से बाया है। पूरा नैरेटिव बेहद कुतूहलपूर्ण है और कई परतों से भरा हुआ है। मैं एक कामयाब और मुखर राइटर ताहिर वजीर के रूप में अपनी भूमिका को लेकर काफी उत्साहित हूं, जिसका जीवन एक अजनबी से टकराने के बाद भारी ट्विस्ट और टर्न से गुजरता है। इस किरदार की कई परतों को देखते हुए यह एक चुनौतीपूर्ण भूमिका थी, लेकिन साथ ही साथ एक एक्टर के रूप में ताहिर को परदे पर उतारने का अनुभव बड़ा शानदार रहा। मैं बेस्टसेलर के दुनिया भर के दर्शकों तक पहुंचने को लेकर बेताब हूं।'

सोनाली कुलकर्णी का भी बेस्टसेलर के साथ डिजिटल डेब्यू हो रहा है। वह कहती हैं, "मैं इस शानदार सीरीज का हिस्सा बनकर बेहद खुश हूं। किसी सीरीज के लिए शूटिंग करना फिल्म की शूटिंग से एकदम अलग अनुभव होता है, लेकिन मेरे निर्देशक मुकुल अभ्यंकर ने इसे आसान बना दिया। मैं इसलिए भी रोमांचित हूं कि मुझे मिथुन दा के साथ इतनी करीबी से काम करने का मौका मिला।

अभिनेत्री आलिया भट्ट ने साड़ी में शेयर की फोटो

बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। वह अक्सर अपनी तस्वीरें और वीडियोज इंस्टाग्राम पर शेयर करती रहती हैं। आलिया की तस्वीरों को देखकर उनके फैंस उनकी खूब तारीफ करते हैं और उनकी सुंदरता पर दिल खोलकर टिप्पणी करते हैं। अब आलिया भट्ट ने इंस्टाग्राम पर अपनी ताजा तस्वीरें शेयर की हैं जिनको उनके फैंस खूब पसंद कर रहे हैं। आलिया भट्ट की फिल्म ''गंगूबाई काठियावाड़ी' रिलीज होने वाली है जिसे लेकर वह सुर्खियों में हैं।

सोशल मीडिया पर फिल्म का ट्रेलर और आलिया के लुक को काफी पसंद किया गया है। यह फिल्म 25 फरवरी को रिलीज हो रही है और अभिनेत्री आलिया भट्ट इस फिल्म का जोरों-शोरो से प्रचार भी कर रही हैं। अब उन्होंने जो तस्वीरें शेयर की हैं, उन पर से प्रशंसक अपनी नजरें हटा नहीं पा रहे हैं। इन तस्वीरों में आलिया भट्ट बेहद खूबसूरत लग रही हैं। तस्वीरों में आलिया भट्ट ने सफेद रंग की प्लेन साटन साड़ी और स्लीवलेस ब्लाउज पहन रखा है। खुले बालों में वब बहुत सुंदर लग रही हैं। आलिया ने अपने लुक को कंप्लीट करने के लिए कानों में बड़े राउंड शेप के इअरिंग डाले हैं। उन्होंने बालों में एक तरफ लाल गुलाब लगा रखा है जिसे फैंस खूब पसंद कर रहे हैं और तारीफ कर रहे हैं। इन तस्वीरों को शेयर करते हुए आलिया भट्ट ने कैप्शन में लिखा है, 'आ रही हैं गंगू. सिर्फ सिनेमा में- 25 फरवरी से।'

कोरोना काल में तेलुगू फिल्मों ने किया सबसे ज्यादा मनोरंजन...

देश में कोरोना लॉकडाउन के दिनों में दर्शकों का मनोरंजन करने में तेलुगू फिल्म सबसे आगे रही हैं। हिंदी और अन्य भाषाओं के मुकाबले तेलुगू फिल्मों को लोगों ने ज्यादा पसंद किया और देखा है। हाल ही में आई अल्लू अर्जुन अभिनीत पुष्पा फिल्म (तेलुगू) वर्ष 2020—2021 में तान्हाजी (हिंदी) के बाद दूसरी सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्म रही है। ऑरमैक्स बॉक्स ऑफिस रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2020 और 2021 में बॉक्स-ऑफिस कमाई में तेलुगू सिनेमा की हिस्सेदारी पहले के मुकाबले काफी बढ़ गई है। अब ये हिस्सेदारी बढ़कर 29 फीसदी हो गई है जो हिंदी की 27 फीसदी और तमिल सिनेमा की 17 फीसदी की हिस्सेदारी से कहीं अधिक है। जबकि बॉक्स ऑफिस में चार दक्षिण भारतीय भाषाओं तमिल, तेलुगू, मलयालम और कन्नड़ भाषा का योगदान 2020-21 में बढ़कर 59 फीसदी तक हो गया है, जो वर्ष 2019 में महज 36 फीसदी था। जबकि हिंदी की हिस्सेदारी 44 फीसदी से घटकर महज 27 फीसदी पर आ गई है।

मुंबई स्थित ऑरमैक्स मीडिया देश की उन चुनिंदा बड़ी कंपनियों में शामिल है जो मनोरंजन कारोबार का विश्लेषण करती है। कंपनी अपनी सालाना रिपोर्ट फिल्म निर्माताओं, वितरकों और कारोबार विश्लेषकों जैसे उद्योग के सूत्रों से प्राप्त अनुमानों के आधार पर तैयार करती है। कंपनी अपनी यह रिपोर्ट अनुमानित आंकड़ों के आधार पर बनाती है। रिपोर्ट के मुताबिक, कोरोना वायरस के प्रतिबंध के चलते देशभर के सिनेमाघर लंबे समय तक बंद रहे हैं जिससे फिल्म उद्योग का कारोबार बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। किसी भी फिल्म की कमाई में दो-तिहाई हिस्सा बॉक्स आफिस से आता है। वर्ष 2020 और 2021 की कुल बॉक्स ऑफिस कमाई महज 5,757 करोड़ रुपये रही। जबकि अकेले वर्ष 2019 में ही 11,000 करोड़ रुपये हुई थी।

रिपोर्ट में विश्लेषकों का कहना है कि बॉक्स ऑफिस की सबसे बड़ी भाषा हिंदी की बजाय तेलुगू रही, यह चौंकाने वाली बात है। अन्य किसी भाषा की तुलना में हिंदी करीब आठ से 10 गुना अधिक लोगों द्वारा बोली और देखी जाती है। इसलिए हिंदी फिल्म प्रदर्शित करने के लिए कई राज्यों में सिनेमाघर खुले होना जरूरी हैं, जबकि तेलुगु या तमिल को केवल एक या दो राज्यों के खुले होने की ही जरूरत होती है। इस वजह से महामारी के दौरान हिंदी फिल्मों को रिलीज करना लगभग नामुमकिन हो गया, क्योंकि एक समय सभी राज्यों में लॉकडाउन था।

दूसरा, दक्षिणी बाजार मुख्य रूप से सिंगल स्क्रीन सिनेमा पर निर्भर है। जबकि हिंदी सिनेमा पिछले करीब दो दशक में मल्टीप्लेक्स पर आधारित हो गया है। एक व्यापक जनसमूह के लिए एक्शन फिल्में अब हिंदी में मुश्किल से ही बनती हैं, जो सिंगल स्क्रीन की पसंदीदा होती हैं। दक्षिणी सिनेमा ने अब भी इन दर्शकों की नब्ज पकड़ रखी है। इसलिए 2020 और 2021 में जब-जब सिनेमा खुले, तमिल (मास्टर) और तेलुगू फिल्मों (वकील साब, उप्पेना) ने तगड़ा कारोबार किया।

फिर साथ में स्पॉट हुए तेजस्वी और करण, कैमरे को देख हंस पड़े...

करण कुंद्रा और तेजस्वी प्रकाश अपनी शादी की योजना और रिश्ते को लेकर इनदिनों सुर्खियों में हैं। बिग बॉस 15 के घर से तेजस्वी और करण एक-दूसरे के करीब आये थे और उनकी केमेस्ट्री भी दर्शकों ने खूब पसंद की थी। तेजस्वी प्रकाश जहां रियलिटी शो बिग बॉस 15 की विजेता रहीं वहीं करण कुंद्रा दूसरे रनरअप रहे हैं। करण कुंद्रा और तेजस्वी प्रकाश अपनी शादी की योजना और रिश्ते को लेकर इनदिनों सुर्खियों में हैं। बिग बॉस 15 के घर से तेजस्वी और करण एक-दूसरे के करीब आये थे और उनकी केमेस्ट्री भी दर्शकों ने खूब पसंद की थी। तेजस्वी प्रकाश जहां रियलिटी शो बिग बॉस 15 की विजेता रहीं वहीं करण कुंद्रा दूसरे रनरअप रहे हैं। इसके अलावा घर के भीतर और बाहर दोनों का रोमांस चर्चाओं में है। बिग बॉस के घर से बाहर आते ही दोनों को एक-साथ स्पॉट भी किया गया था। हालांकि, अब कहा जा रहा है कि करण कुंद्रा अपने और तेजस्वी के स्पॉट होने को लेकर सचेत हो गये हैं।

रूपाली ने लिया 'कच्चा बादाम' डांस चैलेंज, फैंस ने बांधे तारीफों के पुल

बंगाली सॉन्ग 'कच्चा बादाम' इस समय सोशल मीडिया पर ट्रेंड कर रहा है और इस साल के वायरल गानों में से एक बन गया है। इस गाने पर न सिर्फ इंस्टाग्राम यूजर्स बल्कि दुनिया भर की हस्तियां इस बंगाली गाने पर थिरकती नजर आ रही हैं। अब इसी लिस्ट में सीरियल अनुपमा की लीड एक्ट्रेस रुपाली गांगुली का नाम भी जुड़ गया है। अनुपमा यानी रुपाली गांगुली ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर की है जिसमें वह कच्चा बादाम गाने के हुक स्टेप करती नजर आ रही हैं। हर बार की तरह इस बार भी यूजर्स उनकी जमकर तारीफ कर रहे हैं।

धूमेस्वर मैं हुआ संत समागम इसमे गोरक्षा, संतों की रक्षा आदि विषय पर हुई चर्चा। कार्यक्रम के मुख्य भूमिका महामंडलेश्वर अनिरुदवन जी महाराज धूमेस्वर एवं हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका के संरक्षक जी ने निभाई

स्वच्छता 2022 के तहत चलाये जा रहे अभियान मैं पत्रकारों सहित प्रतिष्ठानों को अच्छा कार्य करने के लिए डबरा नगर पालिका के सीएमओ महेश पुरोहित के द्वारा किया सम्मानित।

मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मध्यप्रदेश

प्रशासक
बृज मोहन आर्य

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
कलेक्टर, ग्वालियर

पीयुष श्रीवास्तव
सीएमओ नगर परिषद

पीछोर नगरपरिषद की ओर से समस्त पिछोर नगर वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामना देते हुए यह अपील करती है...

1. स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता का ध्यान रखे साथ ही कचड़ा नगर परिषद की कचरा लेने आने बाली गाड़ी में डाले।

2. डेंगू बीमारी डेंगू मच्छरों के काटने से होती है इसलिए डेंगू विमारी से बचने के लिए , आस पास गदंगी ना फैलाये, और ना आस पास गंदे पानी को एकत्रित होने दे। क्योकि मच्छरों पनपने का ऐसे स्थान बहुत उचित होते है।

3. कोरोना से बचने के लिए वैक्सीन अवश्य लगवाए जिन्होंने प्रथम डोज लगवा लिया है वो दूसरा डोज अवश्य लगवाये, जिनको प्रथम डोज नही लगा है वो अपने आधार कार्ड को लेकर अस्पताल और वैक्सीनेशन शिविर मैं जाकर रजिस्ट्रेशन कराए और तुरंत वैक्सीन लगवाये। जिससे आप भी सुरक्षित रहे साथ मैं माता पिता और परिवार को सुरक्षित रखे।

4. पिछोर नगर परिषद हमेशा आपकी सेवा मैं तत्पर्य है आप भी नगर परिषद का सहयोग करे जिससे पीछोर नगर परिषद का विकाश हो सके।

5. पेड़ पौधों को अवश्य लगाएं।

6. करों, नलों के विल का भुगतान अवश्य करें।